

कृष्णकेलिमालानाटिकाक पात्रपरिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२	श्रीकृष्ण	अवतारी पुरुष, वसुदेवक पुत्र, नायक ।
३	हलधर	श्रीकृष्णक जेठ भाए ।
४	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
५	नारद	देवर्षि ।
६	नन्द	गोकुलक अधिपति, गोपराज ।
७	वृषभानु	राधाक पिता, गोप ।
८	कंस	मथुराक राजा, दैत्य ।
९	केकी	कंसक सेनापति, दैत्य ।
१०	बकासुर	बगुलाक रूप मे दैत्य ।
११	अघासुर	पापस्वरूप सापक रूप मे दैत्य ।
१२	उग्रसेन	★श्रीकृष्णक भक्त, कंसक पिता ।
१३	अत्रुर	★श्रीकृष्णक भक्त ।
१४	उदव	★श्रीकृष्णक मन्त्री ।
१५	रजक	★
१६	मुष्टिक	★कंसक पहलमान ।
१७	चापूर	★ " " ।
१८	कुवलयपोड (कुञ्जर)	★हाथी ।

हर्षो

नटो	सूत्रधारक पत्नी ।
२ देवकी	श्रीकृष्णक माए (जन्म देनिहार) ।
३ यशोदा	श्रीकृष्णक माए (पालन कएनिहार) ।
४ राधिका	वृषभानुक पुत्री, नायिका ।
५ विशालाक्षी	राधाक सखी ।
६ कामाक्षी	" " ।
७ कलावती	राधाक माए ।
८ पूतना	राक्षसी ।
९ कुट्टिका	* " ।
१० मालाकारक पत्नी *	

★नाटिकाक खण्डित भाग मे ।



श्रीः

महाकवि नन्दीपति विरचिता-

★ कृष्ण-केलिमाला नाटिका ★

(मङ्गल-श्लोकः)

सानन्दं^१ गिरिजानन्दं श्रुतिगीतं गजाननम् ।
वन्दे वन्द्यं सुराद्यं च देवदेवं जगद्गुरुम् ॥१॥

(श्लोकार्थे गीतम्) — १

हे भव-तनय भजल^२ छिअ तोहि ।
गजमुख सतत सुमुख रह मोहि ॥
गिरिजानन्दन गणनायक ।
जगत भजत अभिमत-दायक ॥
विषम-विलोचन जटा^३-मट्क ।
संग प्रथम शिशु बाल-वट्क ॥
आखु बड़ल शिशु चक क चन्द ।
विषय-विनाशन अति सानन्द ॥

श्रीः

आनन्दित, गिरिजाक पुत्र, वेदमे वर्णित, देवतामे आदि (प्रथम), देवहुक
देव, जगद्गुरु, वन्दनीय गजानन (गजेश) के प्रणाम करैत छी ॥१॥

श्लोकक अर्थ मे गीत--१

भव-तनय = महादेवक पुत्र । सुमुख = सम्मुख (सोझी) । विषम-विलोचन
= विनेत्र (महादेव) के जटाक मुकुट छनि । आखु = मूस । कय कर = हाथ मे
कमल लय, अभय सेहो दोसर मो लैत छथि ॥

१—×× (एहि श्लोकक अभाव) —क । २—भजत क । ३—जटाकट—ख ।

कय^१ कर कमल, अमय कर लेह^२ ।
 मोदर सहित लम्बोदर देह ॥
 नन्दीपति कवि मङ्गल गाव ।
 सम्भूतमय गुनमय^३ बुझ भाव ॥
 (दोहा)

निरजा-नन्दन गजवदन, विघन^४-विदारण हेतु ।
 लम्बोदर असरन सरन, भव-सागर सुख-सेतु ॥१॥
 तोहे तोहर सन, आन नहि, एहि कारज एहिठाम ।
 कर सम्पूरन नाटिका, ते^५ तुअ करिअ प्रणाम ॥१॥

अथ नान्दी-श्लोकः

यस्मैषा वनिता नदीपति-सुता दारिद्र्य-दैव्यादिनी
 नीलन्दीवर-लोचनाऽम्बित-सुवासारैकवक्त्राम्बुजा ।
 उत्पत्ति-स्थितिकारकः क्षुतिमुखो नार्थकनायप्रभु-
 देवानामधिपः पुराणपुरुषः पीताम्बरः पातु वः ॥२॥

अपि च

वक्त्रं यस्य सरोज-सुन्दरसभा वाक्थं^६ सुधामिधितं
 हास्यं स्फोटमतीव बलव-सुतानेत्रस्य सीखप्रदम् ।

दोहा-असरन सरन = अक्षरवक शरण । भव-सागर = संसाररूपी समुद्र में सुख
 दायक बाहु ॥१॥

नन्दी श्लोक

जनिक ई परती समुद्रक पुत्री (लक्ष्मी) दरिद्रतारूपी दैत्यक नाश करनि-
 हारि ओ नीलकमल सन आँखि सँ युक्त अमृतक रस से परिपूर्ण मुहकपी कमल
 वाली छविन्ह से संसारक उत्पत्ति ओ पालन कयनिहार, वैदकी मुहबला, एक-
 मात्र महाप्रभु, देवतालोकनिक अधिपति पुराणपुरुष पीताम्बर (विष्णुमगवान्)
 अहंलोकनिक रक्षा करय ॥२॥

६-रसमय बुझाव-ख । ७-विघिन-ख । ८-एक-ख ।
 ९-देह-ख । १०-भावये-ख ।

नेत्रं यस्य मनोहरं सुविदितं वामभूषां जीवनं
 सरोकस्य विरचयते सुचरितं प्राक् पुण्यती नो गुणः ॥३॥

(नान्दास्ते सूत्रधारः)

सूत्रधारः-अलमतिविस्तरेण । आर्ये ! इहागम्यताम् ।

नटी- (प्रविश्य) अज्ज ! आणवेदु । आर्ये ! आजापयतु ।]

सूत्रधारः- आदिण्ठोऽस्मि-

नटी- अज्जउवा ! कथं^१ अह्मणं किदं ? [आर्यपुत्र ! कथमाह्मणं कृतम्?]

सूत्रधारः- श्रीनन्दीपति-नाटिका-नृत्येन^२ सृजन-सभाऽनुरञ्जनाऽभिप्रायेण ।

नटी- अज्जउवा ! ^३ नन्दीवद्-कह-किदं शाङ्कअ-समुद्दं विशेषेण कथय ।

[आर्यपुत्र ! नन्दीपति-कथिकृतं नाटक-समुद्रं विशेषेण कथय ।]

सूत्रधार- (इलोकन) -

या नन्दीपति- शर्मणा विरचिता चाभ्यासिता नाटिका

किं वा शान्तिमुवागमी किमथा भृङ्गारहरावली ।

कृष्णः केवल-नायकः सुवचना गोपात्मजा नायिका

सन्तोषाय सभाजनस्य दयिते ! नृत्येन विस्तारय ॥४॥

आओगे-

जनिक मुँह कमलसनक सुन्दर छनि वाणी अमृतसँ युक्त छनि, अस्वस्त
 परिपूर्ण हँसी गोपपुत्री-राधाक आँखिकसन सुखदायक छनि सुन्दर आँखिसुन्दर-
 भौंहवालीक प्रसिद्ध जीवन छनि, ताहि एकमात्र व्यक्ति (श्रीकृष्ण) क सुन्दर
 परिव्रज अपन पूर्वक पुण्य सँ बनाओल जाय रहल अछि, अपन गुण (पारिष्ठत्य)
 सँ नहि ॥३॥

(नान्दीक अन्तमे सूत्रधार)

सूत्रधार-नान्दीपतिक विस्तार उचित नहि । आर्ये ! एम्हर आइ ।

नटी-(प्रवेश कय) आर्य ! आजा दिअ ।

१- कथं भृङ्गण किह-ख । २- नाटिकानिनय-ख । ३- नन्दीवै के
 वंद- क, सन्तिजेकिविदं सारदकविशेषेन कथय-ख ।

[कविवंशावली]

वंश^{१३} पगौली बड़ विपुल। जगभरि के नहि जान।
मैथिल सभका माननिष^{१३}, पौजि तकव परमान^{१४} ॥३॥
सुनहत ई वंशावली, लागति^{१५} अति अभिराम।
सिद्ध पुरुष शिवदत्त भा, वास जनिक^{१६} बड़िआम ॥४॥
ताहि वंश^२ अवतार लए, सगुन सषापति भेल।
परजापति मुनिवृत्त तह, दक्षक उपमा देल ॥५॥
तन्हिकां भेल पुनु दुइ तनय, अति सुबुद्धि सबिवेक।
केसव रघुपति नाम तमु, सरस^{१७} एक तह एक ॥६॥
रघुपति भा कां चारि^३ सुत, गंगाधर, जयराम।
सुरगुरु^४ सम हरिपति सुषी, अतिसुबुद्धि सहु^{१८} स्याम ॥७॥
हरिपति हरि अवतार तमु^५, गुह ठाकुर गुणबूढ़।
पण्डित गोकुलनाथ सा, जनिक^{१९} शिष्य परसिद्ध ॥८॥

सूत्रधार - आदेश भेटल अछि -

नटी - आर्यपुत्र ! कियेक बजाओल ?

सूत्रधार - श्रीनन्दीपतिकृत नाटिकाक नाँवक कारणे, नीकलोकक सभाक मनोरञ्जनक अभिप्राय सँ।

नटी - आर्यपुत्र ! नन्दीपति-कवि-कृत नाटक-समुदाये^१ विशेषरूपे^२ कहू।

सूत्रधार - (इलोक द्वारा) जे नन्दीपति शर्माक द्वारा बनाओल ओ अभ्यास कराओल नाटिका थिक वा शास्तिरूपी अमृत बनल अथवा शृङ्गार रसक मोतिक माला थिक जाहि मे केवल श्रीकृष्ण नायक छथि ओ गोपपुत्री राविका नायिका छथि, ताहि नाटिका के सभास्थ लोकक सम्बोधक लेल हे जिये ! नृत्यक द्वारा विस्तार करू ॥४॥

१ - रैव । २ - शिवदत्तात्मक वंश पगौली - बड़िआम मे (हुनक पौत्र) मुधापति सा गुणवान् भेलाह, जे मुनिक आचरणकय प्रजापति कहओलनि ओ दक्ष

१२ - पुंगौली ख । १३ - मानिअ ख । १४ - परमान ख । १५ - लागत ख । १६ - मानक क । १७ - एक एक ख । १८ - सहु ख । १९ - शिष्य जनिक ।

सुकवि कृष्णपति तसु तनय, तन्हिकां चारि^३ कुमार।
चमुर चन्द्रपति हेमपति-अतिसर्वज्ञ छथार ॥९॥
नन्दीपति कवि, शिवभगत लक्ष्मीपति तसु छोट।
अपन बड़ाद की करब, जहाँ^{२०} अछि गुण बड़गोट ॥१०॥
धापाकवि भय संसकृत, कतहु करिअ एक आध।
पण्डित कवि जे जतय छथि, छेमिअ^{२१} हमर अपराध ॥११॥

नटी - अहो भाअधेअ ! [अही भाअधेअम् ।]

सूत्रधार - एतमेव । ततः^{२२} (गद्यम्) -

जय जय जगदेकनाथ ! चतुर्वर्गादिकारण^{२३} ! गोविन्द ! गरुडासन ! समरवशी-
कृतपुष्पायुध-प्रणाशन ! पोताम्बर ! पचाक्ष ! सषध ! पयालया-मानसैकहंस !
कंसध्वसावतंस ! महावंश ! वंशाञ्जित-करकमल ! यादवेन्द्र ! जगदीशनाडचतु !
साङ्गचक्रावगदाधर ! सकल भूपाल-मुकुटमणि-भूषित पादपद्म-पवित्रीकृत-भूम-
पद्म ! देवदेव^{२४} ! देवकीतनय ! तालाङ्गामुज^{२५} ! नन्दनन्दन ! विदवाभिराम !
विश्वविद्यात्मक-यज्ञपुरुष ! पुरुषोत्तम ! पतितपावन ! शीर्षविदात ! सुरपूजित !
सकल सुरासुर-कामता-लताघारैक^{२६} ! कल्पपादपो-पनिगन्तारायण ! गुणाशेष^{२७} -

(महादेवक पदसुर) क उमा योग्य भेलाह ।

३ - (१) गङ्गाधर, (२) जयराम, (३) हरिपति, (४) सद्गुणध्याय श्याम ।

४ - शृङ्गारिक समान विद्वान् हरिपति ।

५ - ताहि चाह भाइ मे हरिपति भा विष्णुक अवतार, गीरवपुत्र, श्रीमान् (मोदेक अधिपति) ओ गुण सँ उन्कृष्ट छलाह, जनिक शिष्य प्रसिद्ध गोकुलनाथ उपाध्याय छलथिन, तनिक (हरिपतिक) पुत्र सुकवि केशवपति सा भेलथिन ।

६ - (१) चमुर चन्द्रपति, (२) सर्वन् हेमपति, (सर्वज्ञान मरीच) (३) नन्दीपति कवि, (४) शिवभक्त लक्ष्मीपति ।

नटी - अहो भाअधेअ !

सूत्रधार - से टीके । तजय, = [गद्य द्वारा] -

२० - जौख २१ छेमहि - ख । २२ - तनि कारण - ख । २३ - X - ख ।

२४ - तालातकानुज - ख । २५ - धार करव - ख । २६ - गुणशेष - ख ।

तत्प.कल्पिताऽनेकपुराणकल्प ! कल्पकल्पान्तकारणैकवृत्ता ! ब्रह्मेन्द्रादिसेवित !
सुभभाङ्ग ! धीरातिधीर ! धर्मस्वरूप ! यशःप्रतापालङ्कार ! मानवावतारोत्कलि-
कल्प-नाशन ! कामकला-विलास-विन्यास-कुशल ! कुशलदायक^{१०} ! गोपाङ्ग-
नाचेलचौर ! नृत्यगीत-कविता-रसिक ! विबुध^{११} ! विपिन-विदाहोपाजित^{१२} -
पावकोपम ! प्रचण्डभुजदण्डो^{१३} - दण्डकोदण्ड ! विद्याविशारद ! शारद-सुचारु^{१४}
चन्द्रवदन ! मधु^{१५} मधनाऽऽनन्दकन्द ! दुरित-तमःस्तोम^{१६} - सोम ! शोभासदन !
सर्वोपकारक^{१७} ! श्रीकृष्णदेव ! प्रचुरतरविघ्न-विघातक-कामनया तव चरण-
चार-पुण्य-पुण्डरीकमहं बन्दे ।

जय जय संसारक एकमात्र स्वामी, धर्म अर्थ काम मोक्षरूप चारु पुरुषा-
र्थक आदिकारण, गोविन्द, गरुडवाहन, मुद्रमे वश कयल कामदेवक नाश कय-
निहार (शिवरूपधारी), पीपर वस्त्र धारी, कमल सन आँखिवला, कमल युक्त,
लक्ष्मीक मनरूपी मानस-सरोवरक एकमात्र हंसरूपी, कंसक नाश कयला सँ
अलङ्कृत, पंच कुल मे उत्पन्न, वंश परम्परा सँ हाथ मे कमल (तत्सदृश रेखा)
सँ युक्त, यादवराज, जनार्दन, अच्युत, शश चक्र कमल गदाधारण कयनिहार,
सकल राजाक मुकुटक मणि सँ शोभित चरणकमल सँ भूमण्डलकेँ पवित्र कए-
निहार, देवहुक देव, देवकीक पुत्र, बलदेवक छोट भाय, नन्दक पुत्र, संसार भरि
मे सुन्दर, संसार मे प्रसिद्ध एकमात्र यज्ञपुरुष, पुरुषोत्तम, पतितकेँ पवित्र
कयनिहार, वीरता सँ प्रशस्त, देवता सँ पूजित, सकल देवता ओ देशक कामना
रूपी लक्ष्मीक आधारभूत एकमात्र कल्पवृक्ष, उपनिषद् मे प्रसिद्ध नारायण अक्षेप
गुणरूपी ओछाओन रूप मे कल्पित अनेक पुराण स्वरूप, कल्प कल्पान्तक कारण
भूत एकमात्र ब्रह्म ब्रह्मा इन्द्र आदि सँ सेवित, प्रकाशमान अङ्गवला, अत्यन्त
धीर, धर्मस्वरूप, यश ओ प्रतापक आभूषणवला, मानवक रूप मे अवतार लेनि-
हार, कलियुगक पापक नाश कयनिहार, लक्ष्मीक संग विलासक विन्यास मे
पट, कुशल देनिहार, गोपरात्रीक वस्त्र चोरओनिहार, नृत्य गीत ओ कविताक
रसिक, देव, वनकेँ जरओला सँ उपाजन कयल नेत्र आगिक सदृश प्रतापवला,
प्रचण्ड भुजदण्डरूपी उदण्ड बाणवला, विद्या मे पारंगत, शरद ऋतुक सुन्दर

१० - बहुदायक - ख । ११ - विबुधारि ख; विबुधा: क । १२ - विहारोपाजित ख ।
१३ - भुजराज ख । मेव सकल ख । १४ - गुणानन्द ख । १५ - स्तोमकवम ख ।
१६ - कारकारक ख ।

(इति मञ्जुलपदम्^{१४} । इदमेव सकलमञ्जुलदायकम्) ।

(ततः कृष्णादि प्रवेशसूचनागीतम्) — १

सुन्दर सरल सबल वनमारि ।

सखी सहित वृषभानु^{१५} - दुलारि ॥

यशोदा नन्द देवकी वसुदेव ।

अठमाँ गरभ जनम हरि लेब ॥

कंस केसि मुष्टिक चाणूर ।

कुबलपपीड़ रजक अकूर ॥

उदव उपसेन अवधारि ।

पुतना मालाकारक तारि ॥

नन्दीपति हरि हरथ कलेस ।

एहि नाटक^{१६} एतबा परवेश ॥

(ततः श्लोकः) —

उदवो माधवो राधा यशोदा देवकी तथा ।

वामुदेवश्च नन्दश्च कंसः केसी च पूतना ॥१॥

रजकः कुब्जिका चैव कुञ्जराऽसुर एव च ।

चाणूरो मुष्टिकश्चैव उपसेनस्तथा नृपः ॥२॥

चन्द्रमा सन मुहधला, मधुनामक दैत्यक नाश कय आनन्द देनिहार, पापरूपी
अन्धकारक समूहक हेतु चन्द्रस्वरूप, शोभाक भवन, सभक उपकारक हे
श्रीकृष्ण देवता ! पर्याप्ति विघ्नक नाशक कामना सँ अहाँक चरणरूपी सुन्दर
पुण्यक कमल केँ हम प्रणाम करै छी ।

(ई मञ्जुल-पद थिक । इयेह सभ मञ्जुल दैत अछि ।)

(तखन कृष्ण आदि पात्रक प्रवेशक सूचनाक गीत होइछ ।)

एहि कृष्णकेलिमाला नाटक मे एतबा पात्रक प्रवेश होइछः—

१ श्रीकृष्ण, २ राधिका, ३ यशोदा, ४ नन्द, ५ देवकी, ६
वसुदेव, ७ कंस, ८ केसी, ९ मुष्टिक (कंसक पहलमान), १० चाणूर
(पहलमान), ११ कुबलपपीड़ (कंसक हाथी), १२ रजक, १३ अकूर,

१४—पद- १५—वृषभानु ख । १६—हरिनाटिक ख ।

(अयत्तेषां प्रवेशः । ततः प्रसव-वेदनाऽऽकुला-देवकी-
प्रवेशिका-गीतम्)--३

वेदन वेआकुल^{१४} चौदिस हुरि ।

देवकी कर कसगा कत बेरि ॥

अत जत गरम अएलाहु अवतारो ।

तत तत कंस हएल मोर मारो ॥

जावत शिजन कंस निरमोही ।

प्रसव-वेदन सहि की फल मोही ॥

काहि कहक बओने राखव मोह ।

अठमहु बेरि भरोस न होइ ॥

मन कर करिअ अगिनि प्रवेसे ।

एहि तह ओहि वर धोर कलेसे ॥

नन्दीपति भाँखहु कथिछाई ।

जहि जनमव तहि करव छपाई ॥

(ततः प्रविशति देवकी)

१४ उद्धव, ११ उग्रसेन, १६ पूतना ओ १७ मालिनि ॥ ई मुखरपात्रक सूची धिक । अन्य अनेकी गोण पात्र भेटताह । जेना नारद, बृषभानु, कलावती, विनालाक्षी, कामाक्षी आदि ।

(तखन श्लोक)—

उद्धव, माधव, राधा, यशोदा, देवकी, वसुदेव, नन्द, कंस, केशी, पूतना, रजक, कुब्जा कुब्जरासुर चाणूर, मुष्टिक एवं उग्रसेन राजा ॥११, १॥

(आव हिनका सभक प्रवेश होएत । तकर बाद प्रसव-वेदना सँ विकल देवकी प्रवेश करतोह । तकर गीत)—३

वेदन = पीड़ा सँ । मोह = गुप्त कथ । अगिनि प्रवेसे = आगि में प्रवेश ।

एहि तह = एहि सँ । भाँखहु = कपाड़ धुनव ।

(तखन देवकी प्रवेश करैत छथि ।)

देवकी—(श्लोकेन) कि मे प्रसवदुःखेन, ततो गर्भेण कि पुनः ।

अथवा किन्तु^{१५} पुत्रेण, यावत् कंसयमो भुवि ॥३॥

(ततो देवकीगर्भ-निवाशि-मायावि-जनस्य योगनिद्रया सकिञ्चुरा सपरिवारः कंसामुरा सुप्तः । तदनन्तरमष्टम्यां तिथौ भाद्रकृष्णपक्षे मध्यमिण्यां श्रीकृष्णेनोत्तारो^{१६} लब्धः । देवकी शंख-चक्र-गदा-पद्माऽभिव-चारचतुर्बाहु^{१७} देवीप्यमानं^{१८} बालकमवतितले पतितं दृष्ट्वा चतुर्दिशमवलोक्य सत्वरं क्रोडे कृत्वा, पुनश्च पयोधरं वदति ।

(अथ दोहा)—

विभवनपति असरन-सरन, जे सहजक सिमुख ।

मे कह समय विचारिकहुँ, जे न जान अरिभूष ॥१२॥

(श्रीकृष्णः सर्वत्र कृत्वा पयोधरं विवति ।)

(अथ श्रीकृष्णप्रवेशिका - गीतम्)...४

जनमल जइकुल-बालक, बाल-कमलमुख रे ।

गुर-नर-मुनिगन-पालक, पालक अतिमुख रे ॥

देवकी—(श्लोक द्वारा) हमर प्रसवक दुःख सँ की ओ गर्भ सँ की ? अथवा पुत्र सँ की ? यावत् एहि पृथ्वी पर कंसरूपी यमराज जिवैत अछि ॥३॥

(तखन देवकीक गर्भमे निवास करयवला मायावी लोकक योगनिद्रा सँ सेवक सहित सपरिवार कंसामुर सुति रहल । तकर बाद अष्टमी तिथिमे भाद्रवक कृष्णपक्षमे मध्य रातिखन श्रीकृष्ण अवतार लेल । देवकी शंख-चक्र-गदा-पद्मा सँ युक्त सुन्दर चारि बांहियला अत्यन्त चमकैत बालक के पृथ्वी पर खमल देखिके चाक दिस देखि भटवय कोरा कय, केरि दूष दैत छथि ।)

(आस दोहा)—असरन-सरन = अशरणक शरण । सहजक = स्वाभाविक ।

अरिभूष = शत्रु राजा (कंस) ॥१२॥

(श्रीकृष्ण तहिना कय पूछ पिदैत छथि ।)

१५ कि पुत्रेण - क. ख । १६—कृष्णोत्तारो ख १३०—बाहुं ख ।

१७ - मान् - क. ख ।

विलप तनय देखि देवकी, देव ! कि होइति^{४२} मति रे ।
 भूपति भूप-तिलक कंस, तैं ठरे^{४३} विकलमति रे ॥
 जन जन सुत मोहि जनमत, जन मत इहे वहु रे ।
 जसो^{४४} एहि-विधि विधि भागव,^{४५} की फल अबेदहु^{४६} रे ॥
 जोम निदे^{४७} सब भेल बस, बस^{४८} पुरजन जन रे ।
 हरि अरि सबल सब ल^{४९} पुनु सुतल^{५०} शिलारत रे ॥
 वसुदेव आए तुलाएल, लाएल धार एक रे ।
 तोरित तोरि तनय^{५१} लय चहु, पथ न^{५२} केओ देख रे ॥
 नौधि अएलहु^{५३} अरि दूरग, दूरग पथ पुनु रे ।
 धाह रहिहु जमुना जल ! जलद ! बरिस जनु रे ॥
 लए सिमु पार उतारल, तारल मन दुख रे ।
 आवे अएलाहु^{५४} बल्लव पुर, पुरत सकल मुख रे ॥
 जसोमति सुता सुताजलि, जननि^{५५} जोगवस रे ।
 वसुदेव देव बदलि कर, निजपुर परवेस रे ॥
 वसुदेव देवि, देवि दए, धीरज घर मन रे ।
 चेहो^{५६} चेहो^{५७} सुनि कंस तरकल तरकल सहिसन रे ॥
 नन्दीपति सुनु मानव ! मानव निरतय रे ।
 कंस-गरव हरि^{५८} हरिकहु, वधव बेरि लए रे ।

(ततः कंसासुरो देवकीगृहमागत्य देवीं दृष्ट्वा गृहीत्वा पुनश्चागत्य गृह-बाह्यदेशं पश्यति ।)

(श्रीकृष्णक प्रवेश करवाक गीत)—४

बाल - कमल - मुख = सद्यः फुलायल कमल सनक मुखवला ('बालक ओ बाल - कमल' मे बालक पदक आवृत्ति भिन्न अर्थ मे यमक अलंकार भेल । एहि गीत मे प्रत्येक पद एहि सँ युक्त अछि ।) पालक = पालन कएनिहार । पालक = पलना पर ।

४२ - होमति - ख । ४३ - ठरे - ख । ४४ - भागव - क । ४५ - आवहु - ख ।
 ४६ - बस जन परजन रे - ख । ४७ - सुतल शिलारत - ख ।
 ४८ - तोरित लय - क ; तोरित तनय चहु - ख । ४९ - जनु केओ देख ।
 ख । ५० - जानि - ख । ५१ - × (अवाध) - ख ।

(ततो नारद-प्रवेशिका- गीतम्)- ५

जानि कुमारि मगन मधुरेश^{५२} ।
 एहि अवसर नारद परवेश ॥
 मन अवधारि अपन भल जानि ।
 हमर वचन हित कए हलु मनि ॥
 की^{५३} होअ कखने जानि नहि^{५४} जाए ।
 किए न बधहु एहि कहहु बुझाए ॥
 सिमु कन्या एहि एकओ न हेनु ।
 आठम गरभ तोहर जिवकेतु ॥
 मधुराणि मानल उपदेस ।
 नन्दीपति हरि हरथ कलेस ॥

देवकी = देवकी, हे देव ! की होयत । भूपति = राजा कंस, राजा मे तिलक (श्रेष्ठ) । जनमत = जन्म लेत, लोकक मत । इहे वहु = इयेहु । विधि = तरहे, भाग्य । भागव = फूटत । अबेदहु = आवहि । बस = बस मे, बसैत । हरि अरि = हरिक शत्रु । सबल = बलवान्, सब लय । शिलारत = पाथर पर भेड़ भेल । तुलाएल = उपस्थित भेलाह । तनय = पुत्रके । तोरित = स्वरित (क्षीघ्र) । तोरि = तिरोहित (छानि) कय । अरि-दूरग = शत्रुक दुर्ग । दूरग = दूरगामी । बल्लव-पुर = गोपक नगर । सुता = पुत्रीके । जननि = यशोदा माता । जोगवस = योगवश भगवतीक वश (निन्द) भय गेलीहु । देवि = देवकीके, देवी (भगवती) = यशोदाक कन्या । तरकल = कट्ट भय जोर सँ बाजल, मेघ गर्जल । मानव = मनुष्य, स्वीकार करव । गरव = गर्व । हरि = कृष्ण, हरण कय ।

(ततान कंसासुर देवकीक घर आवि देवी = कन्या के देखि पकड़ि पुनः घर सँ बाहर आवि देखैत अछि ।)

(तखन नारदक प्रवेश करवाक गीत)- ५

कुमारि = कन्या जानि । अवधारि = विचारि । बधहु एहि = एकरा मारैत छहु । सिमु = ई बच्चा अछि ओ कन्या थिक ताहि हेतु हमर किछु नहि
 ५२ - मधुरेश - ख । ५३ - की । ५४ - न ।

कंसामुरः- महर्षे ! तव भाषितमसत्यमपि सत्यं, सर्वं सत्यमेव । (प्रणम्य
आसनं श्रुत्वा ।)

नारदः— सर्वदा शुभमस्तु ।

(यद्यपि पितृव्यपुत्रिका— कृपाकृते न^{५५} किञ्चिद् विचारवि-
मुखोऽपि । तथापि नारदोपदेशेन शिलाशक्योपरि ताडनाभि-
प्रायेण क्षिप्ता देवी कंसकराशुमुक्ता चाऽन्तर्हिता । इत्येव
वर्तमानान्तरमिदमाश्चर्यं सर्वे भाषन्ते कंसामुरं प्रति—
“पामर ! गतोऽसि^{५६}, गतोऽसि” ।)

(देव्या मगनस्य^{५७} किञ्चिदूर्ध्वदेवा गत्वा अनन्तरं
कंसामुरं प्रति यदोरितं तद् गीतेन समीचीनप्रकारेण गायन्ति
नर्तकाः इत्यभिप्रायेणाऽत्र गीतं समीरितं नाटिकाकारेण^{५८} ।)

सूत्रधारः— आर्ये ! इत्येव बोद्धव्यम् ।

नटी — “अञ्जलि ! को विशेषो ? एवं जुत्^{५९} कदकिदं । [आर्यपुत्र,
को विशेषः ? एतद् युक्तं कविकृतम् ।]

कथं सकलं से नहि बुझ । एहि वृत्त में एको कारण युक्त नहि । केवल आठम
गर्भ तोहर जीवन हेतु किनुग्रहक समान नाशक अछि ।

कंस— महर्षि ! अहाँ कहल असत्यो बात सत्य थिक, सत्य थिक, सत्य थिक ।
(प्रणाम कय आसन देत छथि ।)

नारद— सदिवन शुभ हो ।

(यद्यपि पितृव्य-वह्नितक उपर कृपा रहलाक कारणे^{६०} कनेक
विचारसँ विमुखो भेल तथापि नारदक उपदेश सँ वाचक खण्ड पर
पटकवाक अभिप्राय सँ फेकल गेल देवी कंसक हाथ सँ छुटि चुपत भए
शेकीछ । इत्येह देखलाक बाद ई आश्चर्य सब केओ कंसक प्रति बजैत
अछि— “लगत ! गेल छह ! गेल छह ! ”)

(देवी आकाश मे किछु उपर जाय कंसक प्रति जे बजलीहि
से नीकजकाँ नर्तकवध गवैत छथि— एही अभिप्राय सँ एतय नाटिका-
कार गीत कहलनि अछि ।)

५५— कृपाकृतेन । ५६— गतासि गतासि । ५७— मगनं पश्य - क ।

५८— नाटिकायां । ५९— आर्यपुत्र । ६०— जुतं केषेव - वा ; कं सर्वं - क ।

(अथ ९१ गीतम्)- ६

छोड़ छोड़ बहुत बकवाद रे^{६१} ।

मन मानि रहू अवसाद रे ॥

मतिमूढ़ की चिन्ह मोहि रे ।

ते^{६२} कहव की हम तोहि रे ॥

जत जनमल देवकी-बाल रे ।

तत बधह तोहे ततकाल रे ॥

सुन सुन अधम अपूर रे ।

तोहि तोर हृदय कुरुर^{६३} रे ॥

जदुनाथ लेल अवतार रे ।

कहु आव की परकार रे ॥

^{६४}वर-चक्र गदा विसाल रे ।

कद संख, पद्म सनाल रे ॥

आव जे से आनन्दकन्द रे ।

जग जितव दानवबृन्द रे ॥

जनि वसल छल दसमीव रे ।

तमु आज^{६५} के अरि जोत्र रे ॥

^{६६}वर देवि-वानी सुनि रे ।

किछु कंस कह मन मुनि रे ॥

सूत्रधार— आर्ये ! इत्येह बुझ ।

नटी— आर्यपुत्र, एहि मे की विशेषता अछि ? ई सँ कविक कयल
युक्त (उचित) अछि ।

[गीत]- ६

अवसाद = नाश, व्यथा । मतिमूढ़ = बुद्धिहीन । बधह = मारेत छह । कुरुर
= क्रूर, निर्दय । वरचक्र = वराम चक्र, विनाल गदा, संख ओ नालसहित
कमल — ई चारु चारि हाथ मे धारण कयते ई भगवान्, विष्णु अवतार

६१-अनु । ६२ = × (अभाव) — क । ६३- क्रूर । ६४ = × × (दू पाँती क
अभाव) — छ । ६५ — आज-क । ६६ — एतं वाच प्रथानिक — छ ।

हमे^{१५} असुर अतिबल कंस रे ।
 कओन करत हमर विधंस रे ॥
 के विष्णु ब्रह्मा रुद्र रे^{१६} ।
 की करत समता कइ रे ॥
 बल बुझि पड़त^{१७} हमार रे ।
 जवे मिलत मोहि कुमार रे ॥
 एहो^{१८} कंस केहु जब ठानि रे ॥
 पुम^{१९} देवि विचारल वानि रे ॥
 हमे अलप बाला नारि रे ।
 तोहें सबल पुरुष सुरारि रे ॥
 बल बुझल एहिखने तोर रे ।
 तोहें आव कि करब^{२०} मोर रे ॥
 कहू नन्दीवति अवधारि रे ।
 किछु कंस मानल हारि रे ॥
 (गीतार्थे श्लोकः)

रे रे खबर ! देवकीबहुसुत-गोहेन दुष्टाशय-
 स्तत् कि बरगसि^{२१} पीरुषं यदधुना लज्जाकरं कुत्सितम् ।

लेलनि अछि । दशग्रीव = रावण । तसु = तनिक शत्रु के जीवि सकल । वर
 देवि वानी = देवीक श्रेष्ठ वाणी । अलप = अल्प, छोटि । सुरारि = दैत्य ।
 अवधारि = विचारि ॥

(गीतक अर्थ में श्लोकः)--

रे रे अश्याचारी ! देवकीक बहुतो पुत्रक द्वेप सँ दुष्ट हृदयवला तो की
 अपन पीरुष वजेत छह ! जे (पीरुष) रखनहि लज्जाजनक एगं धृति मिट
 भेलह अछि ॥ कमलसनक आखिवला तेजःस्वरूप (श्रीकृष्ण) तोहर महान् शत्रु
 खलपुःह (जे आव नन्दक ओहिठाम छथि) । हमर एहि स्पष्ट वचनकेँ सुनि एख-
 नहुँ की लज्जित नहि होइत छह ? ॥५॥

१७- हम अतिशूर । १८- (एतय ही रे' क अभाव) — क ख ।

१९- हमर - क । २०- कंस एह जब - ख । २१- तब - ख । २२- करबह क ख ।

आसीत् कञ्जविलोचनस्तव रिपुस्तेजःस्वरूपो महान्
 भूत्वा मद्बचनं च विस्फुटमिदं नाद्यापि किं लज्जसे ॥५॥
 (ततो दुर्गावाक्यं भूत्वा अन्तरं कंसासुरो गृहं जगाम । देवीति कथयि-
 त्वा^{२३} निष्क्रान्ता ।)

॥ इति प्रस्तावना ॥

अथ प्रथमोऽङ्कः

[श्रीनन्दनन्दनस्य नवरात्री बालकीङ्गागीतमाह] — ७

नाना-भैआः नाना भैआः नाना भैआ^{२४} भाति ।

यदुपति जनमल भावक^{२५} राति ॥

भवनक चौदिस भमि भमि आव ।

लए थारी करताल बजाव ॥

कए कोलाहल मज्जल गाव ।

गए^{२६} घर दोड़ि कोड़ि लए आव ॥

(तखन दुर्गाक = यशोदाक पुत्रीक वाक्य सुनिकेँ कंस घर गेल । देवी ई
 कहि बहार भय गेलीहि ।)

॥ प्रस्तावना समाप्त ॥

॥ पहिल अङ्क ॥

(श्रीकृष्णक नञोम राति पर बालकलोकनिक खेलक गीत कहैत छथि ।) — ७

नानाभैआ = नैनाक जगसँ नवम राति में होवयवला जोग-टोन । भाति
 = भात, ध्यात, सोझाँ । यदुपति = श्रीकृष्ण । भाम-भमि = घूमि घूमि । कोला-
 हल = हल्ला । गए = जाय ॥

२४ - × क ख ।

२५ - × क ख । २ - × क ख । ३ - राए - ख ।

नन्दीपति हरि मुख मलु^४ आब ।
जननि जसोमति कण्ठ लगाव ॥

[ततो यशोदा-प्रवेशिका-गीतम्] - ८

प्रसव भवन सत्री बाहर भेदी ।
वेदी निकट जसोमति गेली ॥
सङ्ग सलीगन मङ्गल गावे ।
मुनिहुक मन धन मोद बढ़ावे ॥
पुरवधु वेड़लि अति अभिरामे ।
चोदिस उडुगन-विच हिमघामे ॥
कनक-कलसे जल कएल सलाने ।
तनु भेल मांजल मुकुर-समाने ॥
खिर^१ सिन्दुर तनु पीअरि^२ सारी ।
तखनुक जे^३ देखल नन्दक नारी ॥
से को देखत जगत पुन आने^४ ।
नन्दीपति कवि कह परमाने ॥

(ततो वेदिका मध्ये काऽपि ^{१२}न्यासकुशला कामिनी पद्मिनीपत्राकारं चित्रं लिखितवती । तस्य चित्रस्योपरि^{१३} सकृन्ना यशोदा मङ्गलक^{१४} सं सम्पु-
त्रीकृत्य^{१५} उपविशति । दाक्षिणवर्गेण वेदिकामन्त्रेण श्रीकृष्णस्य शीर्षोपरि पूर्व-

[तखन यशोदाक प्रवेश करवाक गीत] - ८

वेदी = आङ्गनक बीच में बनीओल यज्ञीय चबूतरा । धन मोद = अतिशय
आनन्द । पुरवधु वेड़लि = नगरक स्त्रीगण सँ घेरलि । उडुगन विच = तारेगनक
बीचमें । हिमघाम = बन्दूमा । कनक कलस = सोनाक घँल । तनु = देह । मुकुर
= अण्ना, दर्पण ॥

(तखन वेदीक बीच में क्यो अरिपन देवा में पटु स्त्री कमलक पात सगक
चित्र लिखलनि । ओहि चित्र = अरिपन पर कृष्णसहित यशोदा मङ्गल-कलसके
सामने कय बैसैत छथि । दाक्षिणलोकनि वेदिक-मन्त्र सँ श्रीकृष्णक माथ पर पूर्वा-

४-मलु × = मल । ५-समाने- ख । ६-खिर-ख । ७-विअरि । ८-× (अभाव) ।
९-जाने । १०-सिन्धुस-का । ११-चित्रोपरि-ख । १२-कृपा ।

क्षतं दत्तम् । ततः पुर वधूभिः^{१३} दधिधान्यपूर्वा-पक्वकदलीफलाऽन्वितं नूतन-
वंशपात्रं पुनः पुनः भूमौ निधाय श्रीकृष्णशीर्षोपरि प्रदक्षिणीकृत्य^{१४} गीतं
गीयते^{१५} ।

[अथ गीतम्^{१६}] - ९

बाभन वेदे^{१७} बाल^{१८} चूमावे ।
व्रजवनितागन मङ्गल गावे ॥
देखि कमलमुल अतिमुख पावे ।
जननि जसोमति कण्ठ लगावे ॥
जसोमति कोर देखब जदुराजे ।
ते^{१९} कस सहस^{२०} नयन सुरराजे ॥
पटह आदि सब बाजन बाजे ।
नाच नौक नट सुन्दर साजे ॥
आनन्दे मगनि सकलि नरनारी ।
सगर नगर भरि बिलह सुपारी ॥
नन्दीपति कवि विरचलि बानी ।
देख अभय वर सारङ्गपानी ॥

क्षत देलनि । तखन नगरक स्त्रीगणलोकनि दही, धान, दूबि, पाकल केरा सभ
सँभरल नवीन बाँधक पात्र = चूमाओनक डाला के बारम्बार भूमि पर राखि
श्रीकृष्णक माथ पर प्रदक्षिण कय गीत गवैत छथि ।)

गीत-९

बाल चूमावे = बालक श्रीकृष्णक चूमाओन करवैत छथि । व्रजवनिता =
व्रजक नारीसभ । जदुराज = यदुराज श्रीकृष्ण । सहस = हजार आखि इन्द्र
बनाय लेलनि । पटह = डोठ । बिलह = बँटैत छथि । सारङ्गपानी = शार्ङ्ग-
पाणि, श्रीकृष्ण ।

१३-पुनर्वधूभिः । १४-प्रदक्षिणं कृत्वा ।

१५-गायति । १६-× । १७-क ख । १८-साहस-ख ।

[दोहा]—

जनम-दिवस सज्जी नन्दमुत्त, दिवस-दिवस उपचीत ।
कहए न पाबिअ १६ आन किछु, उपमा इन्दु उचीत ॥११॥
जननि जसोमति लाए तनु दिन लगबधि १७ दस लेल ।
लाग एहन दस दिवस बिच अनि १९ दुइ मासक भेल ॥१४॥
एक दिन आंग २० उगारि कहूँ, कोर कए लेल किशोर ।
सजब तनय तनु जानि कहूँ, जननि नयन हर नोर ॥१५॥

अथ गीतम्—१०

मोहि रोग लगओ २ मोर सोना ।
छी-छी कान्हू! करे छिअ कोना ॥
जहिखन सजो बिलहल हम २३ सोना ।
के जन कजोन दहुँ कएल अछि टोना ॥
दूध-भरल बत फटइल मोरा ।
मन उदवेग माइओ रति तोरा ॥
चारि पहर निसि कहुरैत तोरा २४ ।
देखि देखि घैरज रह तहि मोरा २५ ॥

उपचीत = बड़त गेलाह । उपमा इन्दु = चन्द्रमाक सदृश कहय उचित
बिक ॥१३॥ लाए तनु = पुत्रक देह लय । दस = दस बेर ॥१४॥ आंग उगारि-
कहुँ = देहमे उकटन लगाय । सजब तनय तनु = पुत्रक देहके सजायव । नयन
= आँखि ॥१५॥

गीत — १०

मोर सोना = हमर सोनाक समान पुत्र । बिलहल = बाँटल । सोना = सुवर्ण ।
कजोन दहुँ = कोन प्रकारक । निसि कहुरैत = रति मे बेचैनीक बिकट शब्द
करैत ।

१६—पाबिअ । १७—दस लाउधि । २१—अनु । २२—आंग । २३—सज ।
२४—तोही । २५—मोही ।

नन्दीपति भन हरि धन लेला ।

जसोमति मन किछु भरओस भेला ॥

(उत्तानाथी श्रीकृष्णः कतिचन मासान् गीतवा एकवारं भूमौ सर्पाकारेण
सञ्चरितः । जशोदा इदमाश्चर्यं दृष्ट्वा श्रवणतरम् आमोदविशेषेण गीतं
गायति ।)

अथ गीतम्—११

देखु देखु नन्द ! कान्ह कर संपा २६ ।
घुबिहुकर २७ भरम चाप फुल चंपा २८ ॥
कमल नयन २९ कर बलय विराजे ३० ।
रनुमनु रनुमनु घुषल बाजे ३१ ॥
ससरि ससरि खस, कोर न सोहावे ।
कर धरइत पुनु मुख मनु ३२ आवे ॥
जे दिन तात कहत हरि तोही ३३ ।
से दिन सुदिन होएत कबे मोही ३४ ॥
नन्दीपति कवि कीनुक ३५ गावे ।
नन्दतनय रसमय बुझ भावे ॥
कंसानुरः—(पुतना ३६ प्रति) पुतने ! त्वं याहि श्रीकृष्णवधाय नन्दगोपगृहं प्रति ।
पुतना—सधाइस्तु । (इत्युक्त्वा ३७ याति ।)

गीत—११

कान्ह कर = कृष्ण करैत छधि । संपा = सञ्चरण, चाप जकाँ घुसकैत छधि ।
भरम = भ्रम से । चाप = पकड़ैत छधि । कमल नयन = कमल सनक आँखि
छनि । कर बलय = हाथ मे मट्टा । तात = बाबू, पिता ।
कंसानुरः—(पुतनाक प्रति) पुतने तो जाह श्रीकृष्णके मारवाक हेतु नन्दगोपक
घर ।

पुतना—वेय । (इ कहि जाइत अछि ।)

२६—सापा । २७—घुबिहु । २८—चापा । २९—नयन । ३०—विराज । ३१—बाजा
३२—मनु । ३३—तोही । ३४—मोही । ३५—अमल, क । ३६—इदमुक्तं पुतना प्रति क;
इत्युक्तं पुतना-प्रति-ख । ३७—क ।

अथ पुतना-प्रवेशिका-गीतम्--१२

हरिवध कैसे कएल^{४८} उपदेस ।

वपट-रूप पुतना परवेस ॥

कुच दुहु कालकूट लेल लाए ।

दंख अनु लेअ^{४९} नेओ ते हनु छपाए ॥

राति अन्धार सुतल सवे जानि ।

पापनि ततए तुलाइलि आनि ॥

नन्दकिसोर कोर कए लेल ।

दुहु कर धरि शन विष-दुध देल ॥

नन्दीपति कवि कह परमान ।

आवे कठिन तोर परल परान ॥

(श्रीकृष्ण) करकमलेन यशोधरं गृहीत्वा मुखमारोप्य प्रहारेणाऽऽकषितं
दुग्धं पिबति^{४९} ।)

अथ पुतना विलाप-गीतमाह--१३

हुमे न एहन हरि जानल, मानल अपराधे ।

न हनु, न हनु सुनु^{५०} सिरिपति तिरिवध अछ दाधे ॥

(उत्तान सुतनिष्ठार श्रीकृष्ण किछु मास बिताय एक बेर भूमि पर साप
जकां घुसुकलाह । यशोदा एहि आशयके देखला पर विलक्षण प्रसन्नता से
गीत गवैत छथि ।)

पुतनाक प्रवेश करवाक गीत--१२

हरिवध = कृष्णके मारवाक । कुच = स्तन मे । कालकूट = विष ।

(श्रीकृष्ण अपन करकमलसे स्तन पकड़ि मुँह लगाय आघात से खेचिके
दूध पिबैत छथि ।)

४८ - कैसे । ४९ - हल - क ख । ४९ - ० - क ख । ४९ - ० - ख ।

फटइछ भार कलेवर, तेवर भेल भागी ।

आवे कसिखने मन छोड़ब^{५१}, उर उठइछ आगी ॥

उगिलु उगिलु धन सिरिपति, पुनु हमर निहोरे^{५२} ।

एहन करम पुनन करब, राजब जिय मोरे^{५३} ॥

नन्दीपति कवि गाओल, हरिवध अनुरागी^{५४} ।

पुतनाओ पाओल परम पद, हरि रहु उर लागी^{५५} ॥

गीतार्थे श्लोकः--

पुतना पतिना भूमी श्रीकृष्णेन बिताइता ।

ततो हाहादि-ध्वनेन यशोदा-घपितोत्थिता ॥१॥

यशोदा - (पुतना-वक्त्रस्थलोपरि श्रीकृष्ण पतितं दृष्ट्वा सःवरं कोष्टे
कृत्या पुनः पुनः कण्ठे निषाद्य) आः पाप ! आः पाप !! कि
किंदं बिहिना, ^{५१}अज्जवि एदसस सुदसस ण आसा ।

[किं कृतं विधिना, अद्यापि एतस्य सूतस्य न आशा ।]

(ततो नन्दप्रवेशिका-गीतम्)- १४

हाँ-हाँ सबद सुनि^{५६} सविसेप ।

दरजरि नन्द देल परवेस ॥

पुतना विलाप-गीत गवैत अछि--१३

न हनु = नहि भाऊ । सिरिपति = श्रीपति, कृष्ण । तिरिवध अछ दाधे =
स्त्रीवध निषिद्ध अछि । भार कलेवर = भार सँ देह । उर = छातों मे । निहोरे =
आवना ।

गीतक अर्थ मे श्लोक-

श्रीकृष्णक द्वारा मारलि गेलि पुतना भूमि पर खसलि । तकर हहाएव
बाबर सँ, सुतलि यशोदा उठि गेलीहि ॥१॥

यशोदा - (पुतनाके छाती पर श्रीकृष्ण के खसल देखि भटवय कोरा भेलय बार-
बार कण्ठ लगाय) हाम रे पाप ! आओ एहि पुत्रक आशा नहि
बुझाउ ।

५१ - यशोदा रे - ख । ५२ - निहोरे - ख । ५३ - मोरे । ५४ - अनुरागि ।

५५ - लागि । ५६ - आत्म विषे तस्य । ५६ - सुनि ।

महर हहर कहरव सुनि तासु ।
 दुष विवदते^{४६} हरि हव जिव जासु ॥
 की परकार करव एहिकाल ।
 के जन, कञ्चीन घर कामिनि बाल ॥
 पड़लि पुतना दूरसञ्जी देखि ।
 निकट जाइत पुने बुझल विसेखि ॥
 मन्दकिमोर कोर कए लेल ।
 कह कवि गोविंद बाहर भेल ॥

(शेहर) —

बाहर कए हनु हाथ धरि, जननि सहित जदुराए ।
 कृष्ण कमलमुख चूमि चूमि^{४७}, राखि^{४८} १६६ये लगाए ॥१६॥
 पापनि सारिनि हाथ सञ्जी, जनि^{४९} राखल एहिकाल ।
 से तुअ विनानाय प्रभु, सदा करषु रखपाल ॥१७॥
 गाइल नागरि^{५०} हाथ धरि, हरि शिर चारहु^{५१} दीस ।
 नेउँछि-पेउँछि दुख^{५२} दूरि कए, सबहु देल आशीस^{५३} ॥१८॥
 छिप्र विप्र सब आनि कहु, सब सञ्जी वेद पढ़ाए ।
 सहस्र गाए सकुलिय कहु, सभ के देल बटवाए^{५४} ॥१९॥

(तखन नन्द-प्रवेश गीत)-१४

सबद = शब्द । सविशेष = अमाधारण । दरबारी = शौघता सी । परयेस = प्रवेश । महर = गोप (नन्द) । हहर = विकल भय दीडलाह । हव जिव = प्राण हरलन्हि । कामिनि बाल = स्त्री ओ बच्चा ॥

जनि राखल = जे (प्रभु) रक्षा कयल । विनानाय = विननाथ (सूर्य)
 वा दीनानाथ (दीनाक नाथ विष्णु) । रखपाल = रक्षा ओ पालन ॥१७॥

४६ - विवदते । ४७ - चूमि । ४८ - राखि । ४९ - जनि । ५० - नागरि ।
 ५१ - चारहु । ५२ - दूर दूरि - 'क' । ५३ - आशीस । ५४ - बटवाए, 'क' ।

(अथ^{५५} नन्दभाषितं परमेश्वरस्य कीर्तनगीतम्)-१५

जय जय जगपति दीनदयाल ।
 जनि राखल मोरि^{५६} कामिनि बाल ॥
 समित कएल जनि ई उतपात ।
 जुग-जुग रहओ तन्हिक पक्षपात ॥
 जाहि सुमर सुर-नर सबकाल ।
 से तुअ सतत करषु रक्षपाल ॥
 बालक-पालक पर उपकारि ।
 असुरन-सरन उचित असुरारि ॥
 नन्दोपति कवि विरचलि बानि ।
 देखु अभय बर सारङ्गपानि ॥

(गीतार्थन श्लोक) :-

नागरि = नागरि । हरि शिर = कृष्णक माथ पर । नेउँछि-पेउँछि = हाथ घुमाय घुमाय मंगल मनाय ॥१६॥

छिप्र = क्षिप्र (शीघ्र) । विप्र = ब्राह्मण । आनि कहु = आनि कए ॥१७॥

(आब नन्दक कहल परमेश्वरक कीर्तन)-१५

जगपति = जगदीश । जनि = जे प्रभु । समित = समित (शास्त्र) । उतपात = जगद्वय । सुमर = स्मरण करैछ । सर-नर = देव ओ मानव । पालक = पालनकर्ता । पर उपकारि = परोपकारी । असुरारि = दैत्यक नाश । सारङ्गपानि = विष्णु ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक) :-

जे देव (भगवान्) एहि बच्चाके गर्भ मे प्रतिदिन पालन कयलखिन एखन रक्षा कयलखन, (पुतनाक) बाँहिक पिजडा मे पड़ल देखि बचओलखिन तथा जाहि भगवानक पवित्र चरणकमलक ध्यान सब देवता करैत छथि ओ जे तीनों लोक मे उच्च पदके प्राप्त कयने छथि से भगवान् हमर एहि पुत्रक सेवा रक्षा करय ॥१७॥

५५ - अथ आह = क । ५६ - मोर ।

गर्भे च प्रतिपालितः^{६०} प्रतिदिने येनाऽधुता रक्षितः^{६१}
 दृष्ट्वाऽयं भृजपञ्जरे निपतितो^{६२} देवेन येनाऽधुताः^{६३} ।
 यस्यैकस्य पवित्रपङ्कजपदं ध्यायन्ति सर्वे सुराः^{६४}
 प्राप्ता येन जगत्प्रयोजन-पदवी^{६५} पुनः स मे रक्षतु^{६६} ॥१०॥
 (दोहा)—

ओमरा^{६७}सिसुगन राखिकहुः कतहु जसोमति गेल ।
 एहि अवसर हरि हेरिकहुः चरणे^{६८} शकट ठेलि देख ॥११॥
 दृष्टल शकट हरि ताहि तर, जसोमति दुर सओ देखि ।
 छाती गिटइते हाथ दूहु, दीडलि पाण उपेखि ॥१२॥

(अथ गीतम्)-१९

कहु कहु सिसुगन मोही ।
^{६९}ओमरा राखि गेलहुं हमे तोही ॥
 पलंग सुतल छल मोरी ।
 के लए सकटतर गेल किसोरी ॥
 सकट भंग किए भेला ।
 एत उतपात कजोन कए देला ॥
 सिसुगन भाखल ताही ।
 अयइते दोसर न देखल काही ॥

(दोहा)—

ओमरा सिसुगन रक्षक मे वच्चा सभके । चरणे^{७०} शकट पयर स
 गाहीके । उपेखि^{७१} उपेक्षा कर ।

गीत- १९

ओमरा = ओमरबाहु, रक्षक । सकट = शकट, गाड़ी । किसोरी = बालक कुण्डके ।
 उतपात = उपद्रव । भाखल = कहल । हरि तह = कुण्डक द्वारा । कोहाइ =
 कोझित ॥

६०—पालित—'क' 'ख' । ६१—रक्षित—'क' 'ख' । ६२—निपतित—'क'
 'ख' । ६३—धत—'क' 'ख' । ६४—इवरा—'ख' । ६५—पदवी—'क' 'ख' ।
 ६६—रक्षतु—'ख' । ६७, ६८—ओमरा 'ख' ।

हरि तह एत^{७२} उतपाते ।

ई कहि सिसुगन लगाओल लाते ॥

जसोमति उठलि कोहाई ।

ऐसनि कसहु सुनल अछि माई ॥

नन्दीपति कवि गाऊ^{७३} ।

लए जसोमति सुत कण्ठ लगाऊ^{७४} ।

(दोहा)—

★अलि तातिल हरि जानिकहुं, कतोएक दिवस बिताए ।
 जसोमति ई मन दिइ कर, बांधिए^{७५} उखरि लगाए ॥ १२ ॥

(तसो गीतम्)-- १७

अलि तातिल हरि जानी ।

उठलि जसोमति ई डिइ ठानी ॥

बड़ दुख देइ छह मोही ।

अब हरि बांधि धरव हमे तोही ॥

बानल जउहु अत कोई ।

हरिक तिबिक^{७६} सओ सवे छोट होंई ॥

जसोमति रहलि लजाई ।

ई भुति सखन हरि हलल बाँवाई ॥

उखरि सहित चलु चूपे ।

जमला-अरजुन तारक^{७७} हवे ॥

(दोहा) —

तातिल = उकाठी, तंग कपमिहार । दिइ = निश्चय ॥ १२ ॥

गीत- १७

जउहु = डोरी । तिबिक = निक्कीक स्थान (पेट ओ डर) । हलल = रहल ।

जमला-अरजुन = जमलाजुन (अजुन नामक माल, जे जमल (जौआ) छल,

★- उतपातिल — (एक विद्वानक दृष्टि मे) ।

६६—ई । ७०—बाध- 'क' 'ख' । ७१—लगाइ—'क' 'ख' । ७२—बांधिए ।

७३—गीति- 'क' । ७४—तारक- 'क' ।

मौक्त^{३५} पड़ति बिहू फारी^{३६} ।

अनि कीसले दुहु हलल उपारी ॥

नन्दीपति कवि भाने ।

अधम असुर^{३७} उठि चहल विमाने ॥

(बोहा)-

*कसोएक दिवस वितायकहु^{३८}, असोमति जल लए गेलि ।

पलटि पाछु^{३९} हरि हेरि कहूँ, अति आकुलि^{४०} मने भेलि ॥२३॥

देखि देखि हरि-मुख-नयन, खन विसमय खन हास ।

कोख जाति हरि, शिर कलस, आइलि अपन अवस ॥२४॥

[अधः १ गीतम्]-१८

भाग महर^{४१} तोर बाँचल पूत ।

एहिखन आनु होइत^{४२} अजपूत ॥

हम अति अधम हमर नहि गूत ।

की तमु करम, तोहर एक पूत ॥

दूटा एके ठाम संगहि जनमल छल । तारक रूपे^{४३} तारक शास्त्रक समान नमगर । मौक्त^{४४} बीच में, बिहू^{४५} विभाग । हलल उपारी^{४६} उखाड़ि देल । अधम असुर^{४७} नीच देखि जे वृक्षक रूप में छल ॥

(बोहा)-

पलटि = घड़ि । हरि हेरि कहूँ = कृष्णके^{४८} पाछु अबैत देखि ॥२३॥

हरि मुख नयन = कृष्णक मुहँ ओ आँखिके^{४९} । विसमय = आश्चर्य । शिर कलस = माँथ पर चेल छप ॥२४॥

गीत- १८

महर = गोप, नन्द । तमु करम = हुनक (कृष्णक) कर्म । पूत = पुष्य । परिवजन = परिवारक लोक सेवक वर्ग । परपुत लागि = आनक पुत्रक हेतु । जे मति = हिनक जे बुझि छति ताहि सँ । दिनेक = कोनो दिन ॥

३५- मौ । ३६- खारी । ३७- असुर चलल । ३८- कस एक बेरि । ३९- पाछु हेरि कहूँ- ख । पाछु हेरि हरि- क । ४०- मने आकुली । ४१- X - ख । ४२- हमर अबै । ४३- होइत ।

मन छल विकल बूझि नहि भेल ।

पाछु लागल जमुना तिर गेल ॥

जे सिसु सहज उखरि घरि ऊठ ।

से कैसे चलत कहत सब मुठ ॥

किछु दिन कुटओ-पिसओ बर आन ।

भानस करओ घरओ छन-घान ॥

कि करत^{५०} परिजन परपुत^{५१} लागि ।

जे^{५२} किछु होएत हमहि दुखभाणि ॥

नन्दीपति हम सेजव ने पास ।

जे मति दिनेक हिनक नहि आस ॥

(बोहा)-

की बुझ अयुध गोबारागत, कान्हू^{५३} करवि कत रंग ।

खन बालक, खन तरुन भए, ब्रज-वलितागन संग ॥२५॥

एक दिन^{५४} जाइत पथ कहूँ, मिलु बृषभानु दुलारि^{५५} ।

औचर भए बिलमाए घर, देखि^{५६} छकित सब नारि ॥२६॥

(ततो राधिका-प्रवेशिका-गीतम्) - १९

पशोमति मोर उपरागे ।

हरिक चरित्र माइ बड मन्द लागे ॥

कोर सुतल तोर कान्हू ।

ते^{५७} जनु जानह हरि छवि नान्हू ॥

(बोहा)-

अयुध = अशानी । कान्हू = कृष्ण । रंग = लीला ॥२५॥

बृषभानु दुलारि = राधा । बिलमाए = राकि, बिलम्बित कथ । छकित = आश्चर्यित ।

(तखन राधिकाक प्रवेशक गीत) - २०

उपराग = उल्लूक । मन्द = अभ्यस्त । खन-पाने = खान पिबैत । कटैछधि

कट = कस । ५०- परिपुत । ५१- ० । ५२- कुमारि । ५३- देख ।

एतए^{१०} करवि धन - पाने ।
 ओतए^{११} कटे छवि तरुणक काने ॥
 जाइत जमुना-पथ आजै ।
 वन^{१२} सखी^{१३} बाहर भेल यदुराजै ॥
 आँवर धुयलन्हि मोरा ।
 कातहुक जनमल तोर किशोरा ॥
 तखनुक तसु वेवहारे ।
 अखे^{१४} कि कह्य हम अपन कपारे ॥
 पुछहे^{१५} सकल सखि आनी ।
 तेहि^{१६} परमान होइत मोर वानी ॥
 कह^{१७} सखिगण मन लाई ।
 जननि जसोमति नहि पतिआई ॥
 नन्दीपति^{१८} अवधारी ।
 कृष्ण चरिय सभ छकित मोआरी ॥

(ततः प्रविशति राधिका गीतेन) - २०

हमर कहल जत^{१९} यदि फुसि भेला ।
 कोन परि काहू सकट तर गेला ॥
 दोसर वचन मोर^{२०} सुनु अवधारी ।
 कहू कहू के पुतना - बध-कारी ॥

तरुणक काने = युवकहु सौ बढल चढल चालि रखेत । यदुराज = श्रीकृष्ण ।
 परमान = प्रमाणित । अवधारी = बुझैत छवि ॥

(तखान राधिका गीतक संग प्रवेश करैत नन्दि) - २०

जत = जतेक । सकट तर = गाड़ीक तर । अवधारी = बुझि । अमुर
 = देख्य । मुगुधि = अज्ञानी ॥

८६- एतहु । ९०- सौ ६१- से । ६२- पुछहु सखी सेआनी । ६३- नहि ।

६४- कहकोविन-क, कहहु सखीगण- रा । ६५- नन्दीपति कवि- क रा ।

६६- यत यत । ६७- ० ।

अमुर एक बिरहो-रूप आई^{२१} ।
 ताहि गगन सी कोन गिराई^{२२} ॥
 ऐसनि मुगुधि तोहे असोमति माई ।
 ने चिन्हहु अपन बाल यदुराई ॥
 नन्दीपति यशोमति चुप भेली ।
 राधा ऊठि अपन घर भेली ॥

(दोहा) -

यशोमति देखल एक दिन, हरिके^{२३} खाइत माँटि ।
 अति कोपे^{२४} आइलि निकट, कर^{२५} लय काँटक साँटि ॥२७॥

(गीत) - २१

हे हरि ! पानि कयलहु^{२६} जिव मोरा ।
 "हेहरि भेलहु" हमे हँडल तोरा ॥
 हमे हरि जेहन जन छह^{२७} मोह्री ।
 उगिलाह माँटि कहै छिअ^{२८} तोही ॥
 काँटक छडी अने छिअ^{२९} जोहि ।
 रहू रहू कका^{३०} कहै छिअ तोहि ॥
 "चिहुँकि उठव जवे लागत छीकी ।
 चेरिक पुत जके हलवाहै होकी ॥

(दोहा) -

कोपे = क्रोध हो । साँटि = छडी ॥२७॥

गीत - २१

पानि कयलहु = अत्यन्त परेशान कयलहु । जिव = प्राण । हेहरि =
 मानहीन, अविचारी । जोहि = ताकि । कका = तोहर काका (नन्द) के ।
 चिहुँकि = चीत्कार कय । चेरिक पुत = दासीक पुत । हलवाहै होकी =

६८- आउ- क । ९९- गिराउ क । १- लय काँटाके । २- करहु ।

३- हरिहे कतेक हठव हम तोरा । ४- छी । ५- छी । ६- छी ।

७- काहू । ८- (दू पाँतीक अभाव) ।

नन्दीपति कवि विरचल बानी ।
विशु पैसि नुकाएल सारङ्गपानी ॥

(दोहा) —

नहि बिल, नहि किछु भायिकहुं, माधव हलु मुख बाए ।
देखि बदन-विस्तार अति, यशोमति उठलि डेराए ॥२५॥

(अथ गीतम्)-२२

मनमोहन मुहु^१ ब्राऊ ।

महिमा अपन बुझाऊ ॥

यशोमति डिठि भरि देखु ।

अति अजगुत कए लेखु ॥

शशि मूर, सागर साते ।

सभु सहित^{१०} भृगु-साते ॥

चीदह भुवन अवासे ।

अजार कहव कस रासे ॥

देखि भराइलि^{११} महतारी ।

^{१२}आनंद मुनल मुरारी ॥

नन्दीपति कवि गवे ।

नन्दतनय ^{१३}बुझु भावे ॥

हरवाही पेन = (छड़ी) । विशु पैसि = बालमण्डली में धोतियाय । सारङ्ग-
पानी = श्रीकृष्ण ।

(दोहा) —

भायिकहुं न कहि । बदन-विस्तार = मुहुँक विशाल रूप ॥२५॥

गीत- २२

मनमोहन = कृष्ण । डिठि = दृष्टि । अजगुत = आश्चर्य । शशि = चन्द्रमा ।
मूर = देवता । भृगुसाते = ब्रह्मा । भराइलि = डरे भारी भेल, सिधिल
भेल । महतारी = माता यशोदा ।

१- मुहु । १०- ० । ११- डेराइलि । १२- मन से तेहियाम मानल हारी ।

१३- नन्दतनय रसमय ।

इति द्वादश — नामार्जवत — महाकवि — नन्दीपति — विरचित-

कृष्णकेलिमालायां श्रीकृष्णावतारो

नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

आनंद मुनल = आनन्द सँ मुँह मुनि लेन का 'आनन' (मुँह) मुनल ।

मुरारी = श्रीकृष्ण । नन्दतनय = श्रीकृष्ण ॥

बारह गोट नाम सँ एक महाकवि नन्दीपतिक बनाओल

कृष्णकेलिमाला में श्रीकृष्णावतार नामक

प्रथम अङ्क समाप्त ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(दोहा) —

नन्द विचारल सबहु मिलि गोकुल वास पुरान ।

ते एतेक^१ उतपात होअ की विचार बृषभान ॥२॥

पशु-प्राणीकाँ पानि नहि, यमुना गेलि सुखाए ।

बुन्दावन सए भर करिअ, सुखहि चराबिअ गाए ॥३॥

(सतो नन्दगोप-वृषभानुप्रभृतयः बृषं विहाय गोमहिषीभिः^२ सह बृन्दावनं
प्रति सर्वे निष्क्रान्ताः ।)

द्वितीय अङ्क

एते उतपात = एतेक खलव । गाए — जायके ।

(तत्पत्न नन्दगोप, वृषभानु इत्यादि गोपसक-वृजके^३ छोड़ि गाय ओ महि-
सिक संग बृन्दावनक प्रति-विदां भेल^४ ।)

१-एत सओ—क १ २-गाए—का ३-वृषा—क; वृषः—ह ४-

(शोहा) —

पाँच वरख सखी वएस किछु^४ ऊपर हरिका भेल ।
सङ्गे सखावन सग दिन, एतए ओतए चलि गेल ॥३॥
कर सर धनुसी^५ तुकमा पनही^६ एपर विराज ।
कछुटी पाटक, हाटक, कर बलया^७ खि राज ॥४॥
श्रुति कुण्डल हीरा^८ चमक, पिपही^९ वेनु बजाव ।
सगर दिवस जमुना निकट, छाएक बेरि घर आव ॥५॥

(ततो हलधर-प्रवेशिका-गीतम्) - १

चललि जसोसति हरिक उदेस^१ ।
एहि अवसर हलधर परवेस ॥
लटपटि^२ पान लाग बड़ मीक ।
उड़लि गुड़ी गुन गहि-गहि मीक ॥
असित अम्बर^३ तनु चलइत घूम ।
जनि भाउरि सिखि-सिखा सधूम ॥
अरुण नयन, आनन अभिराम ।
लए अरविन्द जगज हिमधाम ॥
नन्दोपति कवि कौतुक गाव ।
नन्दतनय रसमय दुस भाव ॥

वएस—अवस्था । सगर दिन—सम्पूर्ण दिन । ३।

कर—हाथ मे । सर—बाण । धनुसी—छोट धनुष । तुकमा—तूणीर । पनही—
जूता । कछुटी—कच्छी, जंघिया । पाटक—रेशमी । हाटक—सोनाक बनल मट्टा
(बलया) क कामि (खि) हाथमे मोहित ॥४॥

श्रुति—कानमे कुण्डल । ओ ताहि मे हीरा चमकेल ॥५॥

(वलरामक प्रवेशक गीत) - १

उदेस—खोज मे । गुड़ी गुन—गुड़ीक डोरी । असित अम्बर—नील धरत ।

४—किछु हरिका घरमे । ५—धनुसी तुकमा । ६—चोरा । ७—बलया ।

८—अमर = क हा ।

(ततः प्रविशति हलधरो गीतेन) — २

हे मा । अपन तनय हरि हँदु ।
पाधर दए कोरलरिह मोर लटु ॥
थिनु अपराध सबहु सखी दुदु ।
रजहुक पुत न एहन^१ हथछुदु ॥
हमे परवारि हलइ छिअ कही ।
ई दिहु आवे रहय नहि सही ॥

नन्दोपति कवि कौतुक गाऊ ।

हरिपद पङ्कज हृदय लगाऊ ॥००॥

(शोहा) —

एक दिन बाआ हौकिकहु^२, गोविन्द भेल बन मोज ।
कर कोलाहल बालमत, परइते^३ अवइल सज ॥१॥

(ततो बकामुर-प्रवेशिका-गीतम्) - १

अतिबल बकामुर विबुधारि^४ १० ।
पवन धीर कर पौखि पमारि^५ ११ ॥

एक टोर भेदनि एक^{१२} अकास ।

बालक सकल भेल सतरास ॥

भाउरि—चाक भर लपटैत । सिखि सिखा—आगिक घघरा । सधूम = धुआँ
महित । अरुण—लाल । आनन अभिराम—मुँह सुन्दर । लए अरविन्द—कमल
लय चन्द्रमा जगलाह ।

(तखन वलराम गीत गर्वत प्रवेश करैत छथि ।) - २

तनय हरि—पुत्र श्रीकृष्णके । हँदु—अपराधकर्म सँ रोक । रजहुक—राजाक
सेही । दिहु—निश्चय ।

(बकामुरक प्रवेश-गीत) - ३

विबुधारि—देवताक शत्रू । पवन धीरकर—हवा के स्थिर कवलक । भेदनि
—पृथ्वी पर । सतरास—सयभोज । अनि परहार—अत्यधिक प्रहार करैत ।

१—अहन । १०—रो । ११—री । १२—एक भेल अकास ।

अति परहार आएल पुनु पास ।
हरि हेरि कएल हरख^{१३} परमास ॥
नन्दीपति आवे इहे विचार ।
बहुतक बइरि होएत निस्तार ॥

(दोहा) —

मुझ भेल बड़ि काल धरि, बकासुर^{१४} बाकल जानि ।
दुहु करे^{१५} चीरल^{१६} बच्चु धरि, सत्वर सारंगपानि ॥७॥

(बकासुरो भूमी पपात । इति दृष्ट्वा अनन्तरं सर्वे बालकाः^{१७} सामोदाः) ॥८॥

(दोहा) —

एक दिन बालकबन्ध संग गोविन्द गेला बन मौल ।
कर कोलाहुल बालगन परइते अवइछ सांभ ॥८॥

(सतः अघासुर प्रवेशिका-गीतम्) — ४

वध पड़ि रहल अघासुर आए ।
बड़ गोद कए बइसल मुहु बाए ॥
अति ऊँच परवत सेहओ समाए
बाध सिंह देखि दूरहि पड़ाए
कतओक शिशु पहिनिहि छल भेल ।
हरि हेगु अघे न समटि मुख लेल ॥

हरि — देखि । हरख — दर्प । बइरि — शत्रुता । निस्तार — समाप्त ।

बच्चु — बच्चा । सत्वर — जल्दी । सारंगपानि — कृष्ण । ७॥

(बकासुर भूमिपर खसल । ई देखला पर सभ बालक प्रसन्न भेल ।)

(अघासुरक प्रवेश गीत) — ४

वध — ब्रह्म पर । अघासुर — पापस्वरूप इत्य सापक रूप मे । परवत — पहाड़ ।
समाए — समान लागय । अघे — अघासुर । सरप — सर्वरूपी अघासुरक । एहि-
सह — एहि सँ । हलधि — मारधि ।

(अघासुर भूमि पर खसल ।)

१३ — हास । १४ — बकासुर । १५ — बिर । १६ — भत्ता ।

एहि अवसर हरि कए^{१८} अनुसार ।फारि सरप^{१९} सिर भेल बहार ॥

नन्दीपति एहिन्ह की बाड़ि ।

हरि निज हाथे^{२०} हलधि जिव काड़ि ॥

(अघासुरो भूमी पपात ।)

(श्लोक) —

बृन्दावनस्य निकटे हरिणा चाऽभ्रकैः सह ।

१८ बकासुर बधं कृत्वा अघासुरवधः कृतः ॥९॥

(इति निष्कास्तः) ॥१०॥

(दोहा) —

निज निज बाधा हाँकि कहु संगे सखायन लेल ।
कतोएक दिवस बिताए कहु विरिवावन हरि भेल ॥१॥
उपवन बीतल नन्दसुत, पिपही वेनु बजाव ।
खने भोजन कर भाव कर, कत कत रंग लगाव ॥१०॥
चरइते चरइते माझ बन, कतोएक बाछा भेल ।
कृष्णक महिमा बुझइ^{२१} लए चतुरानन हरि लेल ॥११॥

(श्लोक) —

बृन्दावनक समीप मे श्रीकृष्ण बालकलोकनिक संग बकासुरक वध कय
अघासुरक वध कयलनि ॥९॥ (ई कहि बहार भय गेलाह ।) ॥

(दोहा) —

निज निज = अपन अपन । विरिवावन = बृन्दावन ॥९॥ उपवन = वनक
समीप । भाव = दीवधूप, खेल ॥१०॥ माझ = वनक बीच । चतुरानन =
ब्रह्मा । हरि लेल = हरण कयल ॥११॥ जोहधि = खोजधि । बाओ = बाधत ।
बहुलाथ कृष्ण । आएकहु = आबिके ॥१२॥ सिनु बाछा = बालक ओ बच्छाके ।
विधि = ब्रह्मा । सिरिजि कहु = बनाव के ॥१३॥ गव कहु = नवीन बनाय के ।

१३ — कएल । १४ — सरप । १५ — अघासुरवध कृत्वा बकासुरवधोत्तरम् — क,
अघासुरवध कृत्वा ॥ १६ — बुझए लाई के बा ।

से जोहधि गए आओ धरि जसोदासुत जुनुगह ।
 सावत् उपवन आएकुहु फेरि हरल चरबाह ॥१२॥
 जे सिसु^{२१} बाछा विधि हरल सकल मिरिजि कहु लेल ।
 जेहने जेहने जे अछल, तेहने तेहने भेल ॥१३॥
 नव कए सिद्धिल नन्दसुत, ई सबे धिक केओ आन ।
 से बाछा ककरहु नहि^{२२}, अपने अपने जान ॥१४॥
 कतोक दिवस बिताएकहु, विरिदावन हरि मेल ।
 ओहि^{२३} रूप सिसु बाछा सकल विधि बेकत कए देल ॥१५॥

(अथ गीतम्) - ५

बाछा विपिन निहारी ।
 आकुल सबे घेनुआरी ॥
 हुँकरि हुँकरि सबे आवे ।
 २४ए यन दूध पिआवे ।
 २५सिसु सिसु आनि मेराऊ ।
 हरि हेरि हरल बुझाऊ ॥
 नन्दीपति कवि आने ।
 कान्हे कएल परधाने २६ ॥

(दोहा) -

जस सिसु बाछा विधि हरल, ताहि ताहि के देल ।
 एक एक जकरा २७अछल, तकरा बुझ बुझ भेल ॥१६॥

नन्दसुत = श्रीकृष्ण ॥१४॥ ओहि रूप = पहिने जेहने छल ताही रूप में ।
 विधि = कृष्ण । बेकत = व्यक्त, प्रकट ॥१५॥

गीत - ५

विपिन = वन में । घेनुआरी = माय । सिसु = बालक (चरबाह) सब ।
 सिसु आनि = बाछा आनि । मेराऊ = मिलजोड़क । हरि हेरि = कृष्ण
 देखिके । परधाने = स्पष्टीकरण वा प्रधान ॥

२१- सिसु बाछा । २२- नही । २३- ओहि - क हा । २४- कए यन ।
 २५- सिसु । २६- परधाने । २७- अछल ।

गोप-अष्टमी जानिकहु, सातव सकल गोधार ।
 इन्द्रक पूजा करइर^{२८} लए सबहु^{२९} रचल विचार ॥१७॥
 निज निज गाए दुहाए कह, सबके^{३०} देल हकार ।
 भोग देल मैदा महिस, साजल सब उपहार ॥१८॥
 व्यञ्जन विविध प्रकार कइर^{३१}, भातक निधे^{३२} २० रासि ।
 खीरि पुरी टका वही, एकओ वस्तु नहि वासि ॥१९॥
 कथिलाइ पूषाव इन्द्रके^{३३}, कीर^{३४} तन्हि सह अछि काम ।
 सब तहु गोवर्द्धन विपुल, तन्हिकहि दिज एहिठाम ॥२०॥
 नीक^{३५} कहै छथि नन्दसुत^{३६}, सबहु^{३७} कएल अंगिकार ।
 एहि अवतार परवत उतर, देखल एक अवतार ॥२१॥
 परवत मज्जो हंसि हेठ भेल, विश्वम्भर अवतार ।
 भात-विमन भोजन कएल, जत छल विविध प्रकार ॥२२॥
 जे जकरा ईप्सित^{३८} अछल, ते^{३९} ते^{४०} से बर लेल ।
 नन्द आदि बल्लव सकल, अपन अपन घर मेल ॥२३॥

(ततः^{४१} श्लोकः) -

यदि श्रुत्वा^{४२} सुरेन्द्रेण, न कृतं मम पूजनम् ।

^{४३}असन्नुष्टेन सक्रोधं, नन्दादीन्^{४४} बल्लवान् प्रति ॥२४॥

(दोहा) -

जस = जकरा ॥१७॥ गोप-अष्टमी = भाद्र शुक्ल अष्टमी ॥१७॥ व्यञ्जन
 =तरकारी । रासि = डेर ॥१९॥ कथिलाइ = क्रियेक । तन्हि सह = हुनका
 (इन्द्र) सँ । दिज = भोग लगाउ । २०॥ अंगिकार = स्वीकार । अवतार = देवताक
 मनुष्य रूपमें आगमन ॥२१॥ ईप्सित = अभीष्ट । ते ते = से व्यक्ति । से बर =
 अभिलषित वरदान । बल्लव = गोप ॥२३॥

(ततः श्लोकः) -

हमर पूजा नहि कयल गेल-ई सूनि जे इन्द्र असन्नुष्ट भय क्रोधपूर्वक
 नन्द आदि गोपसभक प्रति ई कहलथिन- के कृष्ण धिक ओ के बल्लराम

२८- करए साइ । २९- सबहु । ३०- निजिअ । ३१- शिरि । ३२- ('को'
 क अभाव) । ३३- निक । ३४- सूत । ३५- ईप्सित । ३६- ततो ।
 ३७- सत्ता । ३८- असन्नुष्टवच-क हा । ३९- वक्ति ।

इदमुक्तं तदा तेन कीदृशः कीदृशमुद्यः ।

गोपानां गर्वनाशाय, गच्छन्तु मम किङ्कराः ॥१३॥

(दोहा)

इन्द्र पठाओल मेधके, ई कहि बारम्बार ।

कए बरखा आकुल करव, जत अछि गाए गोआर ॥१४॥

पसरल जलधर जाल जके, विरिदावन बहु-दीस ।

गानि पड़ल अँवकार अति, पसु केँ पसु धरि पीस ॥१५॥

(अथ गीतम्) - ६

वासव^{४०} विमुख, विपन धन, कीदहुँ अछि होइनिहार ।

बड़ बड़ बुन्द उखरि सन मुसर सन जलधार ॥१६॥

कपड़ते^{४१} धेतु धरानन्द, कठिन काल अवधारि ।

बाधहि रड़ल वछा^{४२} कत, आकुल गाए गोआरि ॥१७॥

बड़ कए रोस^{४३} बढ़ाओल, बालक भेल विचारि^{४४} ।

कनोएक कतहुँ इहो बह, बड़ मन्द कपल मुरारि ॥१८॥

नन्दीपति कह एहि लए, जनु केओ आवे डगाए^{४५} ।

की होअ तन^{४६} तारा तह, सवि अछि जनए सहाए ॥१९॥

(गीतम्) - ७

पसु^{४७} प्राणी अति आकुल जानि ।

करे गिरिवर बड़ सारंगवानि ॥

शिक ? गोपसभक गर्वकेँ नष्ट करबाक हेतु हमर सेवक सभ जाओ ॥२०॥

(दोहा) - जलधर - मेघ । पसुकेँ - मालजालकेँ ॥२१॥

गीत - ६

वासव विमुख - इन्द्र विरुद्ध छवि । विपन धन - विवाद (दुःख) से मुक्त मेघ अछि ॥१६॥

धरातल-पृथ्वीपर । अवधारि - विचारि बाधहि - खेतहि, गाम ही हटल ॥१७॥

रोस - ईर्ष्या । मन्द - अधलाह काज । मुरारि - कुण्ड ॥१८॥

४० - विमुख वरिस । ४१ - बाधा । ४२ - वेत । क । ४३ - विचार ।

४४ - डगाए । ४५ - तनए । क । ४६ - पसु ।

ता तर राखल गाए गोआर ।

के कर केकर एहन उपकार ॥

वसुधा बुन्द परए नहि^{४८} पार ।

की तेज नील^{४९} जलद जहाधार ॥

ठामहि ठाढ़ रहल जदुराए ।

परिजन केँ पछपात बुसाए ॥

गाए महिसि सभे सुखे खड़ खाए ।

एहिउं^{५०} तर दिन सान बिताए ॥

नन्दीपति कह किछु नहि^{५१} भेल ।

इन्द्र अपन सन कए मुह नेल ॥

(दोहा) -

५१ कतभीक दिवस बिताएकहु, गाए चरावए नेल ।

शिशुगन वयस समान लए, यमुना तिर दिस भेल ॥२०॥

कालिन्दी कालिय^{५२} अलल, करइते^{५३} कत उतपात ।

ते हरि कुदि करम्व सजो, ता भिर दए चढ़ लात ॥२१॥

गीत - ७

पसु प्राणी - गाय महिसि आदि पशु ओ मनुष्य । करे - हाथ ही । गिरिवर - गोवर्धन-पर्वत । सारंगवानि - कृष्ण । ता - ताहि । के कर - के व्यक्ति कय सकैछ । केकर - ककर । वसुधा - पृथ्वी पर । की तेज - की छोटक ? नील जलद - नीलवर्णक मेघ । जदुराए - कुण्ड । पछपात - पक्षपात, अभिलाषा । एहिउं - एकरहु । अपन सन कए मुह - अवस्तुन भयकेँ, हतप्रभ भयकेँ ।

(दोहा) -

कालिन्दी नयमुन नही भे । कालिय अलल - कालिय नामक विशाल विषधर साप छल । उतपात - उपद्रव ॥२१॥

४८ - न । ४९ - नीलज जलज - कख । ४९ - एहि उत्तर । ५० - मही ।

५१ - ० (वृत्तान्तक अभाव) - क । २२ - काली । ५३ - करदुत - ।

ओतए कुण कालिक ५४ सङ्गे जल निमग्न भए गेल ।
एतए बिकल बल्लव सकल, कतए गेल की भेल ॥३९॥
हुसि हलधर कहु तात के । हरि की ककर तरास ।
कमलापति असरन सरन, मन जनु करिअ ५५ उदास ॥३९॥
(ततो गीतम्) - ८

कालिय ५६ विषधर सहए न पार ।
अनिगुहतर ५७ हरि—चरणक भार ॥
जखन चरण दए चहुल मुरारि ।
फन फाटल अनि पङ्क दरारि ॥
जनि दल ५८ कदल पसरि सिर गेल ।
दसन ओह धेनि बाहुर भेल ॥
जखने नागनि काँसि कएल बलोल ।
तखने मानल हरि विषधर बोल ॥
कर कस्या कत कोसल भाखि ।
जिवि ६० गेल जिवि गेल हरि हलु राखि ॥
आवे नहि एतए तोहर निरबाह ।
एसु ६१ मानुल जल पीउल चाह ॥
एतन्दीपति नहि गरुड तरास ।
सागर सतस करह गए बास ॥

निमग्न = निमग्न; डूबि गेल । बल्लव = गोशर ॥३९॥
हलधर = बलराम । तात = पिता । तरास = वास, डर । कमलापति = लक्ष्मी
पति, विष्णु ॥

(तखन गीत) - ८

गुहतर = भारी । फन = फना । पङ्क दरारि = पाँच सखयला पर जेना दरारि
फाटि जाइत छैक । दल कदल = केराक पात । दसन = दाँत । काँसि =

५४- कालीक । ५५- करीअ । ५६- काली । ५७- चरण भर (एहि पाँती मे एतयहि
अछि) — क ५८ । ५९- फना । ६०- बलक बल । ६१- जीव- क ५८ ।
६१- एसु । ६२- ०० (५ पाँतीक अन्तमे)

(ततो ६३ जलादागत्य प्रविशति श्रीकृष्णः । सर्वे साक्षर्यं पश्यन्ति ।)
(दोहा) —

नन्द यशोदा आदि कए, जे केशो छल नर नारि ।
देखि सकल सानन्द भेल, अवश्ये निकट मुरारि ॥३९॥
ताहि दिखस सजो कृष्ण सजो ६४, सबका अधिक सिनेह ।
नर नारी जानल सबहु, ई केशो अपुरुष देह ॥३९॥

इति द्वादश-नामाऽन्वित-महाकवि-मन्दीपति-विरचित-श्रीकृष्णकेलि—
मालाया तरुण-तामरस-लोचनो नाम
द्वितीयोऽङ्कः ।

कानिकय । कौशल = चतुरता सौ । गरुड तरास = गरुडक डर । सागर =
समुद्र मे । सतस = सदिनत ॥

(तखन जलसँ आवि श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । सभ आदर्य
सँ देखैत छथि ।)
दोहा —

आदि कय = इत्यादि । दिखस सजो = दिन सौ । अपुरुष = अपूर्व
॥३९॥

द्वादश नामाऽन्वित महाकवि मन्दीपतिक जनाओल
श्रीकृष्णकेलिमाला मे तरुण-तामरस—
लोचन (नवीन फुलावला लाल कमल सन
आँखिवला) नामक द्वितीय
अंक समाप्त ।

६३- ततः प्रविशति—क; ततो जलादागत्य श्रीकृष्ण सर्वे—ख ।
६४- कलि- क; कल्यो- ख ।



अथ तृतीयोऽङ्कः

(दोहा) —

कतौ एक दिवस बिताएकहुँ, हरिकी यौवन भेल ।
अति सुन्दर हेरब हँमब, गति रतिपति जिति लेल ॥१॥
सखी सखित श्रीराधिका, कर जमुना—जल केलि ।
पलटि पाछु नहि हेर केओ, रमस मगनि सभ भेलि ॥२॥
केओ शशिमुखि केओ कमलमुखि, कुरङ्गनयनि केओ नारि ।
जनि जगमग कर सहस ससि, बोदिस कला पसारि ॥३॥
एहि अवसर हरि जाएकहुँ, कौसले जमुना—तीर ।
बोली चीर बोराएकहुँ, कदम चढ़ल जदुवीर ॥४॥

राधिका — (गीतेन) — १

अम्बर बण्ड उतारी ।
हे लए कदम तर चढ़ल मुरारी ॥
अभरण एक बर लेहे ।
हरि ! परिधान—वसन मोर देहे ॥
सबहुँ सखी पट पाऊ ।
हमरहि किए एति सन थिलमाऊ ॥
एत^२ कोतुक किए तोही ।
कारन कञ्जोण कहहु कुहु मोही ॥

तृतीय अंक

(दोहा) — यौवन = युवावस्था । गति = कृष्णक चालि । रतिपति = कामदेव-
के ॥१॥ केलि = खेल । पलटि = घूरि के पाछु क्यो नहि तकलक ।
रमस मगनि = हँसी—मजाक भे मगन ॥२॥ शशिमुखि = चन्द्रमा-
सन मुँहवाली । कुरङ्गनयनि = हरिण सनक ओसिवाली । सहस

१- नीतम् । २- एति ।

किए^२ तोहे पारह गारी ।

हमे न तोहर हरि ! सरहोजि^३ सारी ॥

मीर^४ मुख अवइछ आगो ।

तोइ^५ करह हरि ! ततबहि^६ लागी ॥

हमहुँ बुझिए तोर भावे ।

से मन वासि करह ! हरि आवे ॥

नन्दीपति कवि गावे ।

नन्दतनय रसमय नुस भावे ॥

श्रीकृष्णः— *वस्तवसुते । आभरणस्य किं प्रयोजनम्, तदालिङ्गनं देहि ।

राधिका— (गीतेन) — २

सखि सवे परिहरि गेली ।

ऐसनि विपति मोहि भेली ॥

हमे एकसरि जलमाँझ ।

परहते अवइछ साँस ॥

ससि = हजारी चन्द्रमा ॥३॥ कौसले = कलकुशल, चमुरतारी ॥४॥

राधिका — (गीतक द्वारा) — १

अम्बर = वस्त्र । अभरण = महता । परिधान वसन = पहिरन
वस्त्र । पट = वस्त्र । कोतुक = उत्सुकता । पारह गारी = गारि
पड़ैत छह । आगो = आगि, ज्वाला । ततबहि लागी = ताही लेल ।
'मन वासि करह' = नहि होयतह ॥

श्रीकृष्ण — गोपपुत्रि ! गहनाक हमरा कोन प्रयोजन अछि ते आलिङ्गन
दएह ।

राधिका — (गीत सं) — २

परिहरि = छोड़ि । जिवमार = प्राण लेनिहार । जल धीवर = पानि

२- कीए- क सा । ३- सरहोज- क ख । ४- मुख- क सा ।

५- तन बहि । ६- वस्तव, म- १ ।

आवे की करव परकाह ।
 मोरे भेष्टे भेल जन्धार ॥
 नहिँ शर ! नन्दकुमार ।
 चिन्हल खार जीव-मार ॥
 जल धीवर, बन गोप ।
 अति पोरस अतिहीन ॥
 मुति उठलिहूँ देखि जाहि ।
 पड़ओ हमर दुख ताहि ।
 हमे न करिअ अधिकार ।
 के मने आव विचार ॥
 मन्दीपति कवि गाव ।
 नन्दतनय युभ भाव ॥

(ततः श्लोकः) —

एकाकिनी विवस्वा च यादोवण-सुखिक्लृताम् ।
 परोक्षे तव धर्मस्य यथायुक्तं तथा कुरु ॥१॥
 आकर्ष्य राधिका—चावयं कृतकृत्यो जनादेना ।
 वृक्षादागत्य निकटं भावते ऽ विहितं यथा ॥२॥

(ततो राधिका-करकमलं गृहीत्वा पुनः पुनः सविकारं पश्यति ॥)

मे मलाह ओ इनमे गोआर विशेष बलशाली भय जाइल । अधिकार
 न स्वीकार ॥

(तकर बाद श्लोकः) —

एकसरि, नाउटि ओ जलजशु सँ डरायलि हमरा आन धर्मक परोक्ष मे
 के उचित हो से कह ॥१॥

राधिकाक वचन सुनि सन्तुष्ट ओ कृष्ण माछ पर सँ लग आवि यथोचित
 बजलाह ॥२॥

(तखन राधिकाक करकमल पकड़ि बारम्बार देखैत छथि ।)

६— भावितं ।

राधिका — १० कथन ! कथन ! ! अहं पि तुज धम्मरस परोक्षे; जहा जुत्तं
 तहा करेहि । बल्लह-सुख बल्लकारेण एवं ण जुत्तं । मए वि तुअ
 ईरिसो पुरुषो अज्जवि कोचि ण विट्ठो । अहवा तिअ-वेअणा-समुद्धं
 जलजापे; साअरस्स अलक्खिअ णो होइ । [कृष्ण ! कृष्ण ! !
 अहमपि तव धर्मस्य परोक्षे; यथा युक्तं तथा कुरु । बल्लभ—सुता—
 —बल्लकारेण एतन्न युक्तम् । मयापि तव ईदृशः पुरुषः अद्यापि
 कोपि न वृष्टः । अथवा स्त्री-वेदना-समुद्रः जलजापैः सागरस्येव
 अलक्षितो न भवति ।]

(बोहा) —

राधा सजो^{१०} रतिरङ्ग कर, नागर नन्दकुमार ॥

अति अनरथ^{१२} करि, राधिका सखनुक उचित विचार ॥१॥

राधिका— (सोइ गेन) —

जेहन तोहर भरोस करि, तेहने तोहे कए देल ।

आंगुर धरहते हाथ छर, सेहे^{१२} उपलक्षण भेल ॥१॥

(ततो गीतम^{१४}) - ३

हरि कस अम्बर दाने ।

तइअओ रमणि मन नहि परमाने ॥

राधिका— कृष्ण ! कृष्ण ! ! हमहूँ अहाँक धर्मक परोक्ष मे पड़लि छी, जे उचित
 हो से कह । गोप-पुत्रीक बल्लकार सँ ई काज ठीक नहि भय
 रहल अछि । हमहूँ अहाँक सन पुरुषकेँ खाइ धरि ककरहु नहि
 देखने छलहुँ । अथवा नारीक वेदनारूपी समुद्र, समुद्रक जहाज सभ
 जकाँ अँखि सँ ओझल नहि होइत अछि ।

(बोहा) —

रतिरङ्ग^{१०} केलिकीड़ा । नागर^{११} चतुर । अनरथ^{१२} अनर्थ ॥१॥

राधिका— (विकल भयकेँ) —

सेहे उपलक्षण^{१३} न तकरे परि, सएह कहौ चरितार्थ भेल ॥१॥

१०— (दूनु पोथीक पाठ अत्यन्त अष्ट ॥) ११— सँ । १२— अनर्थ ।

१३— सेह । १४— गीतेन ।

अम्बर अङ्ग भरि लेला ।
 दहोधिहि हरि दौड़ि उठि देला ॥
 पुत्प-हुत्प नहि धीरे ।
 केवहु पलटि पुन हरधि न धीरे ॥
 पयहु परम डर माने ।
 निरखि निरखि करु कान्हुक भाने ॥
 रसमय काए अवधाने ।
 पुर परवेश पहिर परिधाने ।
 १० नन्दीपति देखि ११ नारी ।
 सखि सब जाए देत परतारी ॥

(दोहा) —

दुर सज्यो १० देखल सखीगण, राधा कर अतिरोष ११ ।
 तोहरा सभके की कहव, हमरा करमक दोष १३ ॥

(ततो गीतम्- ४)

चिन्हल चिन्हल सखि ! तोही, १२ हमे ओही ।
 परिहरि ऐलिहि मोही ॥
 सुनु सुनु संकट मोरा, नहि धोरा ।
 १३ बड़ मन्द तन्दकिमोरा ॥

गीत- ३

हरि कहु ॥ कृष्ण कवल । अम्बर ॥ वस्त्रक । रसनि ॥ सुन्दरी । परमाने ॥
 विश्वास । केवहु ॥ कहूँ, कदाचित् । धीरे ॥ वर्य । पयहु ॥ रासो मे । निरखि
 ॥ देखि । कान्हुक भाने ॥ कृष्णक प्रतीति (कृष्ण त ने अर्धत छवि से शान) ।
 अवधाने ॥ समुहरि । परिधाने ॥ वस्त्र ॥

(दोहा) —

अतिरोष ॥ खूब तामस । करमक ॥ भाग्यक ॥ १३ ॥

१५-०० (३ वीं पंक्ति अभाव) - क । १६- देखि चतुरा नारी । १७- सी- क हा ।

१८- अवरोध । १९- अरु सब मिलि । २०- बड़ छवि मन्द ।

ओचर २१ धएलन्हि देरी, हेरि हेरी ।
 हठहि बितल २२ बड़ि बेरी ॥
 तखन वसत हुनि देला, हमे लेला,
 भवितव छल से भेला ॥
 नन्दीपति २३ कवि गावे, पछतावे,
 जावे हीमए रह तावे २४ ॥

(दोहा) —

कतोएक दिवस बिनाएकहु २५ सधि लय फएल पयान ।
 सखी सहित श्रीराधिका, बट भेटल भगवान ॥ २६ ॥

श्रीकृष्णः—

(गीतेन) — ५

प्रतिदिन एहि पथे जाहे ।

दधि दुध बेचि-बेचि खाहे ॥

हरि पाउलिहे २७ हमे आजे ।

कए छऽव निजा काजे ॥

ओही २८ दिन बिसरल तोही ।

कोने परि मिललिहे मोही ॥

लए सरअर चहु धीरे ।

रोहे हमे पदाव शरीरे ॥

गीत- ४

ओही = ओहीठाम, निर्जन वाट मे । परिहरि = छोड़ि । मन्द = अधलाह
 स्वभावक । भवितव = भावी ॥

(दोहा)

पयान = प्रयाण, यात्रा । भगवान = श्रीकृष्ण ॥ २६ ॥

श्रीकृष्ण — (गीतक द्वारा) — ५

पथे = वाटे, रास्ता सी । पाउलिहे = पाओल । निजा = अपना ।

सरअर = माछ पर । धीरे = धैर्य लय । तिर = तट पर ।

२१- घर केरि-केरी- क २२- कत । २३- कह आजे । २४- कौ ।
 २५- पीलिह । २६- ओ-दिन ।

एहि तिर हमहि जगाती ।
 के हम मह उत्तपाती ॥
 सबहु सखी मिलि आऊ ।
 राधि दूध साखन खाऊ ॥
 मोरि घनि सबहु कहाऊ ।
 अपन अपन घर जाऊ ॥
 नन्दीपति कवि गार्इ ।
 कान्ह खटल मनुषाई ॥

(दोहा) -

की देव उत्तर ताहि हमे, जे मोहि सोभल जगात ।
 ई कहि कान्ह पयान कर, बारम्भ भेल उत्तपात ॥६॥
 कान्हरे कर धर राधिका, वही देल फटकारि ।
 गारि देखते, सभे कुणक गोपी छुटलि मोहारि ॥१०॥

(अथ प्रथम-गीतम्) - ६

आमी पाछी जतेक छलि ।
 सभे गोपी एक भेलि ॥
 एकहि बेर सभे घसलि ।
 कुणक उपर छुटि खसलि ॥

जगाती = घटवाह, खेवा लेनिहार, उत्तपाती = उकट्टी, घनि =
 घमा प्रेमिका । मनुषाई = उरसाहित ॥

(दोहा) -

ताहि = तनिका । जगात = खेवाक रूप मे । कान्ह = कुणक । पयान
 = प्रस्थान (राधाक दिस) । उत्तपात = उपद्रव ॥६॥ कान्हरे = कुण राधाक
 हाथ घसल । मोहारि = रक्षा मे ॥१०॥

पहिल गीत - ६

घसलि = आक्रमण कयलक । छुटि खसलि = टूटि पड़लि । कोनहु पाग = केओ
 गोपी कुणक मुड़ठा घसलक । फाड़ = धोतीक कसल बन्धन । उकरि = कूटि ।

२७. मोहारि-क । २८-यति ।

कोनहु पाग, कोनहु फाड़ ।
 कोनहु धएल कुणक खाड़ ॥
 उकरि उकरि धरि धरि ।
 कोनहु धएल पाज २९ धरि ॥
 केअओ बाध, केअओ मार ।
 केअओ ककरहु हाक पार ॥

गाल ठुनुक, पीठ घाट ।
 केअओ गोपी चिउटी काट ॥

कोनहु झटहा, कोनहु चेप ।
 केअओ दही मुह लेप ॥
 कान कनेटी, मुक्का घाड़ ।
 ककरहु अस्त्र दूधक भाड़ ॥

केअओ घर, केअओ छोड़ ।
 केअओ कच कपाड़ फोड़ ॥

काँद बाज छाती पीट ।
 केअओ जोह ३० पाथर ईट ॥

दीड़ रहल कुणक अड़ ३१,
 सबहु देल ३२ दाँत खड़ ॥

पाज = बाहुपाश । हाक पाड़ = मोर करम (आह्वान) । ठुनुक = अङ्गुष्ठा पर
 तर्जनी छोड़ि गाल पर प्रहार । चिउटी = अङ्गुष्ठा पर से किसिके त्वचा दबाएव ।
 झटहा = प्रहारक हेतु फेकल जाइत डंटा । चेप = डेपा । भाड़ = भाण्ड, डाय ।
 काँद = कानय । जोह = खोजैत अछि । दीक = दूध, स्थिर । अड़ = ओत, ओट
 मे । देल दाँत खड़ = आश्चर्यित रहल, लज्जित भेल । घाल = क्षिपिल, हारल ।
 दोहाइ = प्रार्थना । ओहीकाँ = अहोके । पए = निरुचय । कान्ह = कुण । पाओ
 = पाथर । बाहरि = कवि नन्दीपतिक प्रसिद्ध नाम बाहरि । अपात
 = विपत्ति । कचल = गलल । जगात = खेवा ॥

२९. पाय । ३०. मोह । ३१. खड़ । ३२. सबहु लेक ।

बूझि बूझि अपन बल ।
 सबहु गोपी कएल बल ॥
 काँदि काँदि राधा कह ।
 पुहल पीहल माजनि सह^{३३} ॥
 हमर दोहाइ हसु छाड़ि ।
 कछोन फल आँवर फाड़ि ॥
 जञो जौहाँकाँ इहे पए ।
 ओहि पार देव गए ॥
 काँहु छठि आनल नाओ ।
 सबहु गोपी देल पाओ ॥
 कह बादरि इहे^{३४} अनात ।
 राधा कबूल कएल जमात ॥

(ततो द्वितीय-गीतम्)- ७

हरि हे ! धनि आकुल मन मोरा ।
 कतेक सहव हमे कौतुक तोरा ॥
 कूटलि नाओ, टटल करआरे ।
 कोमे परि हमे धनि उत्तरव पारे ॥
 एहि जमुना-जल कतहु न पाहे ।
 देव प्रिमहार पार लए^{३५} जाहे ॥
 घने बुन्द धरिस^{३६} दसहु दिसि मेहा ।
 आवे अधिक भेल जीव सन्देहा ॥

तखन द्वितीय गीत- ७

आकुल = विकल । कौतुक = मजाक, हँसीठट्टा । करआरे = नाओ खेदधाक
 काँठक दण्ड । धनि = सुवती । प्रिमहार = कण्ठक मोतीमाला । घने = सघन,
 अविक । मेहा = मेघ । हिव हारी = निराश भेल । पथ जनु चड़ = रास्ता सँ
 जनु गुजरय ।

३३- सह । ३४- एहे । ३५- जाहे । ३६- धरिस बसहु बिसि ।

सबहु^{३७} सखी मिलि हसु हिव हारी ।
 विनु रे पुरुष पथ जनु चड़^{३८} नाही ॥
 नन्दीपति कह^{३९} कछोन जवाई ।
 डगमग नाओ करइ अछि माई ॥
 (४० अथ तृतीय-गीतम्)- ८
 हरि हे ! एतेक करह कथिछाई^{४१} ।
 आवहुँ अभिमत कहहु चुलाई ॥
 सभे सखि पार उत्तरि घर गेली ।
 ऐसनि^{४२} विपति काहु नहि भेली ॥
 सबकाँ चीर सबहुकाँ चोली ।
 सभे परिहरि हमरहि सखी^{४३} ठोली ॥
 भल होअ रुबिअ^{४४} होअह वधभागी ।
 एत परिपञ्च भेल हमरहि लागी ॥
 नन्दीपति कवि कह परमाने ।
 पथ रे रमनि दुख पुरुष ने^{४५} जाने ॥
 (श्रीकृष्णः हठात्कारेण राधिका-करकमलं गृहीत्वा पुनः
 पुनः सविकारं पश्यति ।)
 श्रीराधिका— (सकोधं गीतेन कथयति)— ९
 कहु कहु कहसन जमाते ।
 के लोहें, के सोर ताते ॥

आथ तैसर गीत- ८

अभिमत = अभिप्राय । चीर = बरन । चोली = देहुक वस्त्र (जलासज) । परिहरि
 = छोड़ि । ठोली = ठट्टा । वधभागी = हत्याक पापक भागी । परिपञ्च =
 प्रपञ्च, छल । पर रे रमनि = आमक नारीक ॥
 (श्रीकृष्ण बलजोरी राधाक करकमल पकड़ि बारंबार बिकार
 सहित देखैत छथि ।)

३७- सबहु । ३८- चड़ । ३९- । ४०- अथ च । ४१- कथिछाई । ४२- ऐसनि ।
 ४३- सखी । ४४- रुबिअ । ४५- न जाने ।

धक देखि डेराहुह बापे ।
 तोहरा बड़ बल दापे ॥
 छोड़ छोड़ औचर मोरा ।
 दधि दुध माखन चोरा ॥
 तखने लेलाह ४६ मिम—हारे ।
 आवे न करह किए पारे ॥
 ऐसन करम मोर मन्दा ।
 देलहु ४७ कर दन्दा ॥
 ने ४८ पारिअ एक कोड़ी ।
 ने हमे तोहर नौदी ॥
 किए हेरि ४९ हलह डराई ।
 कारन कहह सुसाई ॥
 रह रह नन्दकुमारे ।
 आवे करब परकारे ॥
 बाप हमर दरबारी ।
 भूप-भवन उपकारी ॥
 कंस ५० हनब जवे जानी ।
 सभे दुध होएतह पानी ।
 सुनह ५१ सुनह जदुराई ।
 आज सुनब मनुसाई ॥

राधिका— (कोषपूर्वक गीतक द्वारा कहैत छथि)— ६

कहसन जगाने ॥ केहन सातिक सेवा देब । तखे ॥ बाप । दापे ॥
 बलक दावी । मिमहारे ॥ कण्ठक मोती भाला । करम ॥ भाग्य ।
 मन्दा ॥ कमजोर । देलहु ॥ देलो पर । के कर दन्दा ॥ भगड़ा के
 कय सकैछ । नौदी ॥ दासी । हेरि ॥ देखि । हलह डराई ॥ डेराव

४६— लेलाह । ४७— कर । ४८— न एक पारिअ । ४९— हरि हलह डेराई ।
 ५०— कंस हनब पवे । ५१— सुनह ।

मन्दीपति कवि गावे ।
 ५२ गावे सहइ छिअ तावे ॥

[गीतार्थे श्लोकः]—

मो दूरावपि चागता परिचिता नो वाऽपि चोरप्रजा
 नाहं कीतुक-भाजन ५३ तव पुनस्तातस्य बेदी न वा ।
 नाऽन्या काऽपि कुटुम्ब-वर्जित- ५४ परा शोक्या न नीचात्मजा
 गोपुत्रस्य पयोधनहारक ! हरे ! दूर ५५ न किं विवदसि ॥१॥
 ततो गीतम्—१०

छोड़ छोड़ औचर मोरा ।
 माधव । मोर निहोरा ॥
 किए बिलमावह मोरी ।
 भल न कहत केओ तोही ॥
 हमे वृषभान-दुलारी ।
 एत नहि उचित मुरारी ॥

रहल छह । नन्दकुमारे ॥ कृष्ण । परकारे ॥ प्रतीकार । भूप भवन ॥ राजाक
 घरक । कंस हनब ॥ कंस मारयन्ह । दुध हायतह पानी ॥ बदला लेल जयतह,
 तखन बूझि पड़तह । जदुराई ॥ कृष्ण । मनुसाई ॥ असाहित भेनाइ ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक) —

ने हम दूर सँ आयलि छी, ने तोहर परिचिन छी, ने चोरनी छी, ने तोहर
 ठकइमआ छी, ने तोहर बापक दासी छी ने आम छी, ने अजाति छी आ ने नीच
 जातिक पुत्री छी । त्रे बचछाक दुध छिननिहार हरि ! तैं दूर हटल कियेक ने
 रदैत छह ॥१॥

गीत—१०

निहोर—प्रार्थना । बिलमावह—रोकि देरि लगबैत छह । भल—नीक ।

५२— गावे सहइ । ५३— भाजना । क; भाजनस्तव । छ । ५४— वर्जित ।
 ५५— दूर ।

ऐसन करम मोर मन्दा ।
कि कहति^{११} सासु ननन्दा ॥
परिहृष काहू कुरीती ।
हठे नहि होइति विरीती ॥
नन्दीपति कवि गावे ।
भजनहि पद भल आवे ॥

(श्रीकृष्णने बलारकारेणैव बलवसुता-सम्भोगं कृतमेव । राधिका सोढेनं
नेत्राम्बुपुरितमुखी^{१२} तन्वाग्ने भूमौ लिखति ।)
श्रीकृष्णः - बलव-सते ! कथं विधीदसि ? (इति उत्वाप्य^{१३} सागरार्थं
पश्यति ।)

[दोहा]--

जखो आवहु बलव-सुता, अतिदिन पास हमार ।
तखो हमे छोड़िअ तोहि पुनः नहि तखो नहि परकार ॥११॥
मने अवधारल राधिका, इहे उचित एहि काल ।
भजनहि पखो परिनाम भल, चुप अए रहू ततकाल ॥१२॥

श्रीकृष्णः - बलव-सुते ! मीन स्वीकारमेव, तथापि स्फुटमावेशयेति ।

मन्दा - अवलाह । ननन्दा - ननदि । परिहृष - छोड़ू । कुरीती - अनुचित काज ।
हठे - बल सँ । विरीती - प्रेम । भजनहि - गओले सँ ।

(श्रीकृष्ण बलजोरी गोपपुत्री राधाक सम्भोग कयलनि । राधा उद्देग सँ
मुँह पर तोर भरलि नहक अगिला भाग सँ मोंगि पर किछु लिखेत छथि ।)
श्रीकृष्ण - गोपपुत्री ! कियेक विधिअ होइत छी ? (उठाव अपराधी जकाँ
देखैत छथि ।)

[दोहा]--

बलव-सुता - गोपपुत्री, राधा । परकार - उपाय ॥११॥

अवधारल - विचारल । भजनहि पखो - स्वीकारे कयला सँ । ततकाल

- ओहिसमय ॥१२॥

१६ - करति वासु । १७ - नेत्राम्बुता मुखाम्पूरित - क. स. १. १७ - उत्वाप्य ।

राधिका -

(गीतेन) - ११

पुनः^{१४} पुनः नन्दकुमार ना ।
अनाइति न रह विचार ना ॥
किछु न देखिअ परकार ना ।
ते हमे करिअ अंगिकार ना ॥

एहि पथ मोर गतागत ना ।
सबे दिन तोह सपुपागत ना ॥
आये न दोसर मन मोर ना ।
अपय करिअ हरि तोर ना ॥

निरघन पाओल हेम ना ।
दिङ्ग भेल प्रेमक नेम ना ॥
नन्दीपति हरि हेरि ना ।
रमनि हुनलि मुख फेरि ना ॥

श्रीकृष्णः - प्रिये ! वासि ?

(राधिका तपन-तनया-पारमार्थ्य पुनः श्वासं परित्यजति ।
श्रीकृष्णः हारं ददाति । राधिका करकमलैनाऽऽरोपयति कण्ठे ।)
(इति निष्कान्ती^{१५})

॥ (प्रस्तावना बलव-सुता-गृहगमनस्य) ॥

श्रीकृष्ण - गोपपुत्री ! चुप भेनाइ स्वीकारे धिक, तेया साफ कहू ।
राधिका -

(गीतक द्वारा) - ११

नन्दकुमार - कृष्ण । अनाइति - प्रतिकार नहि रहला पर । अंगिकार -
स्वीकार । गतागत - अवरजात । सपुपागत - आगमन । हेम - सोना । दिङ्ग
- स्थिर । नेम - निश्चय । रमनि - सुन्दरी ।
श्रीकृष्ण - प्रिये ! जाइत छी ?

(राधा यमुनाक पार आवि फेन श्वात छोड़ैत छथि । श्रीकृष्ण हार दैत
छथि । राधा करकमल सँ कण्ठमे धारण करैत छथि ।)
(हुहुक प्रस्थान)

॥ गोपपुत्री राधिकाक घर अवकाक प्रस्तावना समाप्त ॥

१६ - पुनः पुनः । १७ - निष्कान्ती ।

(ततः श्लोकः) -

सर्वं च भवनं राधा सम्प्राप्तं गोमर्षः सह ।
लोकेषु भौतिककलेशः संचरतिवेदितः पुनः ॥४॥

(नती महोप्रस्तापेन चीत्कारं कृत्वा चतुर्दिशं पश्यति । तत्क्षणं विहसति,
रोदति । इत्येवं दर्शनानन्तरं सर्वे साधन्यं पश्यन्ति । ततो गो-महिषी-निवास-
स्थलादि सम्प्राप्तो बृषभानुः ॥)

बृषभानुः - (श्लोकेन) -

अग्निभयं राजभयं भयं चौरभयं किं न वा ।
अथवा दुःखितः कोऽपि कोऽपि रुष्टो गृहादपि गतः

कलावती - अजउत्त ! शोको, को ऊषो ? [आर्यपुत्र ! शोकः, कः पुनः ?]

बृषभानुः - (देहा) -

धनि ! तुअ वदन मलीन देखि, नाना शस्त्रा बाढ़ ।
दुलहनि बेटी राधिका, की तहिकी दुख गाढ़ ॥५॥

(तखन श्लोक) -

सूक्तवत राधा गाय मधहिक संग गाम पत्र पट्टे चलि (तात्पर्यं जे गायो
सभ आयलि ओ ताहीकाल राधा सेहो आयलि) । लोक सभ मे जोर ही भौतिक
कष्ट (भूत लागव) के एकट कयलनि ॥४॥

(तखन बड़ जोर जोर ही चिचिआय चारुभरं तकैत छथि । लगले हंसैत
छथि कनैत छथि । तखन गाय-मधहिक भरि ही बृषभानु (राधाक पिता)
पहुँचलाह ।)

बृषभानु - (श्लोक सौ) आगि लगवाक भय थिक, कि राजाक शासनक भय
थिक कि चोरक भय थिक ? अथवा केओ दुखी अछि कि केओ घर
सँ रुसल अछि ? ॥५॥

कलावती - आर्यपुत्र ! शोक थिक, आर की रहत ?

बृषभानु - धनि - श्रीमती ! नाना शंका - अनेक तरहक सन्देह ॥

६१ - संशुच्यं राधे । ६२ - कला ।

कलावती - (समदग्दवाक्षरं गीतैः) - १२

मुनु मुनु पिआ, मुनु मुनु पिआ ।

आवे न जिउति मोर दुलहनि पिआ ॥

आवे की भवनपति हमरा ६३ पुछू ।

बेटीक दशा देखल ६४ अछि किछु ॥

जे मोर दुलहि ६५ लगाओल भूत ।

मजो मुनु तकर मरओ जेठ ६६ पुत ॥

एतखने ककरहु न रह उकाट ।

बापल ६७ ए थिक इहे ६८ मन जाट ॥

अरिजन ६९ परिजन आनह लेआए ।

समरधि बेटी हाथ सजो जाए ॥

नदीपति कबि कह परमान ।

अपनहि ई दुख छुटत ७० निदान ।

बृषभानुः - (सक्रोधं राधा निकटं गत्वा अन्तरमिदमुक्तवान् ७१ राधिका प्रति)
मुने ! कीदृशी रीतिरियम् ?

राधिका - (ओघेन सम्भीत्य तातमुखं बध्ने ७२ महोप्रस्तापेन चीत्कारं कृत्वा
भूमौ निपतति ।)

कलावती - (दुःख सँ अस्पष्ट अक्षर से गीतक द्वारा) - १३

पिआ - बेटी । भवनपति - गृहपति । दुलहि - बेटी के । मजो - हमरा

सँ । उकाट - उपद्रव करवाक घर । बापल - स्थापित कयल, कुत्रिम,

ढाँचा कयल । जाट - दग्ध । अरिजन परिजन - सकल परिवार के ।

बृषभानु - (क्रोधपूर्वक राधाक लग जाय तखन ई कहलनि राधाक प्रति) पुत्री !
ई केहन व्यवहार थिक ?

राधिका (दूत आगि खोलि पिताक मुँह देखि अत्यन्त जोर जोर सँ चीत्कार
कय भूमि पर खसेत छथि ।)

६३ हमरा । ६४ देखि पिआ । ६५ दुलहि के । ६६ जेठ । ६७ बापल । ६८
ई मन । ६९ अरिजन परिजन । ७० छुट । ७१ मुने । ७२ - ० ० ०
(एतय सँ अधिम बोधा तकक अन्तक) ।

कलावती - हा सुए ! गदासि गदासि । [हा सुते ! गदासि गदासि ॥] (सतः करेण दक्षः स्थलं ताडयति) ।

(दोहा) -

की कहति राधा आएकहु, बलै कर प्रेम-प्रसंग ।
तावत ते जदुनाय को, प्राण-ने बहल छल चङ्ग ॥१४॥
कोनटा लामल कुण कह, देखि देखि राधा-रङ्ग ।
जे अछि तमु मने काज मोर, ते एत करइछ भङ्ग ॥१५॥

(७४करकाँ सजो सुनि हरि लखति, करि किछ तात्त्विक भेस ।
दोसर हमर सन के एखन, एहि अर्थक उपदेश) ॥१६॥

(सतः ७५ प्रविशति श्रीकृष्णः)

श्रीकृष्णः ७६ - (निरीक्ष्य) इयमेव कलावतीनां रीतिः ७७ - (व्रतः श्लोकेन) -
पुसां किञ्च गुणेन म मय - महामन्त्रस्य पाठेन कि
कि नानारस-नृत्य-गीत-कविताभाषाभियोगेन च ।
नाइह कोऽपि न विक्षितं किमपि ७८ वा नूनं मया ज्ञापते
सर्वं सम्पत्तिं विस्मृतं सुखदना ७९ चेष्टा-चमत्कारतः ८० ॥१६॥

कलावती - हाय पुत्री ! चल गेलै, चल गेलै ॥ (नखन हाथसँ लाती पिटै लछि ।)
वे-से (राधा) । जदुनाय-कुण । प्राण बहल-अतिशय प्रेम
करैत । चङ्ग-बाकुल ॥१४॥

राधा - रङ्ग-राधाक दशा वा अनुराग । तमु-राधाक । भङ्ग-भंगल,
ताल ॥१५॥

हर-कुण । तात्त्विक भेस-कुण तात्त्विक भेस पर भाइवाक छिल
जयदाक विचार पयल ॥१६॥

(तखन श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण (देखि) इथेह चतुरतायिकाक चालि यिक । (नखन श्लोक सँ) -
पुण्यसम्पन्न गुण सौ की कामदेवक महान् मन्त्रक पाठे सौ की अनेक रस,
नौच गीत कविता आ भावक प्रयोगहि सौ की हाथत ! ने हम केओ (विशिष्ट
व्यक्ति) छी आ ने निछु शिखा लेने छी, परन्तु हम सब किछु जयैत छी । से सब
एखन एहि सुन्दरीक चेष्टाक चमत्कार सँ बिसरि गेलहु ॥१६॥

७३- प्राङ् चक्षुः ७४ - (दू पंक्तीक अभाव) - क । ७५ - (अष्टम श्लोकक
बाद द्वि पंक्ती अछि) - क स । ७६ - - क स । ७७- कलावती निरीक्ष्य ।
७८- कसवरा । ७९- को । ८०- ता.क; ते-स । (एकर भाव-“इति निष्का तः” छैक ।

(श्रीराधिका लोचन उन्मील्य ८१ पश्यति । श्रीकृष्णो ८२ गत्वा सकोपं
पश्यति । सा चौरकारं कृत्वा मुञ्छति ।)

कलावती - कसण ! कसण ॥ परस-८३, परस, पुअ वि पियसही मह-८४ सुआ
८५ जीअणं पइहरइ । [कुण ! कुण ! पश्य, पश्य, तवाऽपि
प्रियसखी मम सत्ता जीवनं परिहरति ।]

श्रीकृष्णः - (सहर्षम् उत्थाय) राधिके ८६ ! चेतन्यं कुरु ।

वृषभानुः - (श्लोकेन) -

कि नाम तव रे प्रेत ! पश्य वा कि प्रयोजनम् ।

सखरं काननं गच्छ विहाय मम पुत्रिकाम् ॥८७॥

श्रीराधा ८८ - ब्रह्मविद्याचोऽहम् । उज्ज्वलोऽहम् । अले ८९ अले वलइह । मयि
पहलं मा कुलु यास्यामि । (अरे अरे वल्लभ ! मयि प्रहारं मा
कुरु, यास्यामि ।)

(सतो घ्राण्योपचारेण अधवा मन्वादिनाऽजीव ९० क्लेशयति ।
राधिका ससंश ९० लज्जया अधोमुखं पश्यति ।)

(श्रीराधिका आँसु लोलि तर्कन छथि । श्रीकृष्ण जाय कोधपूर्वक देखैत
छथि । राधा चौरकार कय मूर्च्छित होइत छथि ।)

कलावती - कुण, कुण ! देख, देख, अहूँक प्रिय सखी हमर बेटी जीवन-
त्याग करैत अछि ।

श्रीकृष्ण (प्रसन्न भय छति) राधा ! होश मे आव ।

वृषभानुः - (श्लोक द्वारा) -

रे प्रेत ! मोहर की नाम विकीर ? कहर पडाओल छै ?

कोन काज छीक ? हमरा बेटी केँ छोडि भेटवय बन जो ॥९१॥

श्रीराधा - हम ब्रह्मराक्षस भिहूँ । हम उज्ज्वल-उज्ज्वल, पराकमी) छी । अरे
अरे मोअर ! हमरा पर पहार जग करह । जायव ।

८१ - - क स । ८२- श्रीकृष्णं वृद्ध्वा क । ८३- पश्य पश्य । ८४- सह ।

८५- जि उण येहवैनी । ८६- का । ८७- ब्रह्मविद्या उज्ज्वलो ब्रह्मोऽहम् - क ।

८८- अहो वल्लभ हृत्प्रहार मा कुरु । ८९- अ क्लेशं अभिलेखकः । ९०- ससंश ।

कलावती- ११ मुणु ! कथं तुअ इरिणी अवस्था ? १२ विशेषेण मां कथय । [सुते
कथं तव ईदृशी अवस्था ? विशेषेण मां कथय ।]

राधिका- (गीतेन कथयति)- १३

मुनि उति भवन छाडलि हम छीके ।

तकर उचित १३ फल पाओल नीके ।

सभे सखि आउलि १४ हमहि पछुआऊ

एकसरि हमे धनि वध भोतिआऊ ॥

भूतहि पाकड़ि तर जवेइए पगु देला ।

तेहि खने १५ सज्जो मोहि कीदहु भेला ॥

कोएल चिकुर, फारल हम बीरे ।

निज मख विकुटल अपन शरीरे ॥

अल छल मरण होइत वर आजै ।

के बी कहत तकर होअ लाजै ॥

न-वीपति जज्जो मोर हित होई ।

१६ जे जनि आनलि से १७ राखिअ मोई ॥

(तखन गर्मअ उपचार सौ वा मग्ग आदि सौ अत्यन्त कष्ट

देत छथिन । राधा होय से आवि लाजै नीचां तकेत छथि ।)

कलावती- पुत्री ! कोना लोहर एहन दशा भेलहु ? नीजजका हमरा कहहु ।

राधिका- (गीतक द्वारा कहैत छथि)- [गीत सं० १३]

भवन = घर । छीके = ककरहु छिकला पर । नीके = पर्याप्त ।

धनि = सुवर्ती । पय = बाट । भूतहि पाकड़ि = जे पाकड़िक गाछ भूताहि
अछि । पगु = पाएर । कीदहु = किशन, अज्ञात अथवा । चिकुर = केश । बीरे =

वस्त्र । निज मख = अपन नहु सौ । विकुटल = तछेछिके धयल । जनि = नारी ।
मोई = मुप्त ।

११-पु । १२-सो कि-क; मा विशेषी माकय-ला । १३-० । १४-आऊ हम
पछुआऊ । १५-जे-क; पय-ख । १६-खने । १७-जे आनल । १८-राखिअ ।

(दोहा ६६)--

बृणभानु आदि गोप सकल महिमा कृष्णक देखि ।

शीश नसाओल सबहि अन्त, भेष अपूरव देखि ॥१७॥

... ..

क्षणमे सबहु १०० पयान कल जस्त छल गोप गोधार ॥१८॥

× ×

× ×

× ×

जति उत्कण्ठा मिलन लाइ, विकल राधिका आण ।

कतएक दिअस बिलाएकहु, देखि तए कएल पयान ॥१९॥

प्रातहरी बैसल अछल, यदुपति समुना तीर ।

देखि दूरहि सी राधिका, पुलकित भेल सरीर ॥२०॥

(अथ संवदेहोद्भावना गीतम्--१४)

जगमग जेति अधिक भलभांती ।

कतए दिअस राशि ऐसन कांती ॥

अनल शिखा सेहो मन नहि आवे ।

पवन परसि शीतलता लखे ॥

जज्जो कह ई पुनि वामिनि रेहा ।

अधिर होइत शर्मा तकर सन्देहा ॥

दोहा--

महिमा-महन्व । भेष अपूरव-अद्भुत रूप ॥१७॥ १८॥

उत्कण्ठा-समुक्ततापूर्ण इच्छा । पयान-पावना ॥१९॥

यदुपति-कृष्ण । पुलकित-रोमाञ्चित, आतन्वित ॥२०॥

[एकर बाद सन्देह होयवाक गीत - १४]

दिअस-दिन से । राशि ऐसन-अत्यन्त समान । कांती-कान्ति,
प्रकाश । अनल शिखा-आनिक धधरा । पवन परसि-हवा सी स्पर्शक ।

१०---(पुन दोहाक अभाव) । क । १०० - ई । १-हाय । २-धल ।
३-कुवेहो । ४-योनि जविक भेल । ५-कतेक ।

यल जलरुह नहि ई दिङ जानी ।
ते सरसिज न हलिय मने मानी ॥

नन्दीपति कह की कहव आने ।
राधा पजो धिकि इह परमाने ॥

जखो मोहि पुछिय यथारथ ।
आये हमे भेलहुं कुतारथ ॥

गीतार्थेन श्लोकः--

इयं दिवस-सुप्रभा भवति नैव चाद्री कला
न वाऽपि कमलावली विचलिता च नम्रानना ।
हिमाऽपि हि चिरस्थिताऽनलशिखा १० न सोदामिनी
तथा भवति राधिका कुकलयाऽन्विताऽऽस्याम्बुजा ११ गच्छति ॥

श्रीकृष्णः प्रिये ! आनन्दसाम् ॥

[ततो गीतेन--१५]

आज सुदिन दिन भेल मोर १० ।
अनेक दिवसे दरसन तोर ११ ॥

दामिनिरेहा - विजलीका रेखा । अधिर - चञ्चल । यल - पृथ्वी पर । जल-
रुह - कमल । दिङ् - निश्चय । सरसिज - कमल । हलिय - प्रकटित करैत छी ।

गीतक अर्थक द्वारा श्लोक -

दिन मे प्रकाशित होइत ई चन्द्रमाक कला नहि भाय सकैल, चलेत भूडी
भुकाओने कमलो नहि भाय सकैल, शीतल ओ देरी घरि स्थिर रहने ने अग्नि
शिखा आ ने विजलीका विक । तखन ई एहि पृथ्वी पर कमलमुखी राधिका
भय सकैल ॥८॥

श्रीकृष्ण - प्रिये आज ।

६ - जी १७ - अति धीर होइत ते । ८ - ते सरसिज । ९ - लग्नानना ।

१० - आऽपि । ११ - आस्याम्बुजा । १२ - मोर । १३ - भेल तोर ।

एखनुक हवम हमर मन ।
न भेल, न होएत काहु मन ॥
राशिमुक्ति ! करहु समुख मुख ।
तोहें हमे प्रेम पहिल मुख ॥
तोहे मोरि १४ प्रेम परसमनि ।
उठि कर धरहु हमर धनि १५ ॥

होअओ हृदय मोहि परतिति १६ ।
वेकत करहु अनुभव रिति १७ ॥

नन्दीपति नहि निरबहु ।
निजो मुखे नारि कतहु कह ॥

(ततः पूर्वकपेय सम्भोग कृतमेव ।)

श्रीराधिका - (विहस्य) अहो जगत् ! तव नियमस्य निर्वाह !
श्रीकृष्णः - प्रिये ! १६ कथमतीक्ष्णस्त्वेन मां सन्ताडयसि ?
बोहा -

ओ रिति माधव-राधिका, कए किरिडा १८ कत दीन ।
दिने दिने बाढ़लि कीति अति, एकओ न अपन अधीन ॥२१॥

(तखन गीतसँ) - १५

यथारथ - वास्तव मे । कुतारथ - अन्य । समुख मुख - मुँह सोझी । पर-
समनि - स्पर्शमणि । कर - हाथ । परतिति - प्रतीति, अनुभव । वेकत - व्यक्त,
प्रकट । निरबहु - निमहुतहु । निजो मुखे - अपना मुँहे ।

(तखन पहिलके जका सम्भोग कथलनि ।)

श्रीराधिका - (हँसि) अहा ! अहाँक एह नियमक निर्वाह भेल !
श्रीकृष्ण - प्रिये ! कियेक भोग तहआरि सँ हमरा कटैत छी ?
बोहा -

ओ रिति एह प्रकारे । किरिडा - फीडा, विहार । दीन - दिन समया ॥२१॥
१४ - मोर । १५ - धनि । १६ - तोही । १७ - रीती । १८ - अहो तव । १९ -
कथं भतिष्ठत, २० - कड़ा ।

नामहुँ कर समनामसन, परिहरि लोकक लाज ।
 नर-नारी जानल सबहु, दुहु का सुविद समाज ॥२३॥
 राधाजी तेजल अपन घर ११, हरि तेजल घरद्वार ।
 सह भोजन, सह सयन पुनु, सहै सबसर सञ्चार ॥२४॥
 + + +
 गोपसखा १२ सङ्ग एक दिन, नेजोता गोविन्द गेल ।
 धनि आनन १३ दिन खेल देखि, दिवसक शशि सम भेल ॥२५॥
 लीखि पठाओल ओतए सजो, दिन दस अछि अटकाओ ।
 प्रेम परिच्छा बुझए लाइ, किछु करै छवि ताओ ॥२६॥

(सतः प्रविशति पत्रहारकः, पत्रं ददाति ।)

राधिका (पत्र पढ़ी देवा पत्रावलोकनान्तरं १४ सखी प्रति) सहि १५ विमल-
 बिल ! मह पुरुष-मक्षणस्य प्रसादेन किं किं न भविस्सति, एवं
 किं ? [सखि ? विशालाक्षि ! सम पुरुष-मदनस्य प्रसादेन किं किं न
 भविष्यति, एतत् किम् ?]

परिहरि—छोड़ि । सुविद समाज—घनिष्ठ सम्पर्क ॥२३॥ तेजल—
 छोड़ल ॥

सह=सङ्गहि । सयन=सुतनाई । सबसर=सभसाम । सञ्चार—
 समन ॥२४॥

नेजोता=नीति पुरय । गोविन्द=कृष्ण । धनि आनन=राधाक मुहँ ।
 दिनशेष=सोम । दिवसक शशि=विनुक चन्द्रमा ॥२५॥

अटकाओ=सकबाक । परिच्छा=आँच ॥२६॥

(तखन कीठी अननिहार प्रवेश करैत छवि । पत्र दैत छवि ।)

राधिका (पत्र लय देखि सखी केँ) सखी विशालाक्षी ! हमरा कामदेव
 सनक सुन्दर पुरुष (श्रीकृष्ण) क कृपा सौ की की नहि होयत, ई की
 भेल अछि ?

२१-सखल - क । २२-जखा । २३-जान न दिन खेल बिलि । २४-नन्तरमिद-
 मुक्त सखी-क ल । २५-सही विशालाक्षी पुरुषक्षणस्यप्रसादेन किं किं न
 भविस्सति एवं किं ।

(दोहा) -

तखनुक मोर मन तेहन छल, न गुनल निज-कुल हानि ।
 धाक उपर कए होअ नहि तखनुकि जोहनि गलानि ॥२७॥
 पहिला बएसक पहिल रस, पहिल संग सहवास ।
 शिव शिव ! से २६ सवे दूरि गेल, ठाम रहल उपहास ॥२८॥
 उजर दसन उजर वसन, अभरण एकओ न अङ्ग ।
 कामिनि काँ किछु साठ नहि, बड़दते विरह तङ्ग ॥२९॥
 घर-बाहर कर राधिका, वरिस नजोन जलधार ।
 पुन पुन पध हेरि हेरि हिय, निन्दए नन्दकुमार ॥३०॥

(सतो गीतेन - १६)

कोने मोर २० नारि जनम देख, कि २१ ककर लेल,
 पहिलहि बएस विरह भेल ॥
 शिव शिव शाल मरम मोर, कि जीवन जोर,
 आवे जनि होएत जियहुँ ओर ॥
 मुनु मुनु मदन पुरुष-मनि ! कि हमरि सनि,
 जजो तोहँ देखाह अपनि धनि ॥

(दोहा)-

न गुनल न नहि विचारल । निज कुल हानि—अपन कुलक हानि ।
 जोहनि गलानि—एहन दुःख ॥२७॥ बएसक—अवस्थाक । शिवशिव
 —हाय हाय ! ॥२८॥ वसन—वस्त्र । अभरण—
 पहना । साठ—सजावट ॥२९॥ नजोन—आँखि । पध हेरि हेरि—ब्राह्म
 देखि देखि, हिय—हृदय मे । निन्दए नन्दकुमार—कृष्णक निन्दा करय ॥३०॥

(तखन गीतसँ)- १६

कोने के (विधाता) । नारि—स्त्रीक लवमे । ककर लेल—ककश हेतु । शाल
 १६—से सवे दूरि । २७-मोर ओरे नारि । २८-की कर ।

तजो तंहे^१ बुझह विरह^२ मुख, हेरि मसु मुख
पर जिव बघइते^३ बड़ मुख ॥
एक बेरि भयम भेछाह तोहे^४, कि एहि कोहे^५,
विरह विकल विरहिनि श्रोहे^६ ॥
रसमय नन्दीपति कह, बड़ अनरह,
मुपुख सेवि जदि दुख सह^७ ॥

(इति सूच्छति । ततः प्रविशति विशालाक्षी ।)

विशालाक्षी- सहि बल्लभमु^८ ! समस्ससिहि, समस्ससिहि, [सखि
बल्लभमुते ! समावसिहि, समावसिहि ।]

राधिका— (ससंज^९ लोचन उन्मील्य पुरतोऽवलोक्य गीतेन)-१०
सजल सघन घन देखि देखि ।
कोने परि प्राण रहत सखि ॥

शरदक शशि निशि कैसनि ।
एहि तह अधिक की ऐसनि ॥

जत जत छल मोहि बीतल ।
से सभे दए दुख बीतल ॥

८-वेवेत अछि । परम = मर्मस्थल । जिवहुं ओर = प्राणक अन्त । मदन = काम-
देव । पुषप-मनि = पुषप से थोड़ा । धनि = स्त्री । हेरि मसु मुख = हमर मुँह
देखि । पर जिव = दोसराक जीवन के । बघइते = हत्या करैत । तोहे = काम-
देव । कोहे = कोधे । श्रोहे = डाह सी । अनरह = अनर्थ ॥

(ई कहि मुच्छि होइत छथि । तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि)

विशालाक्षी— सखी बल्लभ-पुत्री । चेतना मे आउ, चेतना मे आउ ।

राधिका— (होशमे आवि आँखि ताकि आगू देखि गीत सी)— १०

२९-सह-क । ३०-मुये क. ख । ३१-ससंजेन ।

परम बेरि पहु परतछ^{११} ।

अंजलि^{१२} जलहुं सन्देह अछ ॥

अवधि-दिवस धरि धनि सह^{१३} ।

कामिनि हृदय हाल^{१४} कह ॥

^{१५}नन्दीपति कह^{१६} मन गुनि^{१७} ।

अपनहि हरि अओताह^{१८} पुनि ॥

(तर्प्य राधिका-विलापवाक्यं समागता कामाक्षी द्वितीया सखी श्री-
कृष्ण सह ।)

कामाक्षी- हि ! सम्पत्तो बल्लभ-सुओ^{१९} । [मनि! सम्प्राप्तो बल्लभ-मुता ।]

(राधिका ससंज लोचने उन्मील्य श्रीकृष्णं दृष्ट्वा भूमी निपतति ।)

श्रीकृष्ण- हा धिक् ॥ सन्देहे पातिता^{२०} मया । (इति उत्थाप्य गीतेन कथं
यति ।)

(अथ गीतम्)--१८

सुन्दरि! की बोलि बोचब^{२१} तोही ।

बड़ कए सुन अछइत दुख जागिरल, तकर^{२२} उचित फल मोही^{२३} ॥

सजल = जल भरल । सघन घन = गाड़ मेघ । शशि = चन्द्रमा । निशि =
राति मे कैसन = केहन । एहि तह एहि सी । बेरि = शत्रु । पहु = स्वामी ।
परतछ = प्रत्यक्ष । अंजलि = आजुर मे ।

(राधाक वचन सुनि दोसर सखी कामाक्षी कृष्णक संग आवलि ।)

कामाक्षी- सखी ! पहु चलाह गोपपुत्र श्रीकृष्ण ।

(राधा हीसमे आवि आँखि ताकि श्रीकृष्णके देखि भूमि पर खसैत छथि ।)

श्रीकृष्ण- हाय हाय । सन्देह मे दय देल हम हिनका । (ऊठि गीतक द्वारा
कहैत छथि ।)

२९-तल । ३०-अंजलि । ३१-सह । ३२-हरि-क. ख । ३३-० (वृ-
पातोका अभाव) -क । ३४-कथि कह । ३५-गुनी । ३६-ओताह । ३७-०
-क. ख । ३८-मुये । ३९-पातिताम् । ४०-बोचब मझे तोही ४१-० ।
४२-मेही ।

हमारे बिगड़े तोहरे कियहुँ ४६ करे छह, ४७ ते लिखि लिखनि पडाऊ ४८।
मनाएक लाइ ४९ मोहि तिरिबध लगइत, भागे भलहि भल आऊ ॥
काहि कहव दुख के भविआएत, मोरि भेलि ५० बाहुन छाडी ।
हरि हरि ॥ हरि हमे की कएल निज करे, कण्ठ लगाओल काती ॥
५१ एक रे अपनि छवि तोहरे सनि पेअसि, ता सजो कएल बेआजे ।
५२ कसलो कनक बहम बह के देख, विक ५३ धिक विक मोर काजे ॥
पड़ल हमर अपराध कमलमुखि ! तोहरे किए तेजह पराने ।
पड़लो पुरुष मुख होअ कुविचस, ई ५४ जग के नहि आने ॥
नन्दोपनि भन, बुझल तोहर मन, एतेक करहु कबिलाई ।
जे जिबे आवे ओहून नहि करबे, बस लेह सपस कराई ॥

राधिका—(ससंग श्रीकृष्णमुखमवलोक्य सख्या ५५ सह निष्क्रान्ता सखीगृहं प्रति ।)

श्रीकृष्ण—हा प्रिये ! परिहज्यैव गतासि । सखि ५६ विशालाक्षि ! त्वं याहि प्रियानिकटं समीपकाराय ।

गीत सं०--१८

बोगव = बोंसव । अगिरल = अंगीकार कयल, स्वीकारल । लिखनि =
लिखी । मनाएक = मनपवाक हेतु । तिरिबध = स्वीवधक पाप । बाहुन =
पाथर । हरि हरि = हाय हाय ! हरि हमे = हम श्रीकृष्ण । निजकरे = अपना
हाथे । काती = खड्ग । पेअसि = प्रेमिका । बेआजे = छल, बञ्चना । कसलो
कनक = खान चढ़ओलो सोनाके । दहन बह = आगि ने जरय । मुख = मुख ।
राधिका—(बितना मे आवि श्रीकृष्णक मुँह देखि सखीक संग सखीक घर दिस
विदा भय गेलीहि ।)

श्रीकृष्ण - हा प्रिये ! छोड़िये कय बलि गेलहुँ । सखी ! विशालाक्षी ! तौ जह
प्रियाक समीप हमर उपकारक लेल ।

४६ - कीबहुँ । ४७ - ते । ४८ - ऊ । ४९ - लाए । ५० - भेल । ५१ - एके ।

५२ - कएलो । ५३ - अधिक अधिक धिक काजे = क । ५४ - जग जग ।

५५ - व सह । ५६ - ० ।

विशालाक्षी—(निष्क्रान्ता ।)

श्रीकृष्ण—(इलोकेन)

मरणं यौवनारम्भे धनारम्भे धनशक्तिः ।

प्रेमारम्भे च विदलेषो भाव्यधूमयस्य लक्षणम् ॥६॥

(ततो गीतेन १०)-- १६

के जान कजोन दोने रहसि नेलि रामा ।

अपनहि आज वेकत भेलि वामा ५७ ॥६॥

(एतस्मिन्नर्थे श्लोकः) —

नो जानामि कथं कृता राधिका रमणी मम ।

स्वयञ्च ५८ वामशब्दाधेम् अर्थात् ५९ ऽऽवेदितं पुनः ॥१०॥

तखओ तकर हमे करिअ घेआने ।

जकरे बिरहे मोर विकल पराने ॥११॥

(अस्यार्थेन श्लोकः) —

जानामि तु न पुरेव ६० रीति न ६१ वाऽऽगमिष्यत्यनुता प्रिया सा ।

ध्या ६२ तस्याः ६३ कियते तथापि महाऽऽकुलोऽहं विरहेण वस्या ॥११॥

विशालाक्षी - (बलि नेलि ।)

श्रीकृष्ण - (श्लोकक द्वारा) यौवनक आरम्भ मे मुख, धनक आरम्भ मे धन-
हिक नाश ओ प्रेमक आरम्भ मे विधोष भेनाह अभागलक लक्षण
धिक ॥६॥

(तखन गीतक द्वारा)-१६

कजोन मे कोन । रामा मे सुन्दरी । वेकत मे व्यक्त प्रकट । वामा मे सुन्दरी,
विपरीत भेनिहारि ॥६॥

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

ने जायि जे हमर सुन्दरी राधिका कियेक रहि रहलीहि । वामा (सुन्दरी)
धनक अर्थ के (विपरीत भेनाह) अर्थात् स्वयं आवेदित कयलनि अछि ॥१०॥

तकर मेताहि प्रियाक । घेआने मे ध्यान, मरण ॥११॥

(एकर अर्थ हो श्लोक) — ई निश्चय जनक छी जे हिलुक रीति एखन नहि अछि,
आ ने ओ प्रिया एखन अपवे करतीह । तयो हुनक ध्यान करैत छी,
जनिक बिरह हो हम महान् विकल छी ॥११॥

१० - गीतम् - क १० - वामा क । ११ - वामा । ६० - रावेदितं । ६१ - पुरेव
पुरेव क ल । ६२ - राम निष्यमुता । ६३ - हवयेत्यधु ।

नयन काजर नहि, मुख नहि पाने।

निजा घनि ऐसन देखु पचवाने ॥III॥

(अस्यार्थेन श्लोकः) -

लोचने कज्जलं नास्ति, नास्ति^{१४} ताम्बूलमानने।

ईदृशं सुवर्ण-वस्त्रं, कामः पश्यतु सम्पत्तम् ॥१२॥

^{१५}नखे लिखि लिखि कह तमु निरमाने।

^{१६}चरण परल ^{१७}छिअ ऐसन नेजाने ॥IV॥

अथावाऽऽलिख्य नखाग्रकेण पुरतः सा साम्प्रतं दृश्यते

कटां मानवतीं मुमुक्षुमधुना तस्याः^{१८} प्रियाया पुनः ।

सोऽहं तच्चरणाम्बुजे निपतितो ह्यम ! किं मे भ्रमो^{१९}

विक्षेपोक्तिरियं प्रसीलितजनेनाऽऽलोकिता किं पुनः ॥१३॥

रमनि-विरह तह दुख नहि भारी।

कखनि मिलति मोहि प्राणविआरी ॥VI॥

निजा घनि = अपन प्रियाके। पचवाने = कामदेव ॥III॥

(एहि पदक अर्थ सँ गीत) -

जकरा आँखि में काजर नहि ओ मुँह में पान नहि छैक, एहत अपन परमीक मुँह एखत कामदेव देखयू। (कामक प्रति आक्रोश थिक।) ॥१२॥

नखे लिखि = कह सँ चित्र रूपे लिखि कय। तमु = प्रियाक। निरमाने = चित्ररचना। ऐसन नेजाने = एहत बुद्धि कयल ॥IV॥

(एहि पदक अर्थ सँ गीत) -

अथान कम आपू में नहक अप्रभाग सँ लीखि (चित्र रनाय) हुनका ऐसन देखि रहल छी। तखन तमसायल मान करैत ओहि प्रियाक मूर्ति के पुनः देखि हम हुनक चरण कमल पर खसि पड़लहुँ। ई की हमरा भ्रम भय गेल। ई हमर विक्षिप्तावस्थाक उक्ति थिक, आँखि मुनल व्यक्तिक द्वारा की ओ देखलि गेल? ॥१३॥

१४-० । १५-खने। १६-घरन। १७-अछि। (अस्यार्थेन श्लोकः)

१८-तस्याप्रियाया। १९-रसा। २०-प्रसीलित। २१-प्राणा प्राणानुश्रवो।

(अस्यार्थेन श्लोकः) -

विरलेपादपि दुस्तहं शिव शिव !! ^{२२}प्रेमाधितानामिदं

दुःखं दोषतरं यथा किल तथा ताऽस्य जगन्मण्डले।

इत्थं पद्ममुखी विना यम पुनः ^{२३}प्राणप्रयाणोद्यमो

नो जानामि समानामिष्यति कदा प्राणप्रिया राधिका ॥१४॥

भनइ^{२४} नन्दीपति कवि कल्यानिधि।

रसलि रमनि मिलि सेहो^{२५} बड़ सिधि ॥VII॥

(^{२६}अस्यार्थेन श्लोकः) -

यस्यापि वनिता लटा समापच्छति ^{२७}सा यथा।

तर्कयामि तदा तस्य सा वैवं सिद्धिरद्भुता ॥१५॥

(ततः प्रविवक्षति रात्रिकया^{२८} सह विशालाक्षी, राधिका^{२९}-निवास-
गृहद्वारे, श्रीलक्ष्मणचारव्याप्रा। कामाक्षी च।)

विशालाक्षी - सहि ! समाम्नासिहि, वगारससिहि। [त्वि ! समारक्षसिहि,
रमनि-विरह तह = प्रियाक विरह सँ ॥VI॥

एहि पदक अर्थ सँ श्लोक -

हाय हाय !! विद्योगहु सँ अधिक असहनीय ई (प्रियाक कसब) दुःख प्रेमीक हेतु जेहन पैघ होइछ, तेहन संसार भरि में दोसर दुःख नहि अछि। एहि तरहें कमलमुखीक विना हम प्राणत्यागक उद्योग करैत छी। ते जानि प्राणप्रिया राधिका कहिया बओनीहु ॥१४॥

कल्यानिधि = कवि नन्दीपतिक नाम। रमनि = सुन्दरी, प्रिया ॥VII॥

(एकर अर्थ सँ श्लोक) - जनिक प्रिया रसलो पर जखन आवि जाइत छथिन ते तर्क करैत छी जे तखन हुनक से एक अद्भुत सिद्धि भय जाइत छनि ॥१५॥

(तखन राधाक संग हुनक घरक द्वार लग विशालाक्षी, ओ ठंडा उपचारक हेतु स्वप्न कामाक्षी प्रवेश करैत छथि।)

विशालाक्षी - सहि ! वैवं बड़ वैवं छल।

२२-भन - क। २३-इहे। २४-X - स। २५-या स्वयम्।

२६-X। २७- (एतय सँ पुरा गीती विशालाक्षीक उक्तिक बाद अछि) - क ख।

विशालाक्षी— (विहस्य) सहि ! मो पुच्छसि ? तुमं पि किं जाणसि ?
[सखि ! मो पुच्छसि ? इवमपि किं न जानासि ?]

राधिका— (गीतेन -- २०

सीतल भेल^{१०} सभे आगि ।

साजनि ! एक जिव हमरहि लागि ॥

सबहु^{११} छाड़लि निअ रीति ।

साजनि ! आवे अधिक भेल भीति ॥

सजल नलिन दल सेज ।

साजनि ! वरए विरह बहुतेज ॥

चा दने चीगुन धाधि ।

साजनि ! वड़ मन्द विरह बेआधि ॥

आवे की करव परकार ।

साजनि ! हृदयक हार अंगार ॥

रखल नेह नुकाए ।

साजनि ! से आवे बिरहे^{१२} बेकताए ॥

नन्दीपति अन गीत ।

साजनि ! ^{१३}कुदिवसे^{१४} केअओ न हीत ॥

(इति मुच्छति ।)

समावसिहि !]

राधिका— सहि ! विशालाक्ष ! अस्य दुःखस्य किमोपायं जाणसि ? [सखि विशालाक्ष ! अस्य दुःखस्य किमोपायं जानासि ?]

राधिका— सखि विशालाक्ष ! एहि दुःखक कोन औपध जनैत छह ?

विशालाक्षी - (हँसि) सखि ! हमरा पुछैत छी ? की अहाँ नहि जनैत छी ?

राधिका— (गीतक द्वारा) — २०

सीतल = डंडो वस्तु । जिव = जीवनक । लागि = हेतु । भीति = भय । सजल = जल

सहित । नलिनदल = पुरहृत्तिक पातक ओछाओन । चा दने = चाननरी । धाधि =

७८ = सभे मे । ७९ = कुदिवसे ।

कामाक्षी—देवी ! समावससिहि, समावससिहि । [देवि ! समावससिहि, समावससिहि ।]

राधिका— (ससंभ्रमं नेपथ्याभिमुखमवलोक्य गीतेन) --- २१

कत उदवेग कहव तोहि, सजनि मे ।

आब उचित एह बिक मोहि ॥

^{१०}दरवरि प्राण उपेखिअ, सजनि मे ।

^{११}पुनु न पुरुष-मुह देखिअ ॥

घाड़ उपर कए^{१२} हे इते^{१३}, सजनि मे ।

^{१४}लाजे रहइ^{१५} हम ^{१६}मरइते^{१७} ॥

पिआक पेअसि भए आवे ^{१८}पुनु, सजनि मे ।

^{१९}केओ अहिमान करए जनु ॥

आवे हम ककर विलासिनि, सजनि मे !

केओ जनु बोल^{२०} बहुआसिनि ॥

नन्दीपति कह निरनय सजनि मे !

^{२१}कारिअ पुरुष कपटमय ॥

जवाला^{२२} बेआधि = धाधि । परकार = उपाय । हार अंगार = मोतीक मालाअङ्गोरा मन लगैछ । नेह = स्नेह । बेकताए = व्यक्त होइछ । कुदिवसे = अघलाह दिन भेला पर ॥ (ई कहि मुच्छित होइत छनि ।)

कामाक्षी—देवी ! धैर्यं धरु धैर्यं धरु ।

राधिका— (हड़बड़ाय नेपथ्य विस देखि गीतक द्वारा) --- २१

दरवरि = शीघ्र । उपेखिअ = उपेक्षा करिय, त्यागिअ । पेअसि = प्रेमसी, प्रेमिका । अहिमान = गर्व । बहुआसिनि = बहुप्री, बहु

कहि सम्बोधन । निरनय = निर्णय । कपटमय = वञ्चक, छली ।

२०- आब बध । २१- फेरि । २२- हेरइति । २३- लाजसे । २४- X ।

२५- मरइति । २६- आब पुनु । २७- बधो । २८- कह । २९- कारि पुरुष ।

सुख लए सब केओ प्रीति कर, जगभरि के नहि जान ।

मरि जीवा सुखते^१ हुनहि, सकरहु मरण निदान ॥३४॥

(ततः प्रव्रजति श्रीकृष्णः । श्रीकृष्णो राधिका-चरणतले उद्विषति ।

तदाऽद्धांस्त्रियता प्रिया कुञ्चितवामहस्तभ्यापारेण निवारिता ।)

विशालाक्षी—(निकटं गत्वा लीचगन्धकारेण विज्ञापयति) राधिके ! चरणतले श्रीकृष्णरितं पठति ।

राधिका—(सख्यभुपविष्य वस्त्रसम्पार्जनं कृत्वा वामहस्तेन पटोत्सारणं कृतवती ।)

विशालाक्षी १३--(दोहा)--

लज्जे^२ मकुच मुख चोर जकां, बिरह बिआकुल वेह ।

आश तेजत तोर प्राण पहु, एति निल मिलन सन्देह ॥३५॥

राधा—(दोहा १४)--

एहि सब कहने सयक नहि, हृदय जरल अछि मोर ।

पुरुषक परिचय देल मोहि, प्रेम कहल हम तोर ॥३६॥

१३-पेअसि बिरह जे प्राण तेजि, से अछि जग केओ आन ।

कपटी क^३ कहइत सुकर, करइत कठिन निशान ॥३७॥

तत्प ॥३१॥ जनि—नहि ॥३३॥ जीवा सुखते—सुख सँ जीवाक छनि।

मरण निदान—हमर मृत्यु कारण धिक ॥३४॥

(सकर बाद श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । ओ राधाक पए लग बैसैत छथि तखन कनेक उठलि प्रियाके मोड़ल वाम हाथक इशारा सँ अठन सँ मना कय छनि ।)

विशालाक्षी—(लग जाय दृष्टिये^४ कृष्णक सकार करैत कहैत छथि) राधिके ! पए लग श्रीकृष्ण छथि ।

राधिका—अठन बैसि कपड़ा सरियाय वामहाथे^५ धीध ससारलनि ।)

विशालाक्षी—सकुच—संकुचित होइछ । तेजत तोर प्राण पहु—तोहर पति प्राण स्वायधुशु ॥३५॥

राधा—सयक—साध्य, काज । पुरुषक—कृष्ण अपन ॥३६॥

१३—० । १४—उक्त दोहा । १५—पेअसि ।

ई सभ जानि अचहु तहु, हमहु म^६ हुनकर नारि ।

१०-जकरा कनहते^७ साठ^८म नहि, से कर काज विचार ॥३८॥

श्रीकृष्ण—(बड़ाज्जलि १६) प्रिये ! प्रसीद । १०-सम्यक्तमयमेकोऽपराधः ।

राधिका-- (संक्रोधं गीतेन)--२३

आब की पेअसि^९ कहै छथि, सजनि मे !

कोने लाजे मुह बजबे^{१०} छथि ॥

कथिलए एतय अबै छथि, सजनि मे !

देखल नहि सोहबे^{११} छथि ॥

११-साखी सभके रखै छथि, सजनि मे ।

हमै नहि काहु बजबै छथि ॥

१२-पुरुष-प्रीति रिति मन पर सजनि मे !

१३-दरबरि जाधु अपन घर ॥

अपनहि अपन काटि^{१४} घर सजनि मे !

से जन^{१५} किए कठना कर ॥

मन्वीपति सुनु मोर^{१६} पहि, सजनि मे !

१७-तोहरहु एतय कारज नहि^{१८} ॥

पेअसि बिरह—प्रेमिकाक विरहमे । सुकर—सुलभ, आसान ।

निदान—उपाय ॥३४॥

तहु—हुनकां एहन जानि । साठ—साध, प्रतीकार ॥३५॥

श्रीकृष्ण—(कर जोड़ि) प्रिये ! प्रसन्न होइ । एकटा एहि अपराधके^{१०} क्षमा कइ ।

राधिका— [क्रोधपूर्वक गीतसँ]—२३

पेअसि—प्रेयसी, प्रेमिका । सोहबै छथि—भीक लगैत छथि । साखी

—साखी, गवाही । दरबरि—धीध । पहि—पाएके लग ॥

१६—० । १७—(एहि सँ पूर्व गीत सँ-२२क अन्तिम दू पाँती धरि 'क' पोथी मे पहि अछि ।) १८-कनहते साठि । १९-बड़ाज्जलि—क ख २०-सम्यक्तमयमेकोऽपराधः । २१-विप्रति-क ख । २२-मुह देखै । २३-तोहर २४—० । (दू पाँतीक अन्तमे) क ख । २५-पुरुषक प्रीति रिति । २६-फेरि बह । २७-साठ । २८-से की आव । २९-भीर पाही । ३०-तोहर । ३१-एतय कारज नहि ।

(इति निष्कान्तः सख्या समम् ।)

श्रीकृष्णः - प्रिये वर्तते ^{१२}चाट्यापि सा रीतिः ?

[ततो गीतेन]--२४

हरि हरि । मलिन ^{२३}विलासिनि, जगभरि ^{२४}कैओ जनु देख ।^{२५}देवसि विरहे विष भोजन, एहि ^{२६}तिल भरि ते विशेष ॥बैसलि रह, उठि अनुसर समुख ^{२७}होइत मुख केरि ।एहि ^{२८}तह कोन पराभव, पलकि पाछु नहि हेरि ॥

भल मन्द एतओ ते साजए, उकुतिहि विरह बुझाय ।

मोर देल जत जत ^{२९}अभरन, परिहरि मोरहि देखाव ॥

जे मोर करए सौभ पन, तकरहु सौ नहि बाज ।

ता सओ ^{३०}होएत समागम, ई अछि ^{३१}कठिन बड़ आज ॥

नन्दीपति बहु तखनुक, शिव शिव ॥ हमर तिहोर ।

वेअसि पेअसि कहइत, जाइछ आव जिव मोर ॥

(ततः प्रविशति ^{३२}सख्या समं राधा)

(सखीक संग बहार भय गेलि ।)

श्रीकृष्ण - प्रिये की एखनहुँ सएह रीति अछि ?

[गोत सौ]--२४

मलिन विलासिनि - अपन कामिनीकेँ दुखी । तिल भरि - थोड़वो

कालक हेतु । विशेष - कोनो नव बात, परिवर्तन । बैसलि रह -

'बैसू' ई कहला पर उठि बिदा भय जाइछ । समुख = सोझा । केरि -

बुझाय लेत छथि । एहि ^{२८}तह - एहि सौ अधिक । पराभव - दुःख ।

भल मन्द - नीक-बेजाय । उकुतिहि - रतिये सौ । अभरन - गहन ।

परिहरि - त्यागि । मोरहि - हमरहि ॥

(तखन सखीक संग राधा प्रवेश करैत छथि ।)

३२ - ए सोसा इति । ३३ - मिलन । ३४ - जग कैओ जर जनु - क । ३५ -

विपसि विरह । ३६ - एहि तिल परि - क । ३७ - समुखि । ३८ - कह - क । ३९ -

रत पत - क ख । ४० - सौ । ४१ - अछ - क ; अछि कठिन पुन - ख । ४२ - पति-

अति श्रीकृष्णः । ('सख्या समं राधा' ई कोनहु मे नहि अछि ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! अतः पर को विचारः ?

विशालाक्षी - देह ! देओ ^{४३}पुच्छइ । [देवि ! देवः पुच्छति ।]राधा - (सकोषं ^{४४}द्विपदेन)-गोतल होअ जको ^{४५}सहसकर, सशि ^{४६}शीतलता सेज ।तैअओ ते हुनि हम आव सखि ! एक संग एक ^{४७}सेज ॥३९॥

श्रीकृष्णः - विशालाक्षि ! भवतु, भवतु । बलव-सुता नियमस्य निर्वाहं करोतु ।

(इति निष्कान्तः)

(दोहा) -

^{४८}तखनि विचारिए ^{४९}हरि बुझा, राधा कएल बड़ मान ।

सत्वर एही सौ निकसि पड़िअ, अपनहि नाइति निदान ॥४०॥

उपटल ^{५०}एक फुलवाडिका, कानु अछल ^{५१}ओहि गाम ।भेटवय से हरि ततए गए ^{५२}सूति रहल ओहिठाम ॥४१॥

४२

४३

४४

(तयो ^{५३}वामकरेण वचनाच्छादनमुत्थाप्य ^{५४}अर्धोर्ध्वसञ्चरित-दक्षिणकराग्रेण नखीभनाह्वानं ^{५५}कृतमेव ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! एकर बाद की विचार अछि ?

विशालाक्षी - देवि ! श्रीकृष्ण पुछैत छथि ।

राधा - (कोषपूर्वक दोहा सौ) - सहसकर - सूर्य । सशि - चन्द्रमा । शीतलता

ठंडइ । तेज - छोड़ि देव । हुनि - हुनक श्रीकृष्णक । सेज - ओछाबोन

पर ॥३६॥

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! बेस बेस । गोपपुत्री अपन नियमक निर्वाह करतु ।

(बहार भय गेलाह ।)

हरि - कृष्ण । सत्वर - शीघ्र । निकसि - निकलि । निदान -

उपाम ॥४०॥

उपटल - सजडल । गए - जाम ॥४१॥

४२ एतओ क । ४४ द्विपदेन दोहा । ४५ ० । ४६ सशि हो पायक ।

४७-सेज । ४८-०० (दू पातीक अमाय)-क । ४९-० । ५०-उपटल-क ।

५१-खल । ५२-गेल । ५३-सज । ५४-वचनाच्छादनमुत्थाप्य । ५५-सखीक-

विशालाक्षी—देव ! कि भवति ? [देवि ! कि भवति ?]

राधिका—(दोहा)—

सुबहुक आसन सून देखि, अति आकुल मन मोर ।
कतय गेल छथि की करय, नयन दरे अलि नोर ॥४०॥
भल भल सजनि ! चिन्हल तोहि, तोहरे ई परिपञ्च ।
“जे जन अहिन अधोन रह, से की पनि के वञ्च ॥४१॥

विशालाक्षी—(दोहा)—

बड़ कठिन हमे “पड़ल छिअ, एकहु न औचक बाट ।
“तखने तोहि पाहन” भेलिह, आव भेलिह तोहि पाट ॥४२॥
“जाह जाह” जखी ई कहिअ, लगलहु जनि तोहि भूत ।
टूटल वचन कि “पुरुष सह, केहनो होए कपूत ॥४३॥
(इति सर्वे निष्कान्ताः अन्वेषणाय श्रीकृष्णस्य ।)

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी—(दोहा)—

कतए कतए नहि ओहल “छिअ, कतहु न मिललाह मोहि ।
पुरुष मन बड़ कठिन सखि ! किदहु करब हुनि “कोहि ॥४४॥

(श्री राधा वामा हाथें घोष उठाव आधा ऊपर उठल दहिना हाथक अग्र-
भाग सँ सखी सभकेँ सोर कपलविन ।)

(तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)

विशालाक्षी—देवि ! की कहैत छी ?

राधिका—सुबहुक—सुन्दर स्वामीक ॥४५॥

भल—नीक जकाँ । परिपञ्च—खालि धिकहु । वञ्च—ठकस ॥४६॥

विशालाक्षी—पाहन—पाथर । पाट—रेशम ॥४७॥

कहिअ—कहुवामे ॥४८॥

(सभकेओ कृष्णक खोज में बहार भय गेल ।)

(तखन विशालाक्षी प्रवेश करै छथि ।)

नाकृता । १६ - ये जन एहन । १७ - ० । १८ - सखनि । १९ - पाहुन
भेलिह । २० - जाह जाह जो करि कहय । २१ - की । २२ - कतय कतय
नहि मोहल । २३ - हुन ।

राधिका—(उहो गेन निद्रायां सुखोत्थिता गौत्रेन—२४)

“के जन कथीने दोखे तेजलन्हि हमरा” ॥

पर रे रमनि रस सुबुधल भवरा” ॥

निज कर परस” परस निज देहा ।

“निन्दक भरम भेल, पिआक सन्देहा ।

तेहि अवसर हम उठलिहु” “जानी ।

हरि हरि ॥ भेलहु परम दुखभागी” ॥

हेरि हेरि पीन पयोधर भारे ।

कत दिन तेजव नयन जलवारि ॥

उपगत उपगत वलिन”-समीरे ।

किदहु करत” पुनु परमि घरीरे ॥

मन छल सुषुप्त होएत सुखदाता ।

नव परिचय, नव विरह विधाता ॥

अकर रमनि हम, कहिअह” ताही ।

देखलि तोहरि धनि धिकल वताही ॥

नन्दीपति ह” धिकजोन सन्देहा ।

“जेहन विरह हो तेहन सिनेहा ॥

विशालाक्षी—जाहल—लाकल । पुरुष गान—पुरुषक मान करब, खसब ॥ ६॥

राधिका—(विकलता सँ नीन्द में सुति केँ उठलि गीत सँ)—२५

पर रे रमनि—दोसरक स्वीक विद्यास मे आसक्त भोरा । निजकर

परस—आन हाथक स्पर्श सँ अपन देखक स्पर्श भेल । निन्दक भरम

—नीनक सन्देह । पिआक—ताहि मे प्रियतमक । पीन-पयोधर—

पुष्ट स्तन । उपगत—आगत । वलिन-समीरे—बलिनाही वनात । पर-

सि—छुवि । विरह-विधाता—विमोग देनिहार । ह धिकजोन—

ई धिकसि ।

२४—सा गौत्रेन कथयति-कख । २५—की जनि । २६—भोरा कख । २७—महारा ।

२८—परसि... (पत्नी क्षणिक) । २९—निनक । ३०—जावि—कख । ३१—मावि

—कख । ३२—वलिन—कख । ३३—होएत पुर । ३४—कहिहू नख ।

३५—कह तखनूक मेहा । ३६—मेहन ।

(दोहा) —

अति उत्कण्ठा मित्रन लाइ, बाहुल^{३३} मदन विकार ।
 सखी पठाओल राधिका, बेकत भेल संव भार^{३४} ॥४७॥
 पड़ल हमर अपराध बड़^{३५} तारि नीच-मति भोरि^{३६} ।
 पुरुष महाशय सकल सह, विमति करबि कल जोड़ि ॥४८॥
 “एज बल हुनि सखी” भेट नहि, ताबत रखिअह गोए ।
 से कविअह^{३७} सत्वर सखी, जिबइते^{३८} वरसन होए ॥४९॥

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी (श्रीकृष्णस्य निकटं गत्वा गीतेन) — २९

माधव ! भल ने कहत केओ तोही^{३९} ।
 ते^{४०} भोरि^{४१} पिअसि^{४२} ठाओलि मोही ॥
 मोहें^{४३} महि तेहन जकर होए हँसी^{४४} ।
 “सुपुरुष पुरुष न^{४५} बिसर पेअसी ॥
 राधा-करुणा सुनि ओहिठाम ।
 पलओ ने^{४६} पथिक करए विश्राम ॥
 नीर नयन, मुख “हरि हरि हरी ।
 “आँवरि आरसि जनि भेटलि पुतरी ॥

(दोहा) — मदन विकार — का^{४७}वासना । बेकत — व्यक्त ॥४७॥

भोरि — अजानी । महाशय — उदार ॥४८॥

गोए — गुप्त । सत्वर — शीघ्र ॥४९॥

(तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)

विशालाक्षी — (श्रीकृष्णक लग जाय गीतसँ) — २९

भल — नीक । पिअसि — प्रेयसी । राधा-करुणा — राधाक दुःख ।
 पलओ — पलौधरिक हेतु । आँवरि आरसि — अन्हुरापल अयना

३३ = लि । ३४ = जाय । ३५ = हमे + क । ३६ = भोरि । ३७ = परवत । ३८ =
 हह । ३९ = तोहि — क । ४० = ते तोहि ओतए पिअसि पठाओलि मोहि । ४१ =
 हसि क, हसी — छ । ४२ = पुरुष पुरुष — क । ४३ = पए । ४४ = पल ले पथिक
 ४५ = हरिहरी । ४६ = आव आरसि ।

सामहुँ^{४७} आधे नहि रुसति राधे ।
 सुपुरुष छेमिए^{४८} घनि अपराधे ॥
 तस्दोपति कवि कह प^{४९} माने ।
 पाछिल सन^{५०} मोहि केओ जनु^{५१} जाने ॥

(ततः श्लोकः)

श्रीकृष्णः^{५२} — न सा राधा, न सा पीतिः, सोऽहं सम्प्रति मो^{५३} हरिः ।

पुनश्चेदं विशालाक्षि ! अयि ! मा वद, मा वद ॥५१॥

विशालाक्षी - (दोहा)

नहि कहने परकार नहि, येनहि पए^{५४} पुनु आज ।नारि मारि कए^{५५} कओन फल, कहइहु^{५६} ककरा लाज ॥५२॥

श्रीकृष्णः — (सक्रोधं) विशालाक्षि ! मा जानासि, तथापि दुराग्रहं न त्यजसि ।
 (विशालाक्षी निष्क्रान्ता)

राधिका — विशालाक्षि ! सहि ! “मदो कषणो ? [विशालाक्षि सखि ! गतः
 कृष्णः ?] (इति मूर्च्छति । ततः संसंश^{५७} गीतेन) —

मे । पाछिल — पहिलुका सन, जेहन पहिने कठोर छलहुँ ॥

(तखन श्लोकः)

श्रीकृष्ण — एखन ने ओ राधा छथि, ने ओ प्रेम अछि आ ने हमही^{५८} ओ श्रीकृष्ण
 छी । हे विशालाक्षी ! आव केर जनु बाजू, जनु बाजू ॥५३॥

विशालाक्षी — परकार — तरीका, उपाय । कहइहु — कोन ॥५४॥

श्रीकृष्ण — (क्रोध सहित) विशालाक्षी ! हमरा जनेत छह, तेओ दुराग्रह नहि
 छोड़ैत छह ।

(विशालाक्षी बहार भय गेलि ।)

राधिका — विशालाक्षी ! सखि ! भल ऐलहु कृष्ण ? (मूर्च्छित होइत छथि ।)

५१ पै छेमिए अपराधे । ५२ तर । ५३ जनि ।

५४ = न । ५५ = ओतए । ५६ = कय कोन - कख । ५७ = कीबहु । ५८ =

(एतय सँ ‘मूर्च्छति’ तक अनाव) । ५९ = ततो राधा ।

परदेश गेल यह परिहरि ।

काहि कहव दुख हरि हरि ॥

मुहुसु आनि हमे भजलिहु ।

कोपहु कहु नहि बजलिहु ॥

सुमरि समानस तहिकर ।

अहनिनि मोर नयन हर ॥

निअरहु धम मोर नागर ।

आंतर अछि जनि सागर ॥

आने करै भेल आने ।

सुभल ने दुखक माने ॥

केओ जगु बोल मध माधव ।

भवितब छल यह साधव ।

सबतह दुख मनोभव ।

सबतह दुख मनोभव ॥

(इति सूच्छति ।)

कनेक कालक बाद होयने आवि गीतक द्वारा) — गीतसं० २७
परिहरि — छोड़ि हरि हरि — हाय हाय ॥ भजलिहु — वरण कयला
कोपहु — कोपहु सी। कहु — अप्रिय कथा । सुमरि — स्मरण कय ।
अहनिनि — विनराति । निअरहु — निकटहु । नागर — कुशल नायक ।
आति — अन्तर, दूरी । सागर — समुद्रक । आने — करय लगलहु
कोनो काज आ भेल कोनो दोसरे । माने — अभिमान । मध माधव
— कृष्ण अवलाह छथि । भवितब — भावी । साधव — मनाएव ।
सबतह — सबस अधिक । मनोभव — काम ॥

(सूच्छित होइत छथि)

- २ - विरह उठत मोहि घरी घरी (वीतर चरक कपमे) । ३ - हम भजलिहु ।
४ - कोहुक दुख - क । ५ - भजलिहु - क ख । ६ - तेहिकर ।
७ - करै हमे भेल । ८ - सुभल कठिन ने - क ख ।

विशालाक्षी — समाससिद्धि । [समाससिद्धि ।]

राधिका — (संज्ञा) — (दीहा) —

सुपहुक १० कहने कएल नहि, बड़ कए बड़ाशोल सोक ११ ।

से आवे अपनहि चलल छिअ, कि कहत नामक लोक ॥ १२ ॥

(इति निष्कास्त ।)

(दीहा) —

राधा अवइत देखिकहु, कएल मलिन मुख-कांति ।

सूति रहल हरि काछिकहु, दुहु दिष दोपटा जाति ॥ १२ ॥

राधा — (श्रीकृष्णनिःसंगत्वा वदनाच्छादनं विमुच्य १२ सगद्गदाक्षरं

गीतेन कथयति ।) [गीतसं०-२८]

माधव ! मोर निहोरी ११ ।

कोपहु बाजह १४ मोहि हेरि एक बेरी ॥

ने कर सुजन मुख बाधे ।

अ अनुगत कर सत अपराधे ॥

१२जी ओहन पवन १५उपाड़ी ।

सुरभि सुरभि नहि बह ताहि १७ छाडी १८ ॥

विशालाक्षी — धैर्य शूर ।

राधिका — (होश मे अवि) सुपहुक — पिपेतमक । सोक — दुःख वा सोल, मनो-
भव ॥ १२ ॥

(बाहर भय नैलि ।)

(दीहा) — राधा — राधाके । मुखकांति — श्रीकृष्ण मुंहक कांति दुखी बनाय
छल । हरि — कृष्ण ॥ १२ ॥

राधा — (श्रीकृष्णक लय आय हुनक मुंह पर सँ वस्त्र हटाय बिह्वल स्वर मे
गीतक द्वारा कहैत छथि ।) — गीतसं० — २८

निहोरी — पार्वती । कोपहु — समयाहयो कय । हेरि — देखि । सुजन —

- ८ — १० । १० सुपहु कहने । ११ — सोक । १२ — विमुच्य । १३ — विरह हेरी -
क । १४ — बाजह एक बेरी । १५ — जो ओहन । १६ — उपाड़ी - क । उपकारी
- ख । १७ — पवन । १८ — छाडी - क ।

१६वेचलहु मानिक मोती ।

१७भए गर परित अधिक देह जोती ॥

नन्दीपति कधि माने ।

सुपुरुष निठुर नरर रहए निदाने ॥

(अपि च । गीतसं०-२६)

मंर मुइल सुख^{१६} देखिअ ।

२३जओ^{१७} मोहि आवे^{२४} उपेखिअ ॥

२४हमरहि के^{२५} लात मारिअ ।

२५जओ^{२६} किछु^{२७} आन बिचारिअ ॥

२६आवे^{२८} जओ^{२९} सखलि रहीअ ।

पहु^{३०} हमरहि लए करीअ ॥

२७हमरहि बिधुर नहाइ ।

२८जओ^{३१} मोर देल नहि खाइ ॥

नन्दीपति एह सुनइत ।

जाग उठल पहु^{३२} हसइत ॥

नीकलोक। सुख-बाधो-सुख मे बाधा। अनुगत-शरणागतव्यक्ति। सत-संकडो। पवन-वायु। उपाड़ी-गाछके उपाड़निहार, उपद्रावी। सुरभि-वसन्तमे। सुरभि-सुगन्धि के। वेधलहु-छेदो कयला पर। मानिक-मणि। गर परित-गरा मे पवि। सुपुरुष-उत्तम नर। निदाने-निर्णीत अछि ॥

(आओरो । गीत सं०-२६)

मोर-हमर। उपेखिअ-उपेक्षा करी। पहु-पति। हमरहि बिधुर-हमर मुइल पर पत्नीहीन भय।

१६-वेचलहु। २०-तओ तकर अधिक हो। २१-निठुरइ रहै। २२-मुह क। २३-जो। २४-आन। २५-हमरहि सोणित नहाइअ। २६-जो। २७-एहि क। २८- $\times \times$ (दू पांतीक अभाव)। २९- \circ (स्वान रिक्त)। ३०-हमर बेल।

श्रीकृष्णः—(लोचने उभेत्थ राधिका - सुखमवलोक्य) —

(दोहा^{३३}) —

“विअसि^{३४}-विअह जे प्राण तेज से जन अछि केओ आन^{३५} ।

कपटी का कहइते^{३६} सुहर, करइते कठित निदान” ॥३३॥

(अंक—३, दोहा—३७)

“जत जत तोहे धनि ! कहल छल, ^{३७}तत तत भेल परमान ।

जओ^{३८} हमे निवितहि आवे छिअ, किछु^{३९} नहि तसु समधान ॥३४॥

हमरा ओ पितिओत विधि, अहँका सहोदर भाय ।

“तोहे तु ओहाँका पक्ष सबे, हमरा केओ न सहाय ॥३५॥

३५तारा का नहि वास को, राहु गरासल ^{४०}बान्द ।

तकरहि मारिअ जानि यम, जकरहि लाइ सबे कान्द^{४१} ॥३६॥

जकबा अछि संसार सुख, तकरा जीवक काज ।

हमरे जिवने कोन फल मरण उचित धिक आज, ॥३७॥

श्रीकृष्ण - (आंखि खोलि राधाक मुँह देखि) विअसि बिरह-प्रेमिकाक

बिरहमे। कपटीका-श्लेषवाज के। निदान-उपाय ॥३३॥

परमान-प्रमाणित। तसु-ओहि बात सभक। समधान-समाधान,

उत्तर ॥३४॥ विनिओत विधि-विधाता वा भाग्य प्रतिकूल अछि।

सहोदर-अनुकूल। तोहे तु-अही सन अही छी ॥३५॥ तारा-

तरेगन। वास-घर (राहुक प्रसित करवाक भय)। राहु गरासल

-ग्रहणकाल मे राहु प्रसित कयल। यम-यमराज। कान्द-कनैत

अछि ॥३६॥ संसार-सुख-संसारक सुख ॥३७॥

एके करे-राधा अपन एक हृदय सँ। घोषट-घोषके। हरि-

३५-द्विपदेन-क। (एतय ‘स’ दोओ से दोहा संख्या २४ दोहरायल अछि।) ३२-

विअ भिमि। ३३-ने। ३४-रहइते। ३५-यत यत। ३६- \circ क ख।

३७-विअ नहि एहि मे मान-क। ३८-तोहे ओ-क। ३९-तारा का नहि

वास कि। ४०- \circ कां।

४२-एके करे घोट ससारिकहु, दोसरे करे लए पान ।

अति हठे हरिमुख पान वए, कए सुख, कए निदान ॥५८॥

हरि भदि पाँज उठाएकहु, हरिके सुबदनि लेल ।

विरह पराभव दुर गेल, नव कए समिलन भेल ॥५९॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वादश-नामाऽन्वित-महाकवि-नन्दीपति विरचित

श्रीकृष्णकेलिमालायां राधाकृष्णभानमोचनी

नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

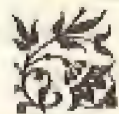
मुख - कृष्णक मुख मे । पान - ताम्बूल । कए निदान - शोक छुट-
वाक उपचार ॥५८॥

सुबदनि - सुमुखी राधा । विरह पराभव - वियोगदुःख । समिलन -
सम्मिलन, समागम ॥५९॥

(सभ केओ बहार भय गेल ।)

इति द्वादश-नामरी युक्त महाकवि नन्दीपति क बनाओल
श्रीकृष्णकेलिमाला मे 'राधाक द्वारा कृष्णक भान छोड़ाव'

नामक तेसर अङ्क समाप्त ॥



४२-एके रे घोट । ४३-तृतीयः स्कन्धः-क ख ।

अध चतुर्थोऽङ्कः

(कम्पवावतार-माधवी राधादि-विलासकुशलः सकल-गोपिकाभिः बह
कतिचने^१ दिवसान् विहारं कृत्वा मथुरा-गमनं संचिन्तयति ।)

(अथ दोहा) —

जयवासी सानन्द सकल, अहोनिशि हरिक समाज ।

सगँहु सह गोकुल अधिक, कोटि कोटि सुरराज ॥१॥

यमुना-तीर कदम्ब वन, बट निकुञ्ज सब ठाम ।

राधा माधव केलि कर, जनि रति^२-सङ्गे काम ॥२॥

माधव भेल छवि गोपसुत, कारण गोपी-रास ।

बैकुण्ठहु^३ दुमिल^४ बुझव ई दिहु एहन विलास ॥३॥

(अथ रास-गीतमाह) -- १

समूषणा समस्त गोपिकाङ्गना कलावती ।

अनेक नायिका, मुरारि एक नायिका-पती ॥

चारिम अङ्क

(कामदेवक अवतार स्वरूप सुन्दर श्रीकृष्ण राधा आदि गोपीसभक संग
विलास करवा मे पटु भय सभ गोपीक संग कतोक दिन विहार कय मथुरा
नगर जयवाक विचार करैत छथि ।)

अहोनिशि - दिनराति । हरिक समाज - कृष्णक लग । सगँहु सह - स्वगँहु
सँ । सुर राज - देवताक रूप मे शोभित ॥१॥ बट - बड़क नाछ । निकुञ्ज

- लतामूह । रति सङ्गे काम - कामदेव अपन पत्नी रतिक संग ॥२॥

छवि गोपसुत - गोआरक घेटाक रूप धारण कयने छथि । दिहु - निदयव ॥३॥

(आव रास-गीत कहैत छथि) -- १

गोपिकाङ्गना - सुन्दरी गोपी सभ । रती - केलि । कुमुदती - कुमुदिनी ।

१ - सकल । २ - कतिहिमन । ३ - रतिक । क ख । ४ - दुर्लभ ।

विचित्र कओन जओ वहुत^१ कृष्ण सँ करए रती^२ ।
 कि^३ एक चन्द्रिका, अनेक फुल्लता कुमुद्वती ॥
 प्रसून हार दए बिहार हाव^४ कए बिलासिनो ।
 बिकार कए विमोहयो कतेक हृदय—हासिनो ॥
 कतेक बेरि हाव जोड़ि जोड़ि वीरसी करए ।
 कतेक के^५ कदम कुदुई करथि पीड़िता तसए ॥
 समच्छ बच्छ राख^६ तीरि बधि रज्जु बाहुके^७ ।
 कतेक देरि चूमि चूमि बाधि^८ राधिकाहु के^९ ॥
 नचाए नग्न^{१०} कए कतेक हस्ततालिकादि दए ।
 बाजब भाव गोपिका कतेक नरकी भए^{११} ॥
 कलावती कतेक बीपरीत^{१२} लए बेआकुलि ।
 हृदय बुझाव, गए लगाव कृष्ण भाल टीकुलि^{१३} ॥
 (१४) मुरारि कए बधूक भेष, गोपिका पुरुष कए ।
 अवयक ई^{१५} नयाक एहि रङ्ग रङ्ग कैलि कए ॥
 नितान्त कामत विश्वरूप दण्ट भाव^{१६} भावई ।
 'सबुद्धि' कामिनी^{१७} हृदएक हाव राग नयावई ।

प्रसून हार । फूलक गजरा । हाव — कामजमित चेष्टा । हाव — मनीहर । कदम — अकारण, बेकसूर । समच्छ बच्छ — समक्ष में बछ्छा के । तीर — सीक । बधि रज्जु बाहु के — छोरीरूपी बाहि के बड़ाव । बाधि — छेकि वा बांनिह । नग्न — नाङ्गि । हस्ततालिकादि — थपड़ी । बीपरीत लय — विपरीत रतिक हेतु । गए — जाय । कृष्णभाल — कृष्णक कपार में । मुरारि — कृष्ण । बधूक — स्त्रीक । पुरुष कय — पुरुषक रूप धारण कय । नितान्त — अत्यन्त । कामत — प्रिया विश्वरूप — विराट्स्वरूप (श्रीकृष्ण) क । दण्ट भाव — अभिलषित भावनाक रूपमें । भावई — ध्यान करैत अछि । हाव — बिलास चेष्टा ॥

१—बहुत । २—रति-कख । ३—अनेकओ चन्द्रिका फुल्लता-कख ।
 ४—हार-कख । ५—कुदुई मयकव । ६—राखती विविध रज्जुबाहुक ।
 ७—बाधिह काहुके—कख । ८—नग्न । ९—चए । (१४) — भालटी-क;
 भालही-ख । १५—विपरीत । (१५) — मुरारी । १६—तवा करै ।
 १७—० । १८—हृदयक । १९—भावही ।

राधिका—सहे ! लज्जजेमि । विवधला कि भणामि । [सहे ! लज्जे ।
 विवधला कि भणामि ?]

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विपीदयोसि पुक्त^१ २० धर्या नासि, ततो लज्जसे २१ कथम् ?
 पीडित-सहस्रमंथक-^{२२} वरविलासवती त्वमेका केवल नैव ?

(ततः श्लोकः) —

कत्वा रामविलासं^{२३} कात्तारादागतो भवनम् ।

गोपीभिः सह देवो विव्वल-कामो दामोदरो विजः ॥१॥

(इति सर्वे निष्क्रान्ताः)

(अथ दोहा)

मानवाहु^१ अति पीत उर, हरि हलधर दुहु भाए^२ ।

धमुना तीर कदम्ब तर, प्रतिदिन सरम खेलाए^३ ॥१॥

कंस कहल ई सुनिकहु^४, केशी असुर वजाए ।

हरि हलधर दुहु मरा अछि, तकरा मारहु जाए ॥२॥

राधिका—प्रिय मित्र ! लज्जित छी । ते^५ विव्वला हम की बाजू ?

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विषाद करैत छी से उचित, बन्धी तँ नहि छी, तखन लजा-
 इत छी किमेक ? सोलह हजार नायिका मे श्रेष्ठ बिलासिनी अहाँ
 एकमात्र नहि छी की ?

(तखन श्लोक) —

गोपीसमक संग रास बिलास कय जानवान् विव्वल-कामना-बला
 श्रीकृष्ण वन सँ घर अयलाहु ॥१॥

(सभ बहार भय गेल ।)

(दोहा) —

मानवाहु^१ — मनुष्यो भयके^२ । अतिपीत उर — अत्यन्त पुष्ट छातीबला ।

हरि हलधर — कृष्ण श्री बलराम । सरम — धम, कुली, दण्डबैसक

॥४॥ की असुर — केशी नामक राक्षसके^३ । मरा — मर्त्युक्त ॥५॥

१९—लज्जशी चारि मो बिल्ली — कख । २०—धरमनासि । २१—सि । २२—
 बलविलास—कख । २३—काम्त्ताराजा । २४—मानवाहुँति पीत-कख । २५—
 भाइ २६—(पुत्रव सँ कोयल 'क' बोधीक पाठ थिक) ।

[तरङ्गासुर प्रवेशिका गीतम्]---२

केशी असुर देल परवेश ।

अति बलमन्त भयभक्त भेष ॥

हिंसि हिंसि खुरे खुरे मेदनि काट ।

मद जल बरिसि पिछरकर बाट ॥

कुदए कुरङ्ग जके दोस उड़ाए ।

जनि विचे डोलए चओर फहराए ॥

लमे पवन-जित चलबहु वान ।

कोपल देखि निरोधल कान ॥

नन्दीपति आवे नहि परकार ।

जखने होएत हरि कुदि असवार ॥

(सतः प्रविचति केशी)

(दोहा)

केशी इ कहल कृष्णके, आवे कतए तोहे जाह ।

कोपल हरि ! असवार हमे, तरङ्ग समुद्र अवाह ॥१४॥

(केशी दैत्यक प्रवेश करवाक गीत) - २

हिंसि-मारिके हिंसाकय । खरे-खुर सी । मेदनि-मेदिनी, पृथ्वी ।

मदजल-मदा हाथोक कमपट्टी सी बहैत पानि । बरिसि-बरसाय ।

पिछर-पिछर । कुरङ्ग-हरिण । दोस-दोष, धूलि । विचे-

आकाशक बीच मे । चओर-चामर, चमरी मृगक केश । पवनजित-

हवाके जितनिहार, हवो स तेज गतिबला वाण । कोपल-कुछ भेल

केशी के । निरोधल-रोकल, निवारण कयल । कान-कृष्ण । अस-

वार-चढ़ल ।

(तखन केशी प्रवेश करैत अछि ।)

कोपल-कुछ भेल हम । तरङ्ग समुद्र अवाह-आह-रहित समुद्रक
लहरि स्वरूप हम तरङ्गासुर केशी ॥१५॥

(तरङ्ग-भाषित-साकल्य प्रतिवदति १० हलधरो गीतेन)--३

रे रे अबल । प्रबल^{१०} मने बुभक्षि । निज अभिमान पहारे ।

बड़हि पुरुष सज्जो रोस बड़ावसि, अधम इहो बेवहारे ।

मुख पुरुष सेहे जकरधि कामी, तजि तोष एहन विचारे ।

लघु कए लेखि देखि दुहु बालक, जासि कए परहारे ॥

काल-पुरुष सज्जो केअओ न पारए, कुकुर बाघ सज्जो हारे ।

मृगपति छोट जइअओ रह तहुखने, करिवर कुम्भ बिधारे ॥

जेहने तरङ्ग ! तोहे छह तेहने, असोदासुत असवारे ।

आज भला घर बैन देलहु अछि, सभे बल होएत बहारे ॥

नन्दीपति कह ई दिन अनिहह, एहि नहि आव बिलम्बे ।

पान गमाए परमपद पओलहु, हरि न कतए अवलम्बे ॥

(दोहा)-

केमी मारल कृष्ण के, कुदि कुदि लाख लछाड़ ।

सुअरक कोइने सुनल अछि, उपड़ल कतहु पहाड़ ? ॥१॥

(श्रीकृष्णः सकोधं लाङ्गूलं गृहीत्वा वारधयं गगने प्रदक्षिणं

करवा तरङ्गासुरं भूमौ सन्ताडयति । केशी^{११}...) ।

[अपूर्ण]

(तरङ्गासुरक सकल उत्तिक जबाब बलराम दैन छथि गीतक
द्वारा) - ३

अबल-कमजोर । प्रबल मने-अपना मने जोरगर । निज-अपन ।

अभिमान पहाड़-अहंकार पहाड़ सतक । रोस-दोष । मुख-मुख । लघु-

-छोट । लेखि-लेखा कय । दुहु बालक-बलराम ओ कृष्ण ! जासि-जकरा

पर । परहारे-प्रहार । पारए-ऊपर अछि । मृगपति-सिंह । करिवर कुम्भ-

-हाथीक मस्तक के । असोदासुत-कृष्ण । असवारे-चढ़ाइ कयने छथुन । घर

बैन-घर अवि निमन्त्रण । परमपद-सद्गति ।

(दोहा)--लाख लछाड़-अनेको बेरि मोछड़लक । सुअरक-सुकरक ॥१॥

(श्रीकृष्णक कोधपूर्वक नाकरि पकड़ि तीन बेर आकाशमे धुमाय तर-
ङ्गासुरके भूमि पर पटकैत छथि । केशी)

[अपूर्ण]

१०-० (अनाथ)-क । ११-प्रबल बुभक्षि-क । १२-एतय स आमुक
अनुपलब्ध अछि ।

परिशिष्ट

नन्दीपतिक स्फुट गीत

नन्दीपतिक स्फुट-गीतिक विविध पाठभेद सहित संकलन डॉ० राम-देव झा 'नन्दीपति गीतिमाला' नामे मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियास-राय, दरभङ्गा सँ १९६२ ई० मे सम्पादित कय प्रकाशित करओने छथि । एहि मे विभिन्न 'गीतसंग्रह' ओ गानिसभक कापीसँ गीत संगृहीत अछि । प्रस्तुत संग्रह मे उक्त गीतिमालाक सकल गीत उचित-पाठ-ग्रहणपूर्वक पाठसंशोधन कय लेल गेल अछि । एक गीत (गीतसं०—७) ७-११-१९८२क मिथिलामिहिर मे प्रकाशित डॉ० वेदनाथ झाक निबन्ध 'गीतकार बादरि' सँ लेल गेल अछि । सकल गीतक स्पष्ट ओ शुद्ध रूप प्रस्तुत करवाक प्रयास कयल गेल अछि ।

प्रस्तुत संग्रहक संख्या नन्दीपतिगीतिमालाक सं०

१ सँ ६

७

८ सँ ११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

×

१ सँ ६

×

८ सँ ११

७

१२

परिशिष्ट मे०

" -१

१३

१४

१५

१६

परिशिष्ट मे०

" -२

१७ सँ २१

—७-११-८२ 'मिहिर' ।

—कृष्णकेलिमाला ।

नन्दीपतिक स्फुट गीत

गौरी पूजा

गीत संख्या-१

गिरिजा पूजय चलु चलु बाला ।
 देष्टु अभय वर मदन गोपाला ॥
 गोमतीक तट ससु फुलवारी ।
 से फुल तोड़ि राजकुमारी ॥
 बाढिहिं चनान, करपूर तमोर ।
 गौरिहिं दय रुक्मिणि कर जोर ॥
 पूजिअ गिरिजे ! शुभ यश लेहु ।
 जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु ॥
 नन्दीपति भन सुनह सेआनि ।
 देष्टु अभय वर - सारङ्गपानि ॥

पद्मेश्वानी गीत सं-२

माला गांधू हे गौरी ।

शिवशङ्कर के पहिरायब, माला गांधू हे गौरी ॥
 नहि घर हम सुत चरखा काटल, नहि बाँटल हम डोरी ।
 पैच उधार कहाँ सँ लायब, नहि घर दाम न कीड़ी ॥
 एकसय आठ रुद्र केर माला, सौसे सपंक डोरी ।
 निर्गुण बान्ह भेठ दस बान्हल, नागफणा केर भूड़ी ॥
 माला गांधि कयल तैयारी, लय चलु शिवक दुआरी ।
 पारवती-पति धिकथि दिगम्बर, देखि माल मुसकाई ॥

उचिती

गीत सं-१-३

बड़ ऊँच हेमत पहाड़ रे । निकसल निरमल धार रे ॥
 तनिकहु गङ्गा नाम रे । जनिक न पाव उषाम रे ॥
 पुरुषक एहने वानि रे । सेवल से हम जानि रे ॥
 से को होथि कठोर रे । तम नहि करथि उजोर रे ॥
 कह कोविद अवधारि रे । सुपुरुष करथि विचारि रे ॥

गीत सं-२-४

हम अवला अज्ञानि रे । शशि सेवल गुण जानि रे ॥
 आज हमर बड़ भाग रे । एहन परसमनि पाव रे ॥
 हम सौं अनेक कुरीति रे । सुपुरुष ने तेज पिरीति रे ॥
 डेडि बुड़ल मझधार रे । लय जहाज कह पार रे ॥
 सात खण्ड कुसिआर रे । निकसल प्रेम पिआर रे ॥
 कह बादरि अवधारि रे । गुनमस्त जग दुइ-चारि रे ॥

गीत सं-३-५

जओ कह सुजन सिनेह रे । अनुपम पाहुन - नेह रे ॥
 हेमहि मण्डप हेम रे । चानन बन कत नीम रे ॥
 काग कोइली एक भौति रे । भेम्ह भमर एक काँति रे ॥
 हेम हरदि कत बीच रे । गुनहि चिन्ही उच-नीच रे ॥

मनि कादय लपटाए रे । तौओ न तकर गुन जाए रे ॥
अलि कौ कुसुम अनेक रे । मालति के अलि एक रे ॥
कह बादरि अवधारि रे । सुपुरुष जन दुइ चारि रे ॥

गीतसं० - ९

प्रथम समागम भेल रे । हठहि रहनि बिति गेल रे ॥
नव तन नव अनुराग रे । विनु परिचय रस जाग रे ॥
आव ने जिउव विनु कन्त रे । विरहे जीवक अन्त रे ॥
नन्दीपति कवि भाने रे । सुपुरुष ने करय निदान रे ॥

तिरहुति

गीतसं० - ७

हरि हरि बिलपि विलासिनि रे, लोचन जलधारा ।
चिकुर तिमिर घन पसरल रे, जनि विजुलि अवारा ॥
उरज कुमुद, मुख हिमकरे, रे नहि कर परगासे ।
निअरहि मदन विधुनुद रे, जनि करत गरासे ॥
नील-वसने तन बेड़ल रे, उर मोतिम हारा ।
सजल जलदे कत साँपल रे, जगमग कर तारा ॥
उड़ि उड़ि खस कत योगिनि रे, विधि आजुति जाती ।
पलक पवन परिपूरल रे, जनि भादव राती ॥
दामिनि दमकि दमकि हनु रे, हुनि विरहिनि बामा ।
कह अनुभव कवि बादरि रे, धैरज घर रामा ॥

गीतसं० - ८

चललि शयन - घर सुन्दरि रे, आसन अरविन्दा ।
शिर सँ ससरल घोघट रे, जनि ऊगल चम्दा ॥

चलइत तूपुर कङ्कण रे, दुहु रव एक काले ।
दुर सँ हंस - सबद सुनि रे, सुनि बोल मराले ॥
नाभि - विवर सँ निकसल रे, रोमावलि - सापे ।
से सौतिन - वध - कारक रे, आँचर धर साँपे ॥
उड़हु न जान चकेवा रे, दुहु कुच उर छाजे ।
पवन - परस उड़ आँचर रे, जनि झपटल बाजे ॥
नव परिचय, नव कामिनि रे, भूषण अनुरागे ।
कह अनुभव कवि बादरि रे, सुनइत सुख लागे ॥

गीतसं० - ९

ना घर ना घर हे, कर मोर कन्हाई ।
हम पर - नागरि हे, तोहे यादव - राई ॥
छोक पड़ल घर हे, दधि चललहुँ बीकय ।
बाटहि झगड़ भेल हे, जओ पलटव नोकय ॥
गोरस विरस भेल हे, नहि लेल गहिनिज्या ।
सामु ननदि घर हे, मोरा कहत कहिनिज्या ॥
सखि अगुआइलि हे, वन माँझ नड़ाई ।
कि करब कानू हे, हम तोहर बड़ाई ॥
नन्दीपति कहु हे, मुनु कुमर कन्हाई ।
पार कइए दएह हे, तोरा नन्द - दोहाई ॥

गीतसं० - १०

साधव ! ई नहि उचित विचारे ।
जनिक एहन धनि, कामकला सनि, से किए कर व्यभिचारे ॥
प्राणहु ताहि अधिक छलि जे धनि, हृदइक हार समाने ।
कोपारि, आन कज्जोन विधि ताकिय, कि कहव तनिक गैआने ॥

पढ़ल पुरुष भए मुख भेलाह तोहें, सहजहि ई अरविन्दा ।
 से सिनुआरि कुसुम, तेजि सेविय, सहजहि भम्हर मलिन्दा ॥
 कृपन पुरुष काँ केअओ ने भल कह, ई अछि जग उपहासे ।
 निष्ठा धन अछइत से नहि भोगथि, केवल परहिक आसे ॥
 भनहि नन्दोपति मुनिअ रसिक-जन ! की फल अधिक जनाई ।
 माडि आनिअ वित, तें जें होय नित, अपन करिअ कथलाई ॥

गीतसं - ११

माधव ! एहन दिवस भेल मोरा ।

अपन करम फल हम उपभोगब, ताहि दोष कोन तोरा ॥
 जाहि नगर चानन नहि चीन्हथि, अडर आदर कए रोपे ।
 विनु गुन बुझलें जनिक अनादर, उचित न तापर कोपे ॥
 सगुन पुरुष निरगुन निन्दल जौ, जीवन जड़ केँ देला ।
 जौ करमी फुल सबहु सराहिए, तौँ कि कमल-गुन गेला ॥
 धल गुन आनठाम परगासल, तौँ की तनिक अभेला ।
 गिरि दरि ताहि तिमिर रहू, तापर रवि महिमा हिन भेला ? ॥
 जनिक सरस मन, ताहि कहिए गुन, पसु सिसु अबुझ न बूझे ।
 नन्दोपति भन, तें देखु दरपन, आन्हर काँ की सूझे ॥

गीतसं - १२

सुन्दरि चललि शयन घर ना ।
 हँसि हँसि सखि सब कर धर ना ॥
 जइतहि लागु परम डर ना ।
 ससि जसु काँपथि राहु डर ना ॥
 हार दुटिअ छिड़िआय गेल ना ।
 भूषण बसन लोटाय गेल ना ॥

रोय रोय कजरा दहाय गेल ना ।
 आदकहि सिन्दुर मेटाय गेल ना ॥
 नन्दोपति^१ कवि गाओल ना ।
 दुख सहि सहि सुख पाओल ना ॥

बटगबनी

गीतसं - १३

चन्द्रवदनि नवि कामिनि सजनी, यामिनि अति अन्हियारि ।
 सखि सङ्ग चललि केलिघर सजनी, करपल्लव दिप बारि ॥
 पवन झकोर जोर बह सजनी, तें लेल अञ्चल झाँपि ।
 देखि उरज अति उधत सजनी, दीन रासि उठ काँपि ॥
 शपथ कए कत काँपय सजनी, बिलखि धुनए निज माथ ।
 कथिलए जनम देल मोर सजनी, चतुरानन विनु हाथ ॥
 नन्दोपति कवि गाओल सजनी, ई जग थीक कुमान ।
 परस उरज अतिमुन्दर सजनी, माधव सिंह रस जान ॥

गीतसं - १४

एक हम नागरि बैसे सजनी गे, दोसर पिया परदेस ।
 मोर मन विकल बहोदिस सजनी गे, केओ नहि कहय उदेस ॥
 अहोनिष पहुपथ हेरि हेरि सजनी गे, सोदिस लागु अन्धार ।
 विरह वेदन तन परसल सजनी गे, नयन बहय जलधार ॥
 कोकिल मोर सोर मुनि सजनी गे, मन मन करिअ विचार ।
 पाओस सकल निराएल सजनी गे, सरद कएन उपचार ॥

१ - 'बुद्धिनाथ' वा 'बुद्धिलाळ' - पाठाभेद ।

चान-किरण सँ निकसल सजनी गे, माह मदन समधानि ।
नागर नेह तेजल किए सजनी गे, पाव पराभव पानि ॥
नन्दीपति भन सुनु जग सजनी गे, पड़ि भय करि अनुमान ।
एहि सौं भूप दोअर नहि सजनी गे, माधव सिंह समान ॥

गीतसं०—१५

रसमय समय बसन्त । कि करव लग नहि कन्त ॥
अति आकुल मन मोर । नयन डरकि पड़ि नोर ॥
निरदय दय सुख गेल । मन भरि मिलियो ने भेल ॥
एत दिन छल मोहि लाज । विरहें वेकत भेल आज ॥
परम करम मोर मन्द । विष भेल चानन चन्द ॥
एहि तह अधिक न सोग । पहिलहि वयस वियोग ॥
नन्दीपति कवि गाव । विष्णु सिंह बुल भाव ॥

गीतसं०—१६

भांगहि चाह चिकुर भर सजनी, सहजहिं दूबरि देह ।
प्रथमहि सुपहु - समागम सजनी, उपजल अधिक सन्देह ॥
दूरहि सुतल विमुख भए सजनी, विरल बसने मुख झाँपि ।
अभिनव केलिक नामहि सजनी, नहि नहि कए उठ काँपि ॥
सुपुर काड़ि नड़ाओल सजनी, हरल बसन अवशेष ।
भाव भरल नव नागर सजनी, उनमत भेल विशेष ॥
नयन नोर भरि बाजलि सजनी, भल शपथक निरबाह ।
पुरुष न जान नारिदुख सजनी, केवल निज सुख चाह ॥
आलस अलक बेआकुल सजनी, न रहलि निजवश नारि ।
अतिकौशल पुहु परसल सजनी, एहि अवसर अवधारि ॥

धैरज धए रह सुवदनि ! सजनी, इएह उचित एहि ठाम ।
नन्दीपति बिनु साहस सजनी, सुखद न होअ परिनाम ॥

गीतसं०—१७

की कहू, पहु परदेश गेल, सजनी गे, की कहू किछु ने सोहाय ।
फूजल केश, नीर बहु, सजनी गे, काजर गेल दहाय ॥
चूड़ी बसन भार भेल, सजनी गे, भेल यौवन अतिभार ॥
आइन मोरा लेखे बिजुवन, सजनी गे, घर भेल दिवस अन्हार ॥
हरि बिनु सेज सुन भेल, सजनी गे, गेडुआ मोहि न सोहाय ।
जौ नहि प्रीतम अओताह, सजनी गे, मरब जहर विष खाय ॥
नन्दीपति भन मन दय, सजनी गे, मन जनु करिय उदास ।
तकर कतेक अभिलाषय, सजनी गे, देखन्हि बहु विसवास ॥

ओपी-कृष्ण

गीतसं०—१८

चललि मधुरपुर साजि रे, दधि बेचन बाला ।
यमुना निकट तट जाय रे, रोकल नन्दलाला ॥
मुख आँखर पट भोट रे, दए बिहुँसलि बामा ।
पुलक पुरल तन नेह रे, देखि सुन्दर ब्यामा ॥
मुरली अधर विराजे रे, सुन्दर सुख रासी ।
मन मोर हरल गोपाल रे, गोकुल केर बासी ॥
करब कओन परकार रे, सोचए ब्रजवाला ।
पड़ल कुञ्ज वन साँझ रे, बैरी भेल काला ॥
जाय देबन्हि उपराग रे, यशोमति महारानी ।
तोर पुत हटलो न मान रे, लुट माल बिरानी ॥

नन्दीपति! भन नेह रे, सुनु गोप-कुमारी ।
तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे, नोखे गिरिधारी ॥

गीतसं०—१६

जसोमति पूत मूरारि ना ।
सखि हे ! लेलन्हि जमुना घटबारि ना ॥
चललि दही - दुध बोक ना ।
सखि हे ! संग दोसर नहि धोक ना ॥
कत कत कयल निहोर ना ।
सखि हे ! नहि बुझ परम कठोर ना ॥
आयल जमुना जल बाढ़ि ना ।
सखि हे ! भेलहुँ कदम तर ठाढ़ि ना ॥
बाट भेटिअ गेल कान्ह ना ।
सखि हे ! ओही वृन्दावन माझ ना ॥
नन्दीपति कवि भान ना ।
सखि हे ! नन्दतनय रस जान जा ॥

गणपति-पूजा

गीतसं०—२०

मत्त-भजवर-मधुर-गामिनि, सबहु सखि मिलि चललि कामिनि,
केलि कौतुक, देखि शुभ घड़ि, हरषि सुख भय रे ॥
साज कए कत सखी निकसलि, लाज कए पहु-पास बैसलि,
तखन अद्भुत देखल बाला, कुसुम माला रे ॥

रक्त - चानन जवा - जाला, हृदय - हारक फूल माला,
तिरा फुल मधुरीक डाला, बकुल फुल कत रे ॥
(कमल नव करवीर ओड़हुल, फूल बकहुल रे ॥)
अर्घ सुरसरि नोर डारल, आनि चौमुख दीप बारल,
धूप दय नैवेद्य साँठल, [गीत गाओल रे] ॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल,
जेहन मन छल तेहन भेटल, दुःख भेटल रे ॥

गीतसं०—२१

साजि सकल शृंगार माला, गौरि पूजय चललि बाला,
प्रिय सखी सभ सङ्ग लय कत, रङ्ग करयित रे ॥
साजि चानन फूल डाला, ताहि ऊपर सिन्दुर माला,
अगर गुग्गुल धूप दय कत दीप चौमुख रे ॥
दक्षिण चिर लय मण्डप झाड़ल, ताहि ऊपर कलस राखल,
बेड़ल वन्दनवार पांती, भौंति - भौंतिक रे ॥
कतहु वीणा वेणु गाजय, कतहु झालि मृदङ्ग बाजय,
कतहु किन्नर गीत गावय, भाव लावय रे ॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल, गौरि गणपति पूजि पाओल,
जेहन मन छल तेहन पाओल, दुःख भेटल रे ॥

